प्रस्तावना

ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा ने कल्प के संगमयुग पर आकर राजयोग के द्वारा प्रजातन्त्र की राज-व्यवस्था में राजतन्त्र की राज-व्यवस्था की स्थापना की और हमको सतयुग के राजतन्त्र के विषय में अनेक प्रकार से ज्ञान दिया है, उसके सम्बन्ध में अनेक राज़ बताये हैं और राजयोग सिखाकर राजाई करने के योग्य बनाया। जब परमात्मा के द्वारा बताये गये सब राज़ हमारी बुद्धि में स्पष्ट होंगे तब ही हम राजाई के योग्य बनेंगे और संगमयुग पर स्वराज्य अधिकारी बनकर कर्मेन्द्रियों के राजा बनकर बाबा के द्वारा दिये गये ज्ञान का यथार्थ सुख अनुभव कर सकेंगे और भविष्य राजाई के लिए यथार्थ पुरुषार्थ कर सकेंगे। हम सभी गॉडली स्टूडेण्ट्स हैं और हर एक अपनी-अपनी बुद्धि अनुसार बाबा के द्वारा दिये गये ज्ञान को समझता है और धारणा करता है और जैसी धारणा होती है, उस अनुसार ही वर्णन करता है।

विषय-सूची

प्रजातन्त्र से राजतन्त्र और परमात्मा 1
राजशाही की स्थापना, परमात्मा और गीता
राजतन्त्र, प्रजातन्त्र और परमात्मा
राजतन्त्र, प्रजातन्त्र और परमात्मा
सतयुग की राजाई और कलियुग का प्रजातन्त्र 1
राजतन्त्र (Kingdomship) प्रजातन्त्र (Democracy, Communism,etc.)
सतयुग-त्रेता की राजाई और उसका अधिकार
सतयुग की राजाई, उसकी स्थापना और प्रजापिता ब्रह्मा
विश्व में राजशाही की स्थापना और विश्व-कल्याण की भावना
विश्व में राजशाही और विश्व-कल्याण 1
राजतन्त्र और सतयुग-त्रेता अर्थात् सतयुग-त्रेता का राजतन्त्र
सतयुग-त्रेता के राजतन्त्र के विधि-विधान, नियम-सिद्धान्त
सतयुग-त्रेता की राजाई की विशेषतायें
सतयुग-त्रेता की राजाई और राजाई का ताज, तिलक और तख्त 1
सतयुग-त्रेता की राजाई और उत्तराधिकारी
सतयुग-त्रेता का राजतन्त्र और द्वापर-कलियुग का राजतन्त्र
द्वापर-कलियुग के राजतन्त्र के विधि-विधान, नियम-सिद्धान्त
सतयुग की राजाई और स्थापना का विधि-विधान 1
सतयुगी राजाई की स्थापना और एडवान्स पार्टी
दैवी राजतन्त्र और एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज तथा एडवान्स जन्म
सतयुगी राजाई और संगमयुगी राजाई एवं दोनों में सम्बन्ध
सतयुग की राजाई, सृष्टि-चक्र और संगमयुग 1
सतयुग की राजाई और स्वदर्शन-चक्र
सतयुग की राजाई और विनाश का सम्बन्ध
सतयुग की राजाई और भारत
सतयुग-त्रेता की चक्रवर्ती राजाई का विस्तार और संकुचन
भारत की चक्रवर्ती राजाई का उत्थान और पतन 1
सतयुग-त्रेता की राजाई का उत्थान और पतन
सतयुग-त्रेता के राजतन्त्र की स्थापना और विस्तार
दैवी राजाई की स्थापना, उत्थान और पतन
राजाई की स्थापना और पतन 1

दैवी राजाई और सभ्यता का विस्तार और पतन 1
सतयुग-त्रेता के राजतन्त्र में चक्रवर्ती राजा और अन्य समानान्तर राजाओं की भूमिका
सतयुग-त्रेता के राजतन्त्र में राजा और प्रजा का परस्पर सम्बन्ध
सतयुग-त्रेता का राजतन्त्र, प्रकृति और भौगोलिक परिवर्तन 1
सतयुग-त्रेता की राजाई और द्वापर-कलियुग की राजाई का आधार
सतयुग की राजाई और ईश्वरीय सेवा
सतयुग-त्रेता की राजाई और द्वापर-कलियुग की राजाई में अन्तर
सतयुग-त्रेता, द्वापर-कलियुग की राजाई में भक्ति और ज्ञान 1
सतयुग-त्रेता एवं द्वापर-कलियुग की राजाई और मुक्ति-जीवनमुक्ति
सतयुग-त्रेता की राजाई और धर्मसत्ता-राजसत्ता का सन्तुलन
सतयुग-त्रेता की राजाई और धर्मसत्ता-राजसत्ता का सम्बन्ध
दैवी राजाई, देवी-देवता धर्म और विभिन्न धर्म और राज्य सत्तायें 1
सतयुगी राजाई और राजयोग
सतयुग की राजाई और पुरुषार्थ
कल्पान्त का राजतन्त्र और कल्प के आदि का राजतन्त्र
सतयुग-त्रेता की राजाई, योगबल और भोगबल 1
राजतन्त्र और योगबल-भोगबल का सम्बन्ध
सतयुग की क्रमानुसार राज-गद्दियाँ और जन्म
सतयुग -त्रेता की राजाई और जन्म 1
सतयुग-त्रेता की राजाई और जन्म तथा दोनों में सम्बन्ध
सतयुग-त्रेता की समानान्तर राजाइयाँ और क्रमानुसार राज-गद्दियाँ
सतयुग की समानान्तर 8 राजाइयाँ और त्रेता की 12 समानान्तर राजाइयों में सम्बन्ध
सतयुग की राजाई और सिंहासनारूड़ होना - प्रथम राजाई में और बाद में
सतयुग की राजाई और कलियुग की राजाई का तुलनात्मक अध्ययन 1
बेहद की बादशाही और हद की बादशाही में अन्तर और समानतायें
विश्व की राजाई और लक्ष्मी-नारायण का चित्र
सतयुगी राजाई और ज्ञान-गुण-शक्तियों की धारणाय 1
सतयुगी राजाई और निश्चय
सतयुगी राजाई और विश्व की आध्यात्मिक-धार्मिक-राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्राफी
सतयुग-त्रेता की राजाई, समर्पणता और गृहस्थ-व्यवहार
सतयुगी राजाई और भाग्य 1
विश्व का राज्य अधिकार और स्वराज्य अधिकार
दैवी राज्य, दैवी सभ्यता और विश्व में प्राकृतिक परिवर्तन
दैवी राज्य, दैवी सभ्यता और नग्न सभ्यता अर्थात् आदिवासी सभ्यता का आधार या कारण

प्रश्नावली 1

Q. दैवी धर्म और सतयुग-त्रेता की दैवी राजाई की आदि स्थापना भारत में और विस्तार सुदूर तक होता है तो उत्थान किसको कहा जायेगा अर्थात् चरमोत्कर्ष कब कहा जायेगा अर्थात् आदि में या अन्त में?

Q. सतयुग-त्रेता की राजाई के पतन के कारण क्या होते हैं?

Q. सतयुग की आदि से ही उतरती कला होती है, तो उसको पतन कहें या द्वापर से जब वाम मार्ग में जाते हैं तब पतन कहा जायेगा?

Q. कलियुग के अन्त में प्राय: विश्व में सभी देशों में प्रजातन्त्र की राज-व्यवस्था है तो सतयुगी राजाई की स्थापना, विनाश के पहले होती है या बाद में होती है अर्थात् नये कल्प अर्थात सतयुग आदि में राजाई की स्थापना होती है या बाद में होती है?

Q. सतयुग की राजाई की स्थापना श्रीकृष्ण के माता-पिता के द्वारा होगी अर्थात् श्रीकृष्ण किसी राजा के घर में जन्म लेगा या श्रीकृष्ण से ही राजाई की स्थापना होगी और उसके स्थापन होने का विधि-विधान क्या होगा?

Q. यदि श्रीकृष्ण किसी राजा के घर में जन्म लेगा और उनके मात-पिता उनको गद्दी पर बिठायें तो श्रीकृष्ण के गद्दी पर बैठने के समय भी विकारी बीज से पैदा हुए मनुष्य होंगे और वे कितने समय तक रहेंगे? या श्रीकृष्ण को और उनके समकक्ष राजाओं को गद्दी पर बिठाने के बाद तुरत ही वे तिरोध्यान हो जायेंगे अर्थात् परमधाम चले जायेंगे?

Q. सतयुग की प्रथम चक्रवर्ती राजाई देहली में होगी या अन्य किसी स्थान पर होगी, जहाँ से श्रीकृष्ण नारायण बनने के बाद देहली अर्थात् इन्द्रप्रस्थ में अपनी राजधानी बनायेगा?

Q. सतयुग की राजाई और सतयुग के जन्मों में क्या सम्बन्ध है?

Q. सतयुग की राजाई का त्रेतायुगी राजाई में और त्रेतायुगी राजाई का द्वापरयुगी राजाई में कैसे परिवर्तन होता होगा?

Q. सतयुग की दैवी राजाई, भारत की द्वापरयुगी राजाई और अन्य धर्मों की राजाई के विधि-विधानों में क्या भिन्नता होती है?

Q. जो दूसरी-तीसरी राजाई में राजा-रानी बनने वाले हैं, वे पहली राजाई में आ नहीं सकते तो दोनों में कौन महान कहे जायेंगे, किनकी अष्ट रतनों में गिनती की जायेगी?

Q. अष्ठ रत्नों और चक्रवर्ती राजा-रानी के गुण-धर्मों में कोई सम्बन्ध है? यदि है तो वह क्या है, कैसा है और कहाँ तक है?

Q. प्रथम विश्व-महाराजन और उनके समकक्ष राजाइयों के राजा-रानी और सतयुग के अन्तिम विश्व-महाराजन के गुणों, स्वभाव-संस्कारों में किसके गुण और स्वभाव-संस्कार श्रेष्ठ होंगे और दोनों में कौन अष्ठ रतनों में गिने जायेंगे?

Q. राजशाही की स्थापना में ईश्वरीय सेवा का क्या महत्व है?

Q. चारो बातों अर्थात् बाप, आप, ड्रामा और परिवार में क्या गुण-धर्म-विशेषतायें हैं, जिन पर पूरा निश्चय हो तो विजय निश्चित है?

Q. परमात्म दिल-तख्त और भविष्य के राज-तख्त के गुण-धर्मों में क्या मूलभूत अन्त है?

ईश्वरीय महावाक्य

प्रजातन्त्र से राजतन्त्र और परमात्मा
राजतन्त्र, प्रजातन्त्र और परमात्मा

Q. विश्व में प्रजातन्त्र की राज-व्यवस्था में सुख-शान्ति होती है या राजतन्त्र (Kingdomship) में सुख-शान्ति होती है अर्थात् कौनसी राज-व्यवस्था यथार्थ है अर्थात् अच्छी है ?

यह एक विचारणीय प्रश्न है, जिसका सही उत्तर हम सारे सृष्टि-चक्र का बुद्धि से चक्कर लगाने पर सहज ही प्राप्त कर लेंगे। सृष्टि-चक्र के आदि से ही विश्व में राजतन्त्र की राज-व्यवस्था रही है और उसमें ही विश्व में सुख-शान्ति, अमन-चैन रहा है। सतयुग-त्रेता में तो राजतन्त्र में सुख-शान्ति रहती ही है परन्तु द्वापर में भी अनेक राजायें, जो चरित्रवान और धार्मिक प्रवृत्ति के थे, उनके राज्य में प्रजा सुख-शान्ति में रहती थी। वे भी प्रजा के साथ पुत्र के समान व्यवहार करते थे और प्रजा भी उनको पिता तुल्य सम्मान देती थी। सृष्टि-चक्र के विधि-विधान अनुसार अर्थात् सतोप्रधान से तमोप्रधानता के नियम अनुसार जब विश्व में तमोप्रधान बढ़ती है, आत्माओं में देहाभिमान बढ़ता है, जिससे उनमें 5 विकारों की प्रवेशता होती है, जिससे राजायें भी विकारों से ग्रसित हो जाते हैं अर्थात् वे विलासी हो जाते हैं, जिससे उनके और प्रजा के सम्बन्धों में कटुता आ जाती है। विकारों के वशीभूत लोभ और अहंकार के कारण राजाओं में अनेक प्रकार के युद्ध होते हैं, जिससे विश्व में साधन-सम्पत्ति का ह्रास होता है और विश्व में दुख-अशान्ति बढ़ती है। राजाओं के प्रजा के साथ सम्बन्धों में कटुता आ जाती है, जिससे राजतन्त्र की राज-व्यवस्था की जगह विश्व में प्रजातन्त्र की राज-व्यवस्था आती है। परन्तु विश्व में दुख-अशान्ति निरन्तर बढ़ती ही जाती है क्योंकि विश्व-नाटक के विधि-विधान अनुसार विश्व में तमोप्रधानता निरन्तर बढ़ती ही जाती है। उपर्युक्त प्रश्न का उत्तर एक शब्द में दिया जाये तो विश्व राजतन्त्र (Kingdomship) में ही सुखी और शान्त होता है, इसलिए कल्पान्त में परमपिता परमात्मा आकर विश्व में पुन: प्रजातन्त्र से राजतन्त्र की राज-व्यवस्था की स्थापना करते हैं।

राजशाही की स्थापना, परमात्मा और गीता

आज विश्व में सर्वत्र प्रजातन्त्र है। ज्ञान सागर परमात्मा आकर गीता ज्ञान देते हैं और राजयोग सिखाते हैं, जिसके द्वारा विश्व में पुन: राजशाही की स्थापना करते हैं, जो सतयुग की आदि से कलियुग के अन्त तक चलती आती है। कलियुग के अन्त में थोड़े समय के लिए ही विश्व में प्रजातन्त्र की राज-व्यवस्था आती है। ये सृष्टि-चक्र राजतन्त्र से प्रजातन्त्र और प्रजातन्त्र से राजतन्त्र का अनादि-अविनाशी चक्र है, जो सतत चलता रहता है अर्थात् अनादि काल से चलता आ रहा है और अनन्त काल तक चलता रहेगा।

सतयुग की राजशाही और कलियुग की राजशाही में रात-दिन का अन्तर होता है, इसलिए सतयुग की राजशाही, जो परमात्मा स्थापन करते हैं, सुखदाई होती है और कलियुग की राजशाही दुखदायी बन जाती है और जब प्रजा उससे ऊब जाती है, तब प्रजा राजतन्त्र का अन्त करके, राज-व्यवस्था अपने हाथ में ले लेती है, जिसको प्रजातन्त्र कहा जाता है और विश्व में प्रजातन्त्र की राज-व्यवस्था आती है।

राजशाही की स्थापना में गीता की क्या भूमिका है, यह भी विचारणीय है, जिसका राज़ भी ज्ञान सागर शिवबाबा ने बताया है। गीता में ही राजयोग का वर्णन है, जिसका ज्ञान भी परमात्मा ही देते हैं और परमात्मा जो राजयोग सिखलाते हैं, उससे विश्व में पुन: राजाई की स्थापना होती है अर्थात् प्रजातन्त्र का अन्त होता है और राजतन्त्र की स्थापना होती है। इसलिए ही बाबा बार-बार मुरलियों में कहते हैं - मैं गीता ज्ञान देकर धर्म और राज्य की स्थापना करता हूँ।

''पहले-पहले किसको भी यह अच्छी रीति समझाओ कि दो बाप हैं - एक लौकिक और दूसरा पारलौकिक। ... पारलौकिक बाप है स्वर्ग का रचयिता, वह भारत में ही स्वर्ग रचते हैं, जिसमें देवी-देवताओं का राज्य होता है।... गीता में है भगवानुवाच - मैं तुमको राजयोग सिखाता हूँ अर्थात् नर से नारायण बनाता हूँ।'' सा.बाबा 6.07.10 रिवा.

''बाप को जितना याद करेंगे, उतना पावन बनेंगे और फिर ऊंच पद पायेंगे नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। ... नई दुनिया में राजाओं का राजा कैसे बन सकते हैं, उसके लिए बाप ही राजयोग सिखलाते हैं। बाप ही नॉलेजफुल है, परन्तु उनमें कौनसी नॉलेज है, यह कोई नही जानते हैं। सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त की हिस्ट्री-जॉग्राफी बेहद का बाप ही सुनाते हैं।''

सा.बाबा 19.07.10 रिवा.

''बाप सब बातें समझाते हैं, उनको अच्छी रीति धारण कर सदा हर्षित रहना है।... बाप कहते हैं - तुमको अपने लिए आपही पुरुषार्थ कर राजधानी स्थापन करनी है, पढ़ाई से ऊंच पद पाना है। यह है राजयोग, प्रजायोग नहीं है, परन्तु जब राजा बनेंगे तो प्रजा भी तो बनेंगी ना। शकल और सर्विस से मालूम पड़ जाता है कि यह क्या बनने लायक है।''

सा.बाबा 19.07.10 रिवा.

''तुम गुप्त वेष में अपना गँवाया हुआ राज्य लेते हो। तुमको पहचान मिली है कि हम तो विश्व के मालिक थे, सूर्यवंशी देवतायें थे। अभी फिर से वह बनने का पुरुषार्थ कर रहे हो। ... मनुष्य समझते हैं कि परमात्मा दुनिया का मालिक है, परन्तु वह दुनिया का मालिक नहीं बनते हैं। विश्व के मालिक तो तुम बनते हो। ... तुम ही राज्य पाते हो और फिर तुम ही राज्य गँवाते हो। फिर बाप आकर तुमको विश्व का मालिक बनाते हैं।''

सा.बाबा 1.7.10 रिवा.

''यह तुम्हारी बुद्धि में ही है कि हम कल्प-कल्प शिवबाबा से वर्सा लेते हैं, फिर गँवाते हैं।... यह भी सब समझते हैं कि विनाश जरूर होगा, आगे भी हुआ था परन्तु कैसे हुआ था और कैसे होगा, यह किसको भी पता नहीं है।... शास्त्रों में पाण्डवों और कौरवों की युद्ध हुई, परन्तु वह कैसे हो सकती है।... तुम तो हो डबल अहिंसक।''

सा.बाबा 30.6.10 रिवा.

''यह सब शरीर इस यज्ञ में स्वाहा हो जायेंगे, बाकी आत्मायें भागेंगी अपने घर। ... यह है सब ड्रामा। तुम सब ड्रामा के वश चल रहे हो। बाप कहते हैं - हमने राजस्व यज्ञ रचा है। यह भी ड्रामा प्लेन अनुसार रचा गया है। ऐसे नहीं कहेंगे कि मैंने यज्ञ रचा है। नहीं, ड्रामा प्लेन अनुसार तुम बच्चों को पढ़ाने के लिए कल्प पहले मुआफिक ज्ञान यज्ञ रचा गया है।''

सा.बाबा 28.06.10 रिवा.

''कोई-कोई प्रश्न पूछते हैं कि तुम्हारा खर्चा कैसे चलता है। ... इतने सब ब्रह्मा के बच्चे ब्राह्मण हैं, तो हम ही अपने लिए खर्चा करेंगे। हम अपने लिए श्रीमत पर अपनी राजाई स्थापन कर रहे हैं। राज्य भी हम करेंगे तो खर्चा भी हम कर रहे हैं। ... शिवबाबा तो अविनाशी ज्ञान रतनों का दान देते हैं, जिससे हम राजाओं का राजा बनते हैं।''

सा.बाबा 13.05.10 रिवा.

''मैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूँ - यह गीता के अक्षर हैं ना। इसको कहा ही जाता है गीता का युग। तुम अभी राजयोग सीख रहे हो। जानते हो अभी आदि सनातन देवी-देवता धर्म का फाउण्डेशन लग रहा है। अभी ही सूर्यवंशी और चन्द्रवंशी दोनों राजाई स्थापन हो रही हैं।

ब्राह्मण कुल स्थापन हो चुका है। ब्राह्मण ही फिर सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी बनते हैं।''

सा.बाबा 25.10.10 रिवा.

''गीता का ही पुरुषोत्तम युग गाया जाता है। तुम लिखो - यह गीता का पुरुषोत्तम युग है, जबकि पुरानी दुनिया बदल रही है।... बेहद का बाप राजयोग सिखला रहे हैं। जो अच्छी रीति पढ़ेंगे, वे डबल सिरताज बनेंगे।... राजाई स्थापन होती है तो प्रजा भी अनेक प्रकार की होगी। राजाई वृद्धि को पाती रहेगी। कम ज्ञान उठाने वाले जरूर पीछे आयेंगे।''

सा.बाबा 6.10.10 रिवा.

राजतन्त्र, प्रजातन्त्र और परमात्मा

सतयुग का राजतन्त्र और कलियुग का प्रजातन्त्र

राजतन्त्र (Kingdomship) प्रजातन्त्र (Democracy, Communism, etc.)

कलियुग में प्राय: सभी देशों में प्रजातन्त्र है, जिसमें अनेक प्रकार की राज-व्यवस्थायें हैं, जिनमें Democracy, Communism मुख्य हैं। इन दो प्रकार की राज-व्यवस्थाओं के आधार पर विश्व के भिन्न-भिन्न देशों में भिन्न-भिन्न प्रकार की राजव्यवस्थायें हैं, परन्त विश्व में निरन्तर दुख-अशान्ति बढ़ती जा रही है, इसलिए सब आत्मायें परमात्मा को याद करती हैं, ऐसे समय पर परमात्मा आकर इस प्रजातन्त्र की व्यवस्था को समाप्त कर विश्व में पुन: राजतन्त्र की राज-व्यवस्था स्थापित करते हैं।

''आत्मा इन शरीर रूपी कर्मेन्द्रियों द्वारा जानती है कि हम बाप से विश्व का क्राउन पिन्स-प्रिन्सेज बनने के लिए पाठशाला में बैठे हैं, तो बच्चों को कितना नशा होना चाहिए। ... हर एक को अपने दिल से पूछना चाहिए कि हम ऐसा पुरुषार्थ करते हैं ... हमको इतनी खुशी रहती है?''

सा.बाबा 19.04.10 रिवा.

''इस समय तुम बाप को बहुत मदद करते हो। जानते हो यह पैसे तो सब खत्म हो जायेंगे, इससे अच्छा क्यों न बाप को मदद करें। बाप कैसे गुप्त रूप में राजाई स्थापन करते हैं। ... बाप कहते हैं - तुम सजनियाँ हो, तुमको मैं विश्व का मालिक बनाने आया हूँ। तुम गुप्त मदद करते हो।''

सा.बाबा 19.04.10 रिवा.

''देवताओं की राजधानी होती है, ब्राह्मणों की राजाई नहीं है। भल तुम्हारा पाण्डव नाम है परन्तु पाण्डवों को राजाई नहीं है। राजाई प्राप्त करने के लिए बाप के साथ बैठे हो। ... बाप आते हैं

स्वर्ग की स्थापना करने, नर्क का विनाश कराने। यह बुद्धि में रहे तो खुशी का पारा चढ़ा रहे।''

सा.बाबा 28.04.10 रिवा.

''जिस यज्ञ से तुम इतना ऊंच बनते हो, उस यज्ञ की बहुत प्यार से सेवा करनी चाहिए। ऐसे यज्ञ में तो हड्डियाँ भी दे देनी चाहिए। ... अभी तुम समझ सकते हो कि राजा कैसे, प्रजा कैसे बनते हैं। बाबा ने रथ अनुभवी लिया है, जो राजाओं आदि को अच्छी रीति जानते हैं। राजाओं के पास दास-दासियों को भी बहुत सुख मिलता है। वे भी राजाओं के साथ ही रहते हैं परन्तु कहलायेंगे तो दास-दासी।''

सा.बाबा 28.04.10 रिवा.

''अभी तुम जानते हो - बाप फिर से आकर हमको विश्व की बादशाही देते हैं। कोई की बुद्धि में नहीं आयेगा कि विश्व की बादशाही क्या होती है।... बच्चों को कितनी खुशी होनी चाहिए। बाप से हमने कितनी बार राज्य लिया है।''

सा.बाबा 13.09.10 रिवा.

''अभी विश्व में वह सावरण्टी नहीं है। दैवी सावरण्टी थी, जिसको स्वर्ग कहा जाता था। अभी तो सब जगह पंचायती राज्य है। ... कट निकली हुई हो, बाप की याद में हो तो किसको तीर भी लगे। इसलिए पहले अपनी कट उतारने की कोशिश करनी चाहिए। अपना करेक्टर देखना है। ... बाप सबकी अवस्था को जानते हैं। झरमुई-झगमुई करते हैं तो कट और ही चढ़ जाती है।''

सा.बाबा 4.09.10 रिवा.

''तुम बच्चों को अन्दर में बहुत नशा रहना चाहिए कि हम शिवबाबा के साथ दैवी राज्य स्थापन करने आये । हम सारे विश्व को स्वर्ग बनाते हैं। ... अभी तुम बच्चे अपने घर जा रहे हो। घर को याद कर बहुत खुश होना चाहिए। मनुष्य मुसाफिरी कर घर लौटते हैं तो कितनी खुशी होती है। तुम आत्माओं का घर है मूलवतन।''

सा.बाबा 3.08.10 रिवा.

''अभी महाराजा-महारानी श्री लक्ष्मी-नारायण की राजधानी स्थापन हो रही है। ... अभी कोई राजा-रानी है नहीं, प्रजा का प्रजा पर राज्य है। अभी प्रजा ही प्रजा का खा रही है। आजकल का राज्य बड़ा ही वण्डरफुल है। जब राजाओं का बिल्कुल नाम-निशान निकल जाता है, तब फिर बाप आकर राजधानी स्थापन करते हैं।''

सा.बाबा 20.07.10 रिवा.

''यह भी किसको बताना है कि स्वर्ग की राजाई किसने स्थापन की। हेविनली गॉड फादर जरूर संगम पर आते हैं और आकर स्वर्ग की स्थापना करते हैं।... तुम स्टूडेण्ट्स की बुद्धि में यह सारी नॉलेज होनी चाहिए। नॉलेज से हम कितनी कमाई करते हैं, तो खुशी रहती है ना।''

सा.बाबा 6.07.10 रिवा.

''नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार जो ऊंच बनते हैं, उनको मेहनत भी जास्ती करनी पड़ेगी, याद में जास्ती रहना पड़ेगा। ... यह संगमयुग ही पुरुषोत्तम युग है, ऊंच बनने का युग है। अभी हमको बेहद का बाप पढ़ा रहे हैं। आगे चलकर सन्यासी लोग भी मानेंगे। वह भी समय आयेगा ना। अभी तुम्हारा इतना प्रभाव निकल नहीं सकता क्योंकि अभी राजधानी स्थापन हो रही है, अभी टाइम पड़ा है।''

सा.बाबा 28.06.10 रिवा.

''तुम जानते हो - आहिस्ते-आहिस्ते यह ब्राह्मणों का झाड़ वृद्धि को पाता रहता है। बच्चे यह भी जानते हैं कि यह है हमारी रुहानी गवर्मेन्ट। ड्रामा प्लेन अनुसार स्थापना होनी ही है। ... स्वर्ग में कोई कृष्ण अकेला थोड़ेही था, सारी राजधानी थी। अभी तुम समझते हो हम नर्कवासी से स्वर्गवासी बन रहे हैं। हर एक को अपना पुरुषार्थ करना है। ... राजधानी स्थापन करने में टाइम तो लगता है ना।''

सा.बाबा 29.06.10 रिवा.

''इसमें बिल्कुल अन्तर्मुखता चाहिए। नॉलेज भी आत्मा में धारण होती है। आत्मा ही पढ़ती है। आत्मा का ज्ञान भी परमात्मा बाप ही आकर देते हैं। इतना भारी ज्ञान तुम लेते हो विश्व का मालिक बनने के लिए। ... तुम मेरे बनते हो तो तुमको सब देता हूँ, बाकी सिर्फ दिव्य-दृष्टि की चाबी नहीं देता हूँ, उसके बदले फिर तुमको विश्व का मालिक बनाता हूँ।''

सा.बाबा 23.06.10 रिवा.

''यह अनादि ड्रामा बना हुआ है, जिसका राज़ बाप बैठ समझाते हैं। वास्तव में तुम्हारा पार्ट सबसे जास्ती है, तो तुमको इज़ाफा मिलना चाहिए। ... बाप देखो कैसी कमाल करते हैं, जो मनुष्य को देवता, रंक को राव बना देते हैं। अभी तुम बेहद के बाप से सौदा करते हो। कहते हो - बाबा हमको रंक से राव बनाओ।''

सा.बाबा 16.06.10 रिवा.

''हम फिर से श्रीमत पर 5 हजार वर्ष पहले मुआफिक अपने दैवी स्वराज्य की स्थापना कर रहे हैं। ... दुख कब से शुरू हुआ, फिर कब पूरा होगा, यह और कोई की बुद्धि में चिन्तन नहीं होगा। तुमको ही यह बुद्धि में है कि हम बरोबर ईश्वरीय सम्प्रदाय के थे, ... यूँ तो सारी दुनिया के मनुष्य मात्र ईश्वरीय सम्प्रदाय के हैं। हर एक उनको फादर कहकर बुलाते हैं।''

सा.बाबा 4.06.10 रिवा.

''बाप अभी आकर किंगडम स्थापन करते हैं। अभी कोई सावरण्टी अर्थात् किंगडम तो है नहीं। अनेक मतों से राज्य चलता है। सतयुग में तो एक महाराजा का राज्य होता है, उसकी ही मत चलती है। वहाँ वज़ीर आदि भी नहीं होते हैं। राजा में इतनी ताकत होती है। अभी तुम बाप से ताक़त ले रहे हो। फिर जब पतित बनते हैं तो वह ताकत नहीं रहती है, तो वजीर आदि

रखते हैं। अभी तो प्रजा का प्रजा पर राज्य है।''

सा.बाबा 7.06.10 रिवा.

''बाप ने राजयोग सिखाकर राजा-रानी बनाया, राजा-रानी का कायदा (राजतन्त्र) स्थापन किया, गांधी ने उस ईश्वरीय रस्म-रिवाज़ को भी आज तोड़ डाला। बोला राजाई नहीं चाहिए, हमको प्रजा का प्रजा पर राज्य चाहिए। ... तुम श्रीमत पर राज्य लेते हो, तुम्हारे में इतनी ताकत होती है, जो वहाँ लश्कर आदि होता नहीं है क्योंकि डर की कोई बात नहीं।''

सा.बाबा 10.05.10 रिवा.

''बच्चे ये तो जानते हो कि हम इस ड्रामा में पार्टधारी हैं, अभी हमने 84 जन्मों का चक्र पूरा किया है। यह तुम बच्चों की स्मृति में रहना चाहिए। यह भी जानते हो कि बाबा आया हुआ है, हमको फिरसे राज्य प्राप्त कराने वा तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाने। ये बातें सिवाए बाप के और कोई समझा नहीं सके।''

सा.बाबा 01.05.10 रिवा.

''श्रीमत कहती है - अपनी ऑखों को सिविल बनाओ। काम पर जीत पाने की हिम्मत रखनी चाहिए। विचार करना है - बाबा का हुक्म है, हम नहीं मानेंगे तो एकदम चकनाचूर हो जायेंगे, 21 जन्मों की राजाई में रोला पड़ जायेगा।... बाप का कोई भी ऑर्डर हुआ, तो उसमें आनाकानी नहीं करनी है।... उसको नाफरमान बरदार कहा जाता है।''

सा.बाबा 26.10.10 रिवा.

सतयुग-त्रेता की राजाई और उसका अधिकार

परमात्मा स्वर्ग का रचता है, जहाँ देवी-देवताओं की अटल-अखण्ड राजाई चलती है। सर्व आत्मायें परमात्मा के बच्चे हैं, तो वह सतयुग-त्रेता की राजाई सर्व आत्माओं का जन्मसिद्ध अधिकार है परन्तु वह अधिकार किसको और कितना मिलता है और उसको पाने का विधि-विधान क्या है, वह भी परमात्मा ही बताते हैं। इस सत्य को जानने वाला ही उस राजाई का पूर्ण अधिकार प्राप्त कर सकता है। जो आत्मायें उसको जानकर, परमात्मा के महावाक्यों पर पूर्ण निश्चय कर, उस अनुसार चलते हैं, वे ही उस राजाई के अधिकार को पाते हैं। क्योंकि राजाई में तो राजा-प्रजा, नौकर-चाकर, दास-दासी, साहूकार सभी प्रकार के होना चाहिए और होते ही हैं। इसलिए उस सतयुग-त्रेता की राजाई में भी ये सब होंगे, जो सब अपने यहाँ के पुरुषार्थ से बनते हैं।

परमात्मा है स्वर्ग अर्थात् सतयुग-त्रेता की राजाई की स्थापना करने वाला और सर्व आत्मायें उनके बच्चे हैं, इसलिए सबका उस राजाई पर अधिकार है और परमात्मा सबको वह

अधिकार देता भी है। इसलिए ही बाबा बार-बार मुरलियों में कहते हैं कि बाप का सन्देश सर्व आत्माओं को दो, सर्व आत्माओं को बाप का सन्देश मिलेगा, तब ही नई दुनिया की स्थापना का कार्य पूरा होगा। बाप का ये सन्देश सर्व आत्माओं को मिलता भी अवश्य है। जब सर्व आत्माओं को बाप का सन्देश मिलेगा, तब ही पुरानी दुनिया का विनाश और नई दुनिया अर्थात् सतयुगी राजाई की स्थापना होगी अर्थात् नई दुनिया की आदि होगी। इस प्रकार परमात्मा सबको उस वर्से का अधिकार देता है, परन्तु विश्व-नाटक के विधि-विधान अनुसार सब नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार ही उस अधिकार को पाते हैं अर्थात् पा सकते हैं।

सतयुग-त्रेता की राजाई के अधिकार को पाने का मूल आधार है परमात्मा को यथार्थ रीति पहचान कर, साकार में उनका बनना, उनके साथ विश्व कल्याण की सेवा अर्थात् राजाई की स्थापना में मददगार बनना, उसके लिए विश्व-कल्याण की सेवा करना अर्थात् अपना तन-मन-धन विश्व-कल्याण की सेवा में सफल करना। परमात्मा से सतयुग-त्रेता की राजाई का अधिकार वही पा सकता है, जो परमात्मा से इस संगमयुग पर संगमयुग की राजाई का वर्सा प्राप्त करता है अर्थात् संगमयुग पर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर अपनी कर्मेन्द्रियों का राजा बनता है। क्योंकि जो संगमयुग की राजाई का वर्सा लेकर अपनी कर्मेन्द्रियों का राजा बनता है, वही यथार्थ रीति विश्व-कल्याण की सेवा कर सकता है अर्थात् सतयुगी राजाई की स्थापना में परमात्मा का मददगार बन सकता है। इसमें साकार प्रजापिता ब्रह्मा बाबा सबसे अग्रणी हैं, जिन्होंने बाबा का सन्देश मिलते ही अपना सबकुछ बाबा को अर्पण कर दिया और तन-मन-धन-जन से विश्व कल्याण की सेवा में लग गये, इसलिए उनको राजाई का नम्बरवन अधिकार परमात्मा से मिला। उसके बाद सभी ने नम्बरवार पुरुषार्थ करते हैं और उस अनुसार विश्व की राजाई का अधिकार पाते हैं।

इस प्रकार हम विचार करें तो सतयुग-त्रेता की राजाई में आत्मायें चक्रवर्ती राजा-रानी, राजा-रानी, शाही परिवार में और फिर प्रजा में अपने संगमयुग पर ज्ञान, योग, धारणा, सेवा चारो में किये गये पुरुषार्थ के आधार पर ही परमात्मा से अधिकार प्राप्त करते हैं।

''तुम समझते हो कि इस पुरानी दुनिया का विनाश हो, तब तो स्वर्ग की राजाई मिले। अभी अजुन राजाई स्थापन नहीं हुई है। हाँ, दिन-प्रतिदिन प्रजा बनती जाती है। ... जो बाप हमको राजतिलक का हक़दार बनाये, और सबका विनाश करा देते हैं। ऐसे बाप को याद तो करना चाहिए ना। ये नेचुरल केलेमिटीज़ भी ड्रामा में नूँधी हुई हैं। इनके बिगर दुनिया का विनाश हो नहीं सकता है।''

सा.बाबा 28.09.10 रिवा.

''तुम बच्चे जानते हो कि हम अभी अपना स्वराज्य स्थापन कर रहे हैं। हम इस पढ़ाई से राज्य पाते हैं। नई दुनिया जरूर स्थापन होनी है, ड्रामा में नूँध है। तो तुमको कितनी खुशी होनी चाहिए। ... भारत फिर से स्वर्ग बनना है। सतयुग में एक ही धर्म था। ... बाप तो सभी का है ना। सबका हक़ है बाप से वर्सा लेने का।''

सा.बाबा 29.09.10 रिवा.

''कितने भी विघ्न पड़ें, तूफान आयें परन्तु तुमको डरना नहीं है क्योंकि नये धर्म की स्थापना होती है ना। तुम गुप्त राजधानी स्थापन कर रहे हो। ... तुमको श्रीमत पर चलकर आपही अपने को राजतिलक देना है। इसमें अपना हठ चल न सके। मुफ्त में अपने को घाटा नहीं डालना चाहिए। बाप कहते हैं - बच्चे, सर्विसएबुल और कल्याणकारी बनो।''

सा.बाबा 29.09.10 रिवा.

''कर्म करते हुए बाप को याद करना है। पुरुषार्थ का ही फल मिलता है। यह मेहनत करनी है। ऐसे ही थोड़ेही सिर पर ताज रख देंगे। बाबा इतना ऊंच पद प्राप्त कराते हैं तो कुछ तो मेहनत करनी होगी। ... बिल्कुल सहज है। बुद्धि में रहे शिवबाबा से ब्रह्मा द्वारा हम यह बन रहे हैं। कहाँ भी जाते हो तो बैज पड़ा रहे। बोलो - वास्तव में यह है हमारा कोट ऑफ आर्म्स।''

सा.बाबा 1.10.10 रिवा.

''अभी तुम बच्चे जानते हो कि यह राजधानी स्थापन हो रही है, परन्तु गुप्त। बाप ही आकर आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना करते हैं। ... बाप कहते हैं - तुम्हारा कल्याण एक बात में ही है कि बाप को याद करो, मन्मनाभव। बस। बाप का बच्चा बना, तो बच्चे को वर्सा तो अण्डरस्टुड है। ... सतयुगी दुनिया का वर्सा बाप ही देते हैं। इस पतित दुनिया का विनाश जरूर होना है।''

सा.बाबा 21.09.10 रिवा.

''माया को और प्रकृति को दासी बनाना है। जो संगमयुग में प्रकृति को दासी बनाते हैं, उनके जीवन में कब उदासी नहीं आती है। उदासी का कारण है प्रकृति के वा माया के दास बनना। ... यहाँ जास्ती समय माया वा प्रकृति के दास बनेंगे तो वहाँ भी दास-दासी बनना पड़ेगा क्योंकि संस्कार ही दास-दासी का हो गया।... इसलिए चेक करो कि उदासी आई तो जरूर कहाँ न कहाँ माया का दास बना हूँ।''

अ.बापदादा 12.3.72

''जो बाप द्वारा इन बातों को समझते हैं, वे समझाने लायक भी बनते हैं। नहीं तो लायक बन नहीं सकते। ... प्रजा उनकी होगी, जो पुरुषार्थ कर बहुत सर्विस करते हैं। तुम बच्चों को रुहानी सोशल सर्विस भी करनी है। इस सेवा में अपना जीवन सफल करना। चलन भी बहुत मीठी सुन्दर होनी चाहिए, जो औरों को मीठेपन से समझा सकें।''

सा.बाबा 9.09.10 रिवा.

''सतयुग में बहुत थोड़े मनुष्य होंगे, फिर बाद में वृद्धि को पाते रहेंगे। पहले सूर्यवंशी होंगे, फिर जब दुनिया 25 परसेन्ट पुरानी होगी, तो पीछे चन्द्रवंशी होंगे। सतयुग है 100 परसेन्ट नई दुनिया, जहाँ देवी-देवतायें राज्य करते हैं। तुम्हारे में भी बहुत इन बातों को भूल जाते हैं। राजधानी तो स्थापन होनी ही है। कब हार्टफेल नहीं होना है। ... अभी तुम अपने लिए विश्व पर स्वर्ग की बादशाही स्थापन करते हो। तो अपने को देखना है, हम उसमें क्या बनेंगे ?''

सा.बाबा 3.09.10 रिवा.

''सुदामा का भी मिसाल गाया हुआ है कि चावल मुट्ठी ले आया, बाबा हमको भी महल मिलने चाहिए। है ही उनके पास चावल मुट्ठी तो और क्या करेंगे। बाबा ने मम्मा का भी मिसाल बताया है। चावल मुट्ठी भी नहीं लाई।... कितना ऊंच पद पा लिया। इसमें पैसे की बात नहीं है। इसमें तो याद में रहना है और आप समान बनाना है।''

सा.बाबा 16.08.10 रिवा.

''यह हार और जीत का खेल है। पाँच विकारों रूपी रावण से हार कैसे होती है, फिर बाप आकर कैसे रावण पर जीत पहनाते हैं। ... यह राजधानी स्थापन हो रही है। बहुत आये, फिर चले गये, फिर आ जायेंगे परन्तु वे प्रजा में पाई-पैसे का पद पा लेंगे। वह भी चाहिए ना।'' !

सा.बाबा 9.08.10 रिवा.

''यह पुरानी दुनिया बदलनी है, नई दुनिया की स्थापना हो रही है। फिर जो अच्छी रीति पढ़ेंगे, वे राजाई कुल में आयेंगे, नहीं तो प्रजा में चले जायेंगे।... मनुष्य ऊंच पद पाने के लिए कितना पुरुषार्थ करते हैं। ऐसे नहीं कि जो मिला सो अच्छा है। हर बात के लिए पुरुषार्थ तो करना ही होता है।''

सा.बाबा 20.07.10 रिवा.

''तुम बच्चे ही जानते हो कि अभी इस पढ़ाई से किंगडम स्थापन हो रही है। जो अच्छी रीति पढ़ते हैं और श्रीमत पर चलते हैं, वे हाइएस्ट बनते हैं और जो बाप की निन्दा कराते हैं ... वे प्रजा में बहुत कम पद पाते हैं। ... एक बेहद का बाप ही है, जो यहाँ आकर किंगडम स्थापन करते हैं, और सब विनाश हो जाना है।''

सा.बाबा 1.07.10 रिवा.

''सब बच्चे बहुत समय देहाभिमानी होकर रहते हैं। मनुष्य देही-अभिमानी हों तो बाप का यथार्थ परिचय हो। परन्तु ड्रामा में ऐसे है नहीं। ... बाप रचता है तो जरूर हम बच्चों को नई दुनिया की राजधानी का वर्सा होना चाहिए। स्वर्ग का नाम भी भारत में मशहूर है, परन्तु स्वर्ग को यथार्थ रीति समझते नहीं हैं। ... एक बार बाप पर निश्चय हो गया, फिर कोई भी बात में प्रश्न आदि उठ नहीं सकता।''

सा.बाबा 30.06.10 रिवा.

परमपिता परमात्मा ने हमको एडॉप्ट किया है, विश्व की बादशाही देने के लिए तो हमको कितनी खुशी होनी चाहिए, उतनी खुशी अनुभव होती है? ... बाबा को फॉलो करता है, ... बाबा से रूह-रुहान करता हूँ? दादी जानकी 29.6.10

''कोई कहे - बाबा हमारी बुद्धि नहीं खुलती है, यह भी तुम्हारी तकदीर है। ड्रामा में पार्ट ही ऐसा है, उसको बाबा चेन्ज कैसे कर सकते हैं। स्वर्ग का मालिक बनने के लिए तो सब हकदार हैं, परन्तु नम्बरवार तो होंगे ही ना। ऐसे तो नहीं कि सब बादशाह बन जायेंगे।... अभी तुम बच्चे जानते हो कि हम श्रीमत पर अपना राज्य स्थापन कर रहे हैं।''

सा.बाबा 25.06.10 रिवा.

''यह भी खेल है, इसमें मूँझने की बात ही नहीं है। बाप समझाते हैं - माया तूफान तो लायेगी, परन्तु उनसे डरना नहीं है। बहुत गन्दे-गन्दे संकल्प आयेंगे, वह भी तब होता है, जब तुम बाबा की गोद लेंगे। जब तक बाप की गोद नहीं ली है, तब तक माया इतना नहीं लड़ेगी। ... राजाई पद पाना तो अच्छा है, नहीं तो दास-दासियाँ बनना पड़ेगा। अभी सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी राजधानी स्थापन हो रही है।'' सा.बाबा 16.06.10 रिवा.

''बाबा यह भी जानते हैं, कोई बहुत कच्चे हैं, जो कुछ भी सहन नहीं कर सकते हैं, उनको कुछ न कुछ तकलीफ होगी, तो कहेंगे हम तो नाहेक आये... पूरी पहचान नही है कि हम ईश्वरीय विश्व विद्यालय में आये हैं, इस समय की पढ़ाई से कोई तो भविष्य में राव बनेंगे, कोई रंक भी बनने वाले हैं।'' सा.बाबा 12.06.10 रिवा.

''अभी बेहद का बाप आया हुआ है, जो सभी आत्माओं का बाप है। यह सिर्फ तुम बच्चों को ही समझ है, बाकी सारी दुनिया तो बेसमझ ही है। तो तुम्हारी आत्मा कितनी खुश होनी चाहिए। बाप हमको सारे विश्व पर राज्य करने के लायक इतना समझदार बनाते हैं। यह गॉडली स्टूडेण्ट लाइफ सारे कल्प में एक ही बार होती है, जब भगवान आकर पढ़ाते हैं।''

सा.बाबा 24.05.10 रिवा.

''बाबा से राय करके सर्विस में लग जाओ। कोई मदद की दरकार हो तो बाबा दूल्हेलाल बैठा है। यह सब ड्रामा में नूँध है। फिकर की कोई बात नहीं है। नहीं तो स्थापना कैसे होगी। दूसरी बात यह भी है कि जो करेगा, वह पायेगा। ... अभी तुम बाप के मददगार बने हो। तुम अपनी शक्ति से अपना राज्य स्थापन कर रहे हो।''

सा.बाबा 26.05.10 रिवा.

''अभी तुम बच्चों को कभी भी किसी बात में मूँझना नहीं है, मूँझकर पढ़ाई को छोड़ना नहीं है।

... ऐसे भी होता है जो किसको ज्ञान देते हैं तो वे तीखे चले जाते हैं और ज्ञान देने वाले खुद गिर पड़ते हैं। ... पढ़ने वाला राजा बन जाते हैं और पढ़ाने वाले दास-दासी बन जाते हैं।''

सा.बाबा 06.05.10 रिवा.

''ध्यान में कमाई नहीं होती है। ... ध्यान में जाने से बुद्धि में बाप की याद भी नहीं रहती है।... तुमको अच्छी रीति पढ़कर औरों को भी पढ़ाना है। खुद भी समझ सकते हैं कि हम कोई को सुनाते नहीं हैं तो क्या पद पायेंगे! अगर प्रजा नहीं बनायेंगे तो राजा कैसे बनेंगे।''

सा.बाबा 29.04.10 रिवा.

''इन सब बातों को समझने के लिए बुद्धि बड़ी पवित्र चाहिए, वह तब होगी जब याद की यात्रा में मस्त रहेंगे। मेहनत के सिवाए पद थोड़ेही मिलेगा। ... कहाँ ऊंच ते ऊंच राजाओं का राजा डबल सिरताज और कहाँ प्रजा, दास-दासी। पढ़ाने वाला तो एक ही बाप है। ... बाप सभी आत्माओं को पावन बनाकर साथ ले जायेंगे, शरीर यहाँ ही खत्म हो जायेंगे, आत्मायें परमधाम में जाकर अपने-अपने धर्म के सेक्शन में जाकर निवास करती हैं।''

सा.बाबा 25.10.10 रिवा.

''यह है बेहद का स्कूल। यहाँ एक ही एम एण्ड आब्जेक्ट है - स्वर्ग की बादशाही प्राप्त करना। स्वर्ग में भी बहुत पद हैं। कोई राजा-रानी बनते हैं तो कोई प्रजा बनते हैं। बाप कहते हैं - मैं आया हूँ, तुमको डबल सिरताज बनाने। सब तो डबल सिरताज बन न सकें। ... बाप से कोई पूछे कि मैं यह बन सकता हूँ, तो बाबा झट कहेंगे कि अपने को देखो। देखेंगे तो झट समझ जायेंगे कि बरोबर मैं इतना ऊंच पद नहीं पा सकता हूँ।''

सा.बाबा 8.10.10 रिवा.

सतयुग की राजाई, उसकी स्थापना और प्रजापिता ब्रह्मा

सतयुग-त्रेता की राजाई अर्थात् प्रजातन्त्र से राजतन्त्र की स्थापना परमात्मा करते हैं, परन्तु वह तो निराकार हैं, इसलिए उनको स्थापना के लिए साकार तन चाहिए। इसके लिए वे प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के साकार तन में प्रवेश होकर उनको इस पुरानी दुनिया के विनाश और नई दुनिया की स्थापना का साक्षात्कार कराते हैं कि अभी नई दुनिया स्वर्ग अर्थात् सतयुगी राजाई की स्थापना हो रही है, उसमें तुम अधिकारी बन सकते हो। परमात्मा का ये सन्देश पाकर ब्रह्मा बाबा ने उन महावाक्यों को सुनकर उन पर एक सेकेण्ड में पूर्ण निश्चय कर अपना तन-मन-धन सब परमात्मा को अर्पण कर दिया और उस राजाई की स्थापना में परमात्मा के मददगार बन गये, जिसके फलस्वरूप उनको परमात्मा सतयुगी राजाई का नम्बरवन अधिकार

प्राप्त हुआ। उनको देखकर अनेक और भी परमात्मा के इस कार्य में सहयोगी बने और उस राजाई का नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार अधिकार प्राप्त किया।

''बाप कहते हैं - मुझे याद करो और दैवी गुण धारण करो। कोई भी प्रॉपर्टी आदि का झगड़ा है तो उसको खलास कर दो। ... इसने भी छोड़ा तो कोई झगड़ा आदि थोड़ेही किया। कम मिला तो भी जाने दो, उसके बदले कितनी राजाई मिल गई। बाबा बताते हैं - मुझे साक्षात्कार हुआ विनाश और राजाई का, तो खुशी हो गई। ... जो बाप के बनते हैं, तो ऐसे थोड़ेही कि वे भूख मरेंगे।''

सा.बाबा 2.10.10 रिवा.

''यह भी पतित थे, इनमें बाप ने प्रवेश कर साक्षात्कार कराया और कहा - तुम विश्व के मालिक बनते हो, अब मामेकम् याद करो, पवित्र बनो तो झट पवित्र होने लग पड़े। पवित्र बनने बिगर तो ज्ञान की धारणा हो न सके। ... इस ज्ञान को धारण करने के लिए बुद्धि रूपी बर्तन सोने का चाहिए अर्थात् पवित्र चाहिए। याद से ही पवित्र बनेंगे।''

सा.बाबा 5.8.10 रिवा.

''तुम ब्राह्मण ब्रह्मा बाप के साथ विश्व में शान्ति की स्थापना का कार्य कर रहे हो। ऐसे शान्ति स्थापन करने वाले बच्चे बहुत शान्तचित्त और बहुत मीठे होने चाहिए। ... पहले तो अपने में बहुत शान्ति चाहिए, चलन बहुत रॉयल चाहिए। अभी तुम्हारी बुद्धि में अविनाशी ज्ञान रतनों का खज़ाना भरा हुआ है। तुम ज्ञान सागर बाप के वारिस हो।''

सा.बाबा 20.07.10 रिवा.

''ऐसी न्यारेपन की स्टेज में रहने से अन्य आत्माओं को भी आप लोगों से न्यारेपन का अनुभव होगा। वे भी न्यारापन महसूस करेंगे। ... ऐसे चलते-फिरते फरिश्तेपन के साक्षात्कार होंगे। यहाँ बैठे हुए भी अनेक आत्माओं को, जो भी आपके सतयुगी फेमिली में समीप आने वाले होंगे, उनको आप लोगों के फरिश्ते रूप और भविष्य राज्य पद दोनों के इकट्ठे साक्षात्कार होंगे। जैसे शुरू में ब्रह्मा बाबा के सम्पूर्ण स्वरूप का और श्रीकृष्ण दोनों का साक्षात्कार करते थे।''

अ.बापदादा 21.1.72

''तुम जानते हो अभी हम स्वर्ग में जाते हैं, फिर भी बच्चों को खुशी का पारा नहीं चढ़ता है। बाबा को कितनी खुशी है। मैं बूढ़ा हूँ, यह शरीर छोड़कर हम प्रिन्स बनने वाला हूँ। तुम भी पढ़ते हो तो खुशी का पारा चढ़ना चाहिए, परन्तु बाप को याद नहीं करते तो खुशी नहीं होती।''

सा.बाबा 13.05.10 रिवा.

''अभी तुम्हारी बुद्धि में है इतने सब धर्म कैसे आते हैं, फिर कैसे आत्मायें ब्रह्मतत्व में अपने-अपने सेक्शन में जाकर रहती हैं। यह सब ड्रामा में नूँध है। ... दिव्य-दृष्टि का दाता बाप ही

है। बाबा को कहा - यह दिव्य-दृष्टि की चाबी हमको दे दो, तो हम कोई को भी साक्षात्कार करा दें। बाबा बोला - नहीं, यह चाबी किसको भी मिल नहीं सकती। उसकी एवज में तुमको विश्व की बादशाही देता हूँ।''

सा.बाबा 20.10.10 रिवा.

''साक्षात्कार होने से खुश हो जाते हैं, परन्तु मिलता कुछ भी नहीं है।... इनको भी पहले विष्णु का साक्षात्कार हुआ और देखा मैं महाराजा बनता हूँ, तो बहुत खुश हो गया। विनाश भी देखा और राजाई को भी देखा, तब निश्चय बैठा। ओहो, मैं तो विश्व का मालिक बनता हूँ। बस बाबा को कहा यह सब आप ले लो, हमको तो विश्व की बादशाही चाहिए। तुम सब भी यह सौदा करने आये हो ना।''

सा.बाबा 20.10.10 रिवा.

''प्रजापिता ब्रह्मा और ब्राह्मण हैं चोटी। एक ब्रह्मा की बात थोड़ेही होती है। इस समय ब्राह्मणों का बड़ा भारी कुटुम्ब होगा ना, जो फिर तुम दैवी कुटुम्ब में आते हो। इस समय तुमको बहुत खुशी होती है क्योंकि लॉटरी मिलती है।... राजधानी स्थापन करने में मेहनत लगती है। बाप कहते हैं - यह ड्रामा बना हुआ है, इसमें मेरा भी पार्ट है।''

सा.बाबा 6.10.10 रिवा.

विश्व में राजशाही की स्थापना और विश्व-कल्याण की भावना

विश्व में राजशाही और विश्व-कल्याण

बाप आकर विश्व में राजाई की स्थापना करते हैं और विश्व की सर्व आत्माओं का कल्याण करते हैं तथा तत्वों सहित सारी दुनिया को पावन बनाते हैं। जो आत्मायें साकार में आये परमात्मा को पहचान कर, उनकी बनती हैं, उनमें स्व-कल्याण और विश्व-कल्याण की शुभ-भावना स्वत: जागृत होती है, जिस विश्व-कल्याण की भावना से वे विश्व की सेवा करती हैं और उस सेवा के आधार पर विश्व में राजाई की स्थापना होती है। जो आत्मायें जिन आत्माओं के कल्याण के निमित्त बनती हैं, वे आत्मायें ही उनकी भविष्य राजाई अर्थात् सतयुग-त्रेता में जब वे राजा बनते हैं, तब उनकी राजाई में विभिन्न पदों और प्रजा के रूप में आती हैं। इस प्रकार विचार किया जाये तो हम देखते हैं कि भविष्य सतयुग-त्रेता में राजाई पाने का मुख्य आधार है विश्व-कल्याण की भावना। परमात्मा ही साकार में आकर राजाई की स्थापना का ज्ञान देकर आत्माओं में विश्व-कल्याण की शुभ भावना जागृत करते हैं, जिस विश्व-कल्याण की भावना के आधार पर ही आत्मायें विश्व की सेवा करती हैं और विश्व में राजाई की स्थापना होती है।

''सर्विसएबुल बच्चों को सर्विस का बहुत शौक होना चाहिए। बाबा को सर्विस के लिए हेण्ड्स तो चाहिए ना। मिलीटरी में लड़ाई के मैदान में जाने के लिए कोई रिफ्यूज़ कर न सके। रिफ्यूज करने वाले पर केस चलाते हैं। यहाँ पर तो वह बात नहीं है। यहाँ फिर जो अच्छी रीति सर्विस नहीं करते हैं, तो उनका पद भ्रष्ट हो जाता है। वे जैसे की अपनी तकदीर को शूट कर देते हैं।''

सा.बाबा 11.09.10 रिवा.

''अपने पर रहम करना होता है। जब अपने पर रहम करें, तब दूसरों पर भी रहम करें। ... यह राजधानी भी स्थापन हो रही है। दुनिया वाले इन बातों को नहीं जानते हैं। ... बाप इस नाटक के राज़ को समझाते हैं। बाप डायरेक्शन भी देते हैं और एक्ट भी करते हैं। यह ज्ञान सुनाना, उनकी ऊंच ते ऊंच एक्ट है। ड्रामा के क्रियेटर, डायरेक्टर, मुख्य एक्टर को न जाना तो वह क्या ठहरा!''

सा.बाबा 11.09.10 रिवा.

''यह सब बिजलियाँ आदि भी स्वर्ग में होंते हैं। अब यह सब स्वर्ग में कैसे होंगे, जरूर उनकी जानकारी वाला चाहिए। तुम्हारे पास बहुत अच्छे-अच्छे कारीगर लोग भी आयेंगे। वे राजाई में तो नहीं आयेंगे परन्तु वे भी तुम्हारी प्रजा में आ जायेंगे। ... सबको शिवबाबा का परिचय देना है।''

सा.बाबा 15.04.10 रिवा.

''बाप कहते हैं - एक तो देही-अभिमानी बनो और बाप को याद करो। जितना याद करेंगे, उतना अपना कल्याण करेंगे। अभी तुम अपनी राजधानी स्थापन कर रहे हो, फिर से। आगे भी हमारी राजधानी थी। हम देवी-देवता धर्म वाले ही 84 जन्म भोग, अन्तिम जन्म में अभी संगम पर हैं। इस पुरुषोत्तम संगमयुग कातुम बच्चों के सिवाए और कोई को पता नहीं हैं।''

सा.बाबा 17.09.10 रिवा.

''तुम्हारा इस समय का एक-एक सेकण्ड बहुत वैल्यूएबुल है... भारत में इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य था, तो विश्व में शान्ति थी। अब बाप फिर से यह राजधानी स्थापन करने आये हैं, तुम बाप को याद करो तो विकर्म विनाश हों और विश्व में शान्ति हो।"

सा.बाबा 20.7.10 रिवा.

राजतन्त्र और सतयुग-त्रेता अर्थात् सतयुग-त्रेता का राजतन्त्र सतयुग-त्रेता के राजतन्त्र के विधि-विधान, नियम-सिद्धान्त

इस सृष्टि चक्र के दो भाग हैं, जो स्वर्ग और नर्क या दिन और रात के रूप में जाने जाते हैं। परमात्मा आकर जिस राजतन्त्र अर्थात् राजाई की स्थापना करते हैं, उसके आधार पर

सतयुग-त्रेता में चक्रवर्ती राजाई चलती है, जहाँ एक-धर्म, एक राज्य होता है और वह दैवी राजाई पूरे दोनों युगों में राजाई चलती है। द्वापर से भी विश्व में तो राजाई चलती है, परन्तु उसमें एक-धर्म, एक-राज्य नहीं होता है अर्थात् उस समय विश्व में कोई चक्रवर्ती राजायें नहीं होते हैं। कलियुग के अन्त में वह राजाई भी खत्म हो जाती है और विश्व में प्रजा ही राजा बन जाती है अर्थात विश्व में प्रजातन्त्र की राज-व्यवस्था आ जाती है।

सतयुग-त्रेता के राजतन्त्र में सब व्यवस्था स्वचालित होती है। समय पर हर राजा अपने उत्तराधिकारी को राजसिंहासन पर बिठा कर वानप्रस्थ ले लेता है अर्थात् किसी को राजसत्ता के साथ कोई लगाव नहीं होता है।

सतयुग-त्रेता के राजतन्त्र में प्रकृति भी सतोप्रधान होती है, इसलिए सारा कार्य समय पर होता है, प्रकृति से आत्माओं को सब सुख-सुविधायें सहज प्राप्त होती हैं। कब किसी प्रकार से तत्व उपद्रव आदि नहीं करते हैं, इसलिए कहा जाता है कि वहाँ प्रकृति भी दासी होती है।

सतयुग-त्रेता के राजतन्त्र में कोई राजा किसी की राजाई को छीनने का संकल्प नहीं करता क्योंकि सभी अपने में सम्पन्न-सन्तुष्ट-प्रसन्न होते हैं, परस्पर प्रेम और सौहार्द होता है। सतयुग-त्रेता के राजतन्त्र में राजसत्ता और धर्म-सत्ता एक राजा के ही हाथों में होती है क्योंकि राजायें धर्म सम्पन्न होते हैं। जबकि द्वापर-कलियुग में राज-सत्ता और धर्म-सत्ता अलग-अलग हाथों में हो जाती है क्योंकि राजाओं में विलासिता आ जाती है, कुछ न कुछ विकार द्वापर आदि से ही राजाओं में और प्रजा में आ जाते हैं।

सतयुग में समानान्तर 8 राजाईयाँ चलती हैं, जो जनसंख्या वृद्धि के साथ त्रेता में बढ़कर 12 हो जाती हैं। सतयुग में हर राजा को एक पुत्र और एक पुत्री अवश्य होती है, इसलिए किसी को उत्तराधिकारी के लिए सोचना नहीं होता है। त्रेता में कुछ अन्तर अवश्य होता होगा, जिसके आधार पर 8 से बढ़कर 12 समानान्तर राजाइयाँ हो जाती हैं परन्तु दोनों युगों में राजाओं में किसी प्रकार का मतभेद, लड़ाई आदि नहीं होती है।

बाबा ने यह भी बताया है कि सतयुग-त्रेता के राजतन्त्र में राजसिंहासन के पीछे विष्णु चतुर्भज का चित्र रहता है।

भल सतयुग-त्रेता में भी साकार में बच्चे को राजाई तो उसके बाप से ही वर्से के रूप में मिलती है, परन्तु वह है परमात्मा का आत्माओं को वर्सा, जो परमात्मा संगमयुग पर देते हैं अर्थात् संगमयुग पर परमात्मा की श्रीमत पर पुरुषार्थ करके परमात्मा से वर्से के रूप में पाते हैं, इसलिए उसके लिए वहाँ कोई मेहनत नहीं करनी होती है।

सतयुग में आत्माओं के कर्म अकर्म होते हैं अर्थात् उनसे न पाप बनता है और न ही पुण्य बनता है परन्तु फिर भी जो वे उपभोग करते हैं, उससे उनका संचित खाता कम जरूर होता है, इसलिए उस राजाई में भी निरन्तर सुख की कलायें कम होती जाती हैं, परन्तु किसी को कोई दुख नहीं होता है। उस राजाई की ये विशेषता है कि सुख की कलायें निरन्तर कम होते हुए भी किसी को उसकी महसूसता नहीं होती है, उसकी कोई चिन्ता नहीं होती है।

राजा-रानी दोनों को दो ताज होते हैं अर्थात् एक शक्ति का प्रतीक रत्नजड़ित ताज होता है और दूसरा शक्ति के साथ धर्म-सत्ता भी होने के कारण पवित्रता का प्रकाशमय ताज भी होता है। द्वापर युग से राज-सत्ता और धर्म-सत्ता अलग-अलग हो जाती है, जिसके कारण राजाओं को शक्ति का प्रतीक रतनजड़ित ताज होता है और धर्म-पिताओं आदि को पवित्रता का प्रतीक प्रकाशमय ताज होता है।

सतयुग-त्रेता में राजा और रानी दोनों साथ में राजसिंहासन पर बैठते हैं क्योंकि वहाँ दोनों को समान अधिकार होते हैं।

राजा-प्रजा में पिता-पुत्र का सम्बन्ध होता है अर्थात् राजा, प्रजा की पुत्र तुल्य पालना करता है और प्रजा राजा का पिता तुल्य सम्मान करते हैं।

सतयुग की दैवी राजाई की स्थापना वर्तमान के भारत में होती है और उसका विस्तार त्रेता के अन्त तक सुदूर पश्चिम, उत्तर, पूर्व तक हो जाता है। इसलिए मिस्त्र, यूनान, रूस, इण्डोनेशिया आदि में आज भी भारत की दैवी सभ्यता के प्रतीक देवी-देवताओं के मन्दिर आदि मिलते हैं।

''स्कूल में सब पास थोड़ेही होते हैं, पास भी सब नम्बरवार होते हैं। यह भी पढ़ाई है। इससे राजा भी बनने हैं तो प्रजा भी बनना है। सबका ताला खुल जाये तो प्रजा कहाँ से आयेगी। यह तो कायदा ही नहीं है। तुम बच्चों को पुरुषार्थ करना है, ऊंच पद पाने का। पुरुषार्थ से हर एक का पता पड़ जाता है कि यह क्या पद पाने वाले हैं।''

सा.बाबा 19.07.10 रिवा.

सतयुग-त्रेता की राजाई की विशेषतायें

सतयुग-त्रेता की राजाई और राजाई का ताज, तिलक और तख्त

सतयुग-त्रेता में सबको दो ताज होते हैं, एक लाइट का और दूसरा रतनजड़ित ताज अर्थात् एक शक्ति और सम्पन्नता का प्रतीक और दूसरा पवित्रता और दिव्य गुणों एवं

शक्तियों की धारणा का प्रतीक अर्थात् धर्म-सत्ता का प्रतीक। ये ताज राजा-प्रजा दोनों को होते हैं, परन्तु दोनों में अन्तर अवश्य होता है।

एक धर्म, एक राज्य होता है अर्थात् सबमें एकाता होती है। धर्म-सत्ता और राज-सत्ता एक के ही हाथों में होती है।

श्रृद्धा और भावना के आधार पर चलती है। राजा-प्रजा दोनों में पवित्रता का बल होता है, इसलिए दोनों सुख-शान्ति-सम्पन्न होते हैं, इच्छामात्रम् अविद्या होती है।

स्त्री-पुरुष दोनों को समान अधिकार होते हैं, इसलिए राजा-रानी दोनों साथ-साथ राजसिंहासन पर बैठते हैं।

राजा की सतोप्रधान बुद्धि होती है और वह राजाई परमात्मा की श्रीमत पर स्थापन होती है, इसलिए मन्त्री आदि की राय लेने की आवश्यकता नहीं होती है।

पवित्रता का बल होता है, इसलिए जन्म भी योगबल से होता है, विकार से नहीं, इसलिए वह दुनिया स्वर्ग कहलाती है।

सतयुग-त्रेता में राजा-प्रजा में पवित्रता का बल भी होता है, तो शारीरिक बल भी होता है और सभी धन-धान्य से भी सम्पन्न होने से दोनों को दो ताज होते हैं। भले ही राजा और प्रजा के ताज में अन्तर अवश्य होता है। अभी कलियुग के अन्त में भी राजस्थान में कई राजाइयों में राजा और प्रजा दोनों जो पगड़ी बांधते थे, उसमें कुछ समानता होती थी, जिसके आधार पर उनकी पहचान होती थी कि ये किस क्षेत्र का व्यक्ति है अर्थात् किस राजाई से सम्बन्धित है।

सतयुग-त्रेता की राजाई में कब युद्धादि नहीं होता है क्योंकि वहाँ सभी राजा-प्रजा सम्पन्न और सन्तुष्ट होते हैं। राजा-प्रजा का पिता-पुत्र के समान परस्पर प्रेम होता है, एक-दूसरे के प्रति श्रृद्धा-भावना होती है। सबके परस्पर मधुर सम्बन्ध होते हैं।

सतयुग-त्रेता की राजाई की स्थापना ज्ञान-योग की पढ़ाई के आधार पर होती है परन्तु सतयुग की राजाई में ज्ञान स्पष्ट नहीं होता है।

''छोटे बच्चे को माँ-बाप के सिवाए दूसरा कोई उठाते हैं तो उनके पास जाते नहीं हैं। तुम भी बेहद के बाप के बने हो तो और कोई को देखना भी पसन्द नहीं आयेगा। ... जानते हो वह हमको डबल सिरताज राजाओं का राजा बनाते हैं। लाइट का ताज है मन्मनाभव से और रतन जड़ित ताज है मध्याजीभव से मिलता है।''

सा.बाबा 11.08.10 रिवा.

''अभी तुम डबल सिरताज राजायें बनते हो। डबल ताज के लिए पवित्रता जरूर चाहिए। इस विकारी दुनिया को छोड़ना है। ... यहाँ विकारी कोई आकर बैठ न सके। अगर बिगर बताये बैठ जाते हैं तो अपना ही नुकसान करते हैं। ... चालाकी यहाँ चल न सके। बाप भल देखे, न देखे, खुद ही पापात्मा बन पड़ते हैं।''
सा.बाबा 26.06.10 रिवा.

''तुम देवी-देवता थे, फिर पुनर्जन्म लेते-लेते वेश्यालय में आकर पड़े हैं, अभी बाप फिर से तुमको शिवालय में ले जाते हैं। ... मैं परम आत्मा ज्ञान का सागर हूँ। पढ़ाई सोर्स आफ इनकम होती है। ... तुम इस पढ़ाई से विश्व का मालिक बनते हो तो तुमको इस पढ़ाई का कितना नशा होना चाहिए। तुम्हारी बातचीत में कितनी रॉयलिटी होनी चाहिए।''
सा.बाबा 26.06.10 रिवा.

''सेकण्ड में सारे ड्रामा का ज्ञान बुद्धि में आ जाता है। मूलवतन, सूक्ष्मवतन, स्थूल वतन, 84 का चक्र बस। यह सारा नाटक भारत पर ही बना हुआ है।... भारत अभी रंक भिखारी है, प्रजा का प्रजा पर राज्य है। सतयुग में इसी भारत में डबल सिरताज महाराजा-महारानी का राज्य था। (Q. सेकण्ड में सारा ड्रामा कैसे बुद्धि में आ जायेगा? संकल्प करते ही झाड़, त्रिमूर्ति, चक्र बुद्धि के सामने आ जाता है, जिससे सेकण्ड में सारा ज्ञान बुद्धि में इमर्ज हो जाता है।)''
सा.बाबा 17.06.10 रिवा.

''बाप कहते हैं - मैं तुमको अपने से भी ऊंच डबल सिरताज बनाता हूँ। लाइट का ताज मिलता है याद से और 84 के चक्र को जानने से तुम चक्रवर्ती राजा बनते हो, तुमको रतनजड़ित ताज मिलता है। ... अभी तुम पराये राज्य में हो, तुम गुप्त में अपनी राजाई स्थापन कर रहे हो। बाबा भी गुप्त आया हुआ है।''
सा.बाबा 14.06.10 रिवा.

''यह पढ़ाई पढ़ना गोया अपने को आपही राजतिलक देना। तुम यहाँ आये ही हो पढ़ने के लिए। ... तुम बच्चों को बाप का सपूत बच्चा बनकर दिखाना है। बाबा का नाम बाला करना है। तुमको बाप का मददगार बनना है। बाप के मददगार सो अपने मददगार बन भारत पर अपना राज्य करेंगे।''
सा.बाबा 05.05.10 रिवा.

''यह सब मकान आदि बनाने का हुनर, संस्कार सब साथ चलते हैं। यह साइन्स के संस्कार भी साथ चलेंगे। ... सतयुग में राजा-रानी भी होंगे तो मकान आदि बनाने वाले भी होंगे।''
सा.बाबा 12.04.10 रिवा.

''मैं इस तन में प्रवेश करता हूँ, यह मेरा मुकरर तन है। यह सब ड्रामा में नूँध है। अभी कोई मर जाते हैं, यह भी ड्रामा में नूँध है। तुमको ड्रामा की समझानी कितनी मिलती है। परन्तु सब

समझेंगे नम्बरवार। ... तुम जानते हो - हम डबल सिरताज थे, फिर सिंगल ताज वाले बनें, अभी फिर नो ताज बनें हैं। जैसा कर्म, वैसा फल कहा जाता है। सतयुग में ऐसे नहीं कहेंगे।''

सा.बाबा 8.10.10 रिवा.

सतयुग-त्रेता की राजाई और उत्तराधिकारी

सतयुग त्रेता में हर राजा को एक पुत्र और एक पुत्री होती ही है, इसलिए किसी राजा को अपने उत्तराधिकारी की चिन्ता नहीं होती है और न ही उत्तराधिकार के लिए परस्पर किसी प्रकार की मारामारी होती है और न ही राजा को अपना उत्तराधिकारी चुनने अर्थात् युवराज (Crown Prince) नियुक्त करने की आवश्यकता होती है। हो सकता है कि सतोप्रधानता की कलायें कम होने से त्रेता में और त्रेता के अन्त में किसी राजा को दो पुत्र भी होते हों परन्तु उनमें उत्तराधिकारी के लिए मारामारी नहीं होती है। वहाँ स्थान आदि की कमी नहीं होती है, इसलिए दोनों मिलकर दूसरी राजाई स्थापन कर लेते हैं और दोनों ही परस्पर प्रेम से रहते हैं। शायद इसी आधार पर सतयुग में जो 8 राजाइयाँ चलती हैं, वे त्रेता में 12 हो जाती हैं।

''मुक्तिधाम को शान्तिधाम कहा जाता है, जीवनमुक्तिधाम को सुखधाम कहा जाता है। यह है दुखधाम, यहाँ दुख का बन्धन है। ... अभी हम श्रीमत पर अपना राज्य स्थापन कर रहे हैं। जगत अम्बा नम्बरवन जाती है। हमको उनको फॉलो करना है। अभी जो बच्चे मात-पिता की दिल पर चढ़ते हैं, वे ही भविष्य में तख्तनशीन बनेंगे।''

सा.बाबा 22.05.10 रिवा.

सतयुग-त्रेता का राजतन्त्र और द्वापर-कलियुग का राजतन्त्र

द्वापर-कलियुग के राजतन्त्र का विधि-विधान, नियम-सिद्धान्त

सतयुग-त्रेता में राजा-प्रजा सबको दो ताज होते हैं, परन्तु द्वापर से पवित्रता का ताज गिर जाता है और राजा को केवल शक्ति का प्रतीक रतनजड़ित ताज रह जाता है क्योंकि राज-सत्ता और धर्म-सत्ता विभाजित हो जाती है, इसलिए राज-सत्ता वालों को रतनजड़ित ताज और धर्म-सत्ता वालों को पवित्रता का ताज अर्थात् प्रकाशमय ताज मिलता है। इसलिए बाबा ने कई बार कहा कि पवित्रता का ताज धर्म-पिताओं को दे सकते हैं।

आत्मिक बल कम होने से देहाभिमान आ जाता है, जिसके कारण विकारों की प्रवेशता हो जाती है, आत्मा में योगबल से सन्तान को जन्म देने की शक्ति खत्म हो जाती है, इसलिए जन्म भी

भोगबल से अर्थात् काम-विकार से होता है।

विकारों के कारण बुद्धि मलीन होने के कारण राजाओं में यथार्थ निर्णय करने की शक्ति कम होने के कारण यथार्थ निर्णय लेने के लिए मन्त्री आदि रखने होते हैं, जिनसे राय-सलाह करके निर्णय करना होता है।

काम-क्रोध-लोभ आदि की प्रवेशता के कारण शक्ति-प्रदर्शन और राजाई के लिए युद्धादि होते हैं। समाज पुरुष-प्रधान हो जाता है, इसलिए स्त्रियों के अधिकार कम हो जाते हैं, राजायें सिंहासन पर बैठते हैं परन्तु रानियाँ साथ में नहीं बैठती हैं। वे राजमहलों में ही रहती हैं।

धर्म-सत्ता और राज-सत्ता अलग-अलग हाथों में होती है। राजाओं के पास धार्मिक कार्यों को सम्पन्न करने के लिए धर्म-गुरु रखने की प्रथा आरम्भ हो जाती है।

अनेक धर्म और अनेक राज्य होते हैं और परस्पर धर्म-भेद, भाषा-भेद, मत-भेद होता है, जिसके कारण भी विश्व में अनेक प्रकार के युद्ध हुये हैं और आज भी होते रहते हैं।

द्वापर-कलियुग की राजाई की स्थापना या वर्से में प्राप्ति दान-पुण्य के आधार पर होती है और विस्तार शक्ति एवं युद्धादि के द्वारा होता है, इसलिए राजा और प्रजा दोनों ही दुखी रहते हैं। भले राजाओं को अल्पकाल के लिए राजाई का नशा और खुशी रहती है।

सतयुग-त्रेता की राजाई परमात्मा के द्वारा पढ़ाई और धर्म के आधार पर होती है और विस्तार भी प्रेम और कल्याण की भावना से होता है, इसलिए वहाँ सब सुख-शान्ति में रहते हैं।

सतयुग-त्रेता की राजाई में दैहिक, दैविक, भौतिक सब प्रकार के सुख होते हैं, प्रकृति दासी होती है। द्वापर-कलियुग की राजाई में ये तीनों प्रकार के दुख होते हैं। द्वापर-कलियुग की राजाई में किसी को भी दैहिक, दैविक, भौतिक सुख एक साथ प्राप्त नहीं होते हैं और यदि किसी को होता भी है तो अल्पकाल के लिए।

सतयुग-त्रेता के राजाओं की भक्ति मार्ग में पूजा होती है, परन्तु द्वापर कलियुग के राजाओं की पूजा नहीं होती है, अल्प काल के लिए गायन अवश्य होता है। द्वापर-कलियुग के राजायें भी उनकी पूजा करते हैं। इसलिए बाबा कहते हैं - मैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूँ, जिसका गीता में भी वर्णन है। इसलिए सतयुग-त्रेता के राजायें पूज्य और द्वापर-कलियुग के राजायें पुजारी कहे जाते हैं।

''दूसरों को समझाने की भी बच्चों में नम्बरवार ताक़त रहती है, नम्बरवार ही याद में रहते हैं। राजधानी कैसे !स्थापन होती है, यह कोई की बुद्धि में नहीं होगा। तुम सेना हो ना। तुम जानते हो

याद के बल से हम पवित्र बन राजा-रानी बन रहे हैं। ... बड़ा इम्तहान पास करने वाले मर्तबा भी बड़ा पाते हैं।''

सा.बाबा 6.09.10 रिवा.

''माया बड़ी जबरदस्त है। देहाभिमान में आने से ज्ञान का तीसरा नेत्र बन्द हो जाता है। बाप खुद कहते हैं बड़ी मेहनत है। ब्रह्मा के तन में आकर मैं कितनी मेहनत करता हूँ। ... राजाई तो स्थापन हो ही जायेगी। कहते हैं ना - सच की बेड़ी हिलती है परन्तु डूबती नहीं है। कितने विघ्न पड़ते हैं परन्तु विजय निश्चित है।''

सा.बाबा 6.09.10 रिवा.

''हम पढ़ते ही हैं वहाँ के लिए। इस पढ़ाई से हम डबल सिरताज राजा बनते हैं। यहाँ जो राजायें बनते हैं, वे धन दान करने से बनते हैं।... आजकल ठगी बहुत है। दान भी पात्र को देना चाहिए। वह अकल भी चाहिए।... गरीबों को दान करने वाले अच्छा पद पाते हैं।''

सा.बाबा 7.09.10 रिवा.

''बाप दाता है, वह सबकुछ देते हैं। बच्चों को विश्व का मालिक बनाते हैं। वहाँ कोई अप्राप्त वस्तु होती नहीं है, जिसके लिए पाप करना पड़े।... आधा कल्प दैवी राज्य और फिर आधा कल्प आसुरी राज्य चलता है। असुर अर्थात् जिसमें देहाभिमान है, 5 विकार हैं।... बाप पहली-पहली मत देते हैं - देही-अभिमानी बनो।''

सा.बाबा 2.08.10 रिवा.

''तुमको इस आसुरी दुनिया में अपनी दैवी राजधानी स्थापन करनी है, इसलिए बहुत सम्भाल रखनी होती है। ... तुम बाप की मत पर दैवी राजधानी स्थापन करते हो। इसमें हिंसा की कोई बात नहीं है। तुम न काम कटारी की हिंसा करते हो और न स्थूल हिंसा करते हो। ... भगवान विश्व का मालिक बनने के लिए पढ़ाते हैं। ऐसी पढ़ाई को छोड़ दे, तो उसको महामूर्ख ही कहा जायेगा।''

सा.बाबा 4.08.10 रिवा.

''ऊंच पद प्राप्त करने वाले बहुत थोड़े होते हैं, प्रजा तो ढेर बनती है। राजायें, साहूकार थोड़े होते हैं, बाकी गरीब बहुत होते हैं। यहाँ भी ऐसे है तो दैवी दुनिया में भी ऐसे ही होंगे। राजाई स्थापन हो रही है, उसमें सब नम्बरवार चाहिए।''

सा.बाबा 13.05.10 रिवा.

सतयुग की राजाई और स्थापना का विधि-विधान / सतयुगी राजाई की स्थापना और एडवान्स पार्टी / दैवी राजतन्त्र और एडवान्स पार्टी, एडवान्स स्टेज तथा एडवान्स जन्म

Q. एडवान्स पार्टी से राजाई की स्थापना होगी या श्रीकृष्ण से राजाई की स्थापना होगी ? इसके लिए विचारणीय है -

बाबा ने कहा है कि जब श्रीकृष्ण गद्दी पर बैठता है अर्थात् लक्ष्मी-नारायण का राज्य आरम्भ होता है अर्थात् स्वर्ग की आदि होती है अर्थात् 01-01-01 सम्वत् आरम्भ होता है, तब कोई पुरानी दुनिया का नहीं रहेगा अर्थात् विकारी बीज से जन्म लेने वाले कोई नहीं रहेंगे।

बाबा ने कहा है कि श्रीकृष्ण को उनके माँ-बाप उनके पैर धोकर उनको राज-सिंहासन पर बिठायेंगे।

दोंनों में क्या यथार्थ है अथवा दोनों बातों को कहने में बाबा का क्या भाव है और दोनों कैसे सम्भव है।

इसलिए विचारणीय है कि दोनों में क्या और कैसे सम्भव होगा अर्थात् सतयुग की राजाई की स्थापना कब से और किसके द्वारा और कैसे होगी ? यह भी सम्भव है कि श्रीकृष्ण के माता-पिता से सतयुग की राजाई की स्थापना हो और वे श्रीकृष्ण को सिहांसन पर बिठाकर देह का त्याग कर दें क्योंकि जैसे योगबल से जन्म देने की सतयुग की प्रथा है, वैसे ही सहज देह का त्याग करना भी तो सतयुग की एक प्रथा है।

यह भी सम्भव है कि सतयुग की राजाई श्रीकृष्ण के द्वारा ही स्थापन हो। जैसे प्रचलित कहानियों में राजा विक्रमादित्य के सिंहासन के विषय में एक कहानी प्रचलित है कि किसी टीले पर वह सिंहासन दबा हुआ था और कुछ बच्चे खेल खेल रहे थे, जिनमें जो राजा बनता था, वह उस टीले पर जाता था तो उसमें राजाई संस्कार जागृत हो जाते थे, उसका निर्णय यथार्थ होता था, जब वह नीचे आ जाता था तो साधारण बच्चों के समान बन जाता था। ऐसे ही विनाश के बाद जो योगबल वाली नई पीढ़ी होगी, वह खेल-खेल में ही श्रीकृष्ण को अपना राजा बना लेगी और उसी प्रकार समानान्तर चलने वाली राजाइयों के 7 राजायें भी बन जायेंगे या समानान्तर चलने वाली राजाइयों के राजाओं को श्रीकृष्ण जो नारायण के रूप में चक्रवर्ती गद्दी पर बैठेंगे, वे उनको नियुक्त करेंगे।

बाबा ने मुरली में यह भी कहा है कि श्रीकृष्ण का बाप ब्राह्मण होगा अर्थात् एडवान्स

पार्टी में गयी हुयी कोई ब्राह्मण आत्मा होगी। जब श्रीकृष्ण का बाप ब्राह्मण होगा तो जरूर उनके साथ एडवान्स जन्म लेने वाले अन्य बच्चों के माँ-बाप भी ब्राह्मण ही होंगे। तो एडवान्स जन्म लेने वालों को जन्म देने वाले इतने इतने ब्राह्मण एडवान्स पार्टी के होंगे तो इतनी आत्मायें एडवान्स स्टेज से जायेंगी, जो सतयुगी राजाई में आने वाली प्रथम जनसंख्या को योगबल से जन्म देंगे।

कई ब्राह्मणों की मान्यता है कि सतयुग की राजाई की स्थापना वर्तमान में जो पूर्व के राजघराने हैं, उनसे होगी। परन्तु जब राजघरानों की जीवन प्रणाली को देखते हैं तो ऐसा निश्चय बुद्धि में नहीं बैठता कि एडवान्स जन्म लेने वाली सतयुग आत्मायें उनके यहाँ जाकर जन्म लेंगी। उनसे तो भक्त आत्मायें जो चरित्रवान हैं, नियम-संयम का पालन करने वाली हैं, उनके पास जन्म लेना अधिक यथार्थ लगता है। जैसे दादी जी के एडवान्स पार्टी के जन्म के विषय में बताया और समय समय पर बाबा ने पहले भी कहा है कि यहाँ से जाने वाली आत्मायें अच्छे साहूकार, नियम-संयम वाले परिवारों में ही जन्म लेंगी।

वतन में बाबा के पास महारथी दादियों का संगठन देखा।... बाबा ने कहा आप सबके लिए ही इन दादियों को बुलाया है। एडवान्स पार्टी के निमित्त बनाया है क्योंकि इतनी बड़ी राजधानी स्थापन होनी है तो उसमें पॉवरफुल आत्मायें चाहिए।

सन्देश 29.7.10 मोहिनी बहन द्वारा

''बाप ऐसे नहीं कहते कि चन्दा-चीरा लेकर फण्ड्स इकट्ठा करो। नहीं, यहाँ तो जो बीज बोयेंगे, उसका फल 21 जन्म पायेंगे। मनुष्य ईश्वर अर्थ दान करते हैं। वे कहेंगे ईश्वर अर्पणम् या कहेंगे श्रीकृष्ण अर्पणम् क्योंकि गीता का भगवान कृष्ण को समझते हैं। ... जानते हैं फल देने वाला ईश्वर ही है।''

सा.बाबा 5.08.10 रिवा.

''अभी यह तुम्हारी राजधानी स्थापन हो रही है। इसमें सब प्रकार के चाहिए। ... पुरुषार्थ कर विकर्माजीत बनना है। याद की यात्रा से ही विकर्माजीत बनना है। तुम ही मैसेन्जर्स हो, जो सबको बाप का मैसेज देते हो कि मन्मनाभव। अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो तो पवित्र बन, पवित्र दुनिया के मालिक बनेंगे।''

सा.बाबा 5.08.10 रिवा.

''अभी कलियुग के अन्त में है प्रजा का प्रजा पर राज्य। अभी राजाई तो है नहीं। ... इन लक्ष्मी-नारायण के लिए कहेंगे कि ये सतयुग के मालिक थे। इन्होंने यह राज्य कैसे लिया, किसने इनको राजाई दी ? अभी तुम जानते हो कि राजाई की स्थापना कैसे होती है। ... अभी

तुम पढ़कर भविष्य महाराजा-महारानी बनते हो। ड्रामा प्लैन अनुसार नई दुनिया की स्थापना हो रही है।''

सा.बाबा 12.04.10 रिवा.

मम्मा ने कहा - गुप्त एडवान्स पार्टी में हम लोगों का काम है आप लोगों को पालनहार पार्टी की तैयारी करना। तो हम जहाँ आप लोगों की पालना होगी, उन आत्माओं को तैयार कर रहे हैं। आप लोग तो सतयुग के राजा-रानी तैयार कर रहे हो लेकिन राजा-रानी आयेंगे कहाँ, पालना कहाँ लेंगे ?... तो हम लोग इसी काम में बिजी हैं। ... हम लोग भी तपस्या करते हैं।

अ.बापदादा का सन्देश 23.06.92 गुल्जार दादी

इन सब रहस्यों को विचार करने पर स्पष्ट होता है कि एडवान्स जन्म लेने वाली आत्माओं अर्थात् सतयुग की प्रथम राजाई की जनसंख्या को जन्म देने वाले ब्राह्मण आत्मायें अर्थात् जो ब्राह्मण बनकर पुरुषार्थ करने के बाद एडवान्स पार्टी में गई हैं, वे नहीं होंगे, बल्कि उनके सम्बन्ध-सम्पर्क से या सम्बन्ध-सम्पर्क में आने वाली सहयोगी भक्त और हठयोग की साधना करने वाली आत्मायें होंगी। बाबा ने भी कहा है कि सहयोगी भी योगी है क्योंकि परमात्मा के कार्य में सहयोगी है, इसलिए वे भी परमात्मा के साथ है, परमात्मा से प्रीतबुद्धि है।

जो ज्ञानी-योगी आत्मायें अर्थात् ब्राह्मण बनने वाली आत्मायें हैं, वे सतयुग की राजाई और प्रजा में आयेंगी और ऐसी सहयोगी आत्मायें बाद में त्रेता के अन्त तक और बाद में द्वापर-कलियुग में आती रहेंगी। बाबा ने यह भी कहा है कि त्रेता के बाद में भी आत्मायें आकर देवी-देवता के घराने की आत्माओं के सम्बन्ध-सम्पर्क में आती हैं परन्तु वे सतयुग-त्रेता में देवी-देवता नहीं बनते हैं। ऐसी आत्मायें अपने को हिन्दू कहलाते हैं और देवी-देवता के घराने की आत्माओं के ही सम्बन्ध-सम्पर्क में द्वापर-कलियुग में रहते हैं। ऐसी आत्मायें कल्पान्त में नई दुनिया सतयुग की राजाई की स्थापना में सहयोगी बनते हैं।

''अभी तुम बच्चे जानते हो कि यह राजधानी स्थापन हो रही है, परन्तु गुप्त।... गायन है - किसकी दबी रही धूल में... विनाश होना ही है। तुम बच्चे जानते हो, यह सब होना है। इसलिए तुम अपना बैग-बैगेज भविष्य के लिए तैयार कर रहे हो। और कोई को थोड़ेही मालूम पड़ता है कि तुम क्या कर रहे हो। तुमको ही बाप से 21 जन्मों के लिए वर्सा मिलता है।''

सा.बाबा 21.09.10 रिवा.

''तुम शक्ति सेना हो। माया पर जीत पाने से जगतजीत बनते हो। सभी थोड़ेही बनेंगे। जो बच्चे पुरुषार्थ करेंगे, वे ऊंच पद पायेंगे। तुम भारत को ही पवित्र बनाकर, फिर भारत पर तुम ही राज्य करते हो। बाहुबल की लड़ाई से कब विश्व की बादशाही मिल न सके।''

सा.बाबा 08.05.10 रिवा.

''बच्चे जानते हैं - हम स्टूडेण्ट हैं, परन्तु बहुत हैं जो अपने को स्टूडेण्ट समझते ही नहीं हैं क्योंकि पढ़ते नहीं हैं। ... ऐसे भी हैं, जिनकी बुद्धि में भी नहीं बैठता है कि यह राजधानी स्थापन हो रही है, उसमें सभी प्रकार के होते हैं। ... इसमें भी सब तो आकर नहीं पढ़ेंगे। कल्प पहले जिन्होंने पढ़ा है, वे ही आते हैं।''

सा.बाबा 6.5.10 रिवा.

जब श्रीकृष्ण के मात-पिता श्रीकृष्ण को गद्दी पर बिठाने के बाद परमधाम जायेंगे तो वे तुरन्त वापस आकर जन्म लेंगे, तो वे 3-4 राजाईयों तक तो राजा बन नहीं सकते क्योंकि वे 150-175 वर्ष के बाद ही देह का त्याग करके राजा के घर में जन्म ले सकते हैं। तो कौन उनके मात-पिता हो सकते हैं और कौन-कौन पहली राजाई के समय आ सकते हैं और कौन-कौन श्रीकृष्ण के समकक्ष राजाईयों में राजा-रानी बन सकते हैं - यह विचारणीय विषय है।

यदि श्रीकृष्ण राजकुमार होगा अर्थात् किसी राजा के घर जन्म लेगा तो पहले उनके बाप की राजाई स्थापन हो, फिर श्रीकृष्ण उनके घर में जन्म ले, तो उसमें कितना समय लगेगा, यह विचारणीय है।

''अभी तुमको भासना आती है कि जो बाबा ज्ञान का सागर है, सभी आत्माओं का बाप है, वह हमको पढ़ा रहे हैं। ... तुम हो कितने साधारण और बनते क्या हो, विश्व के मालिक। तुम्हारा कितना श्रृंगार होगा, गोल्डन स्पून इन माउथ होगा। ... अभी जो अच्छे-अच्छे बच्चे शरीर छोड़ते हैं, तो जरूर बहुत अच्छे घर में जन्म लेते हैं।''

सा.बाबा 9.10.10 रिवा.

''बाप को भी नई दुनिया बनाने में मेहनत लगती है। ऐसे नहीं कि झट से नई दुनिया बन जाती है। तुमको देवता बनने में टाइम लगता है। अभी जो अच्छे कर्म करते हैं, वे अच्छे कुल में जन्म लेते हैं। अभी तुम्हारी आत्मा अच्छे कर्म सीख रही है। आत्मा ही अच्छे या बुरे संस्कार ले जाती है। अभी तुम गुल-गुल बन अच्छे घर में जन्म लेते रहेंगे। यहाँ जो अच्छा पुरुषार्थ करते हैं, तो जरूर अच्छे कुल में जन्म लेते होंगे।''

सा.बाबा 25.10.10 रिवा.

''यहाँ जो अच्छा पुरुषार्थ करते हैं और शरीर छोड़ते हैं तो जरूर अच्छे कुल में जन्म लेते होंगे। नम्बरवार तो हैं ना। जैसे-जैसे कर्म करते हैं, ऐसा जन्म लेते हैं। जब बुरे कर्म करने वाले बिल्कुल खत्म हो जाते हैं, फिर स्वर्ग स्थापन हो जाता है। तमोप्रधान जो भी हैं, वे सब खत्म हो जाते हैं। फिर नये देवताओं का आना शुरू होता है। जब भ्रष्टाचारी सब खत्म हो जाते हैं, तब कृष्ण का जन्म होता है। तब तक बदली-सदली होती रहती है।''

सा.बाबा 25.10.10 रिवा.

''पूरी कर्मातीत अवस्था वाले राधे-कृष्ण ही हैं। वे ही पहले सद्गति में आते हैं। पाप आत्मायें सब खत्म हो जाती हैं, तब उनका जन्म होता है, फिर कहेंगे पावन दुनिया, इसलिए कृष्ण का नाम बाला है। उनके माँ-बाप का इतना नहीं है। आगे चलकर तुमको बहुत साक्षात्कार होंगे। अभी टाइम पड़ा है।''

सा.बाबा 25.10.10 रिवा.

''तुम किसको भी यह समझा सकते हो कि हम यह बनने के लिए पढ़ रहे हैं। अभी विश्व में इनका राज्य स्थापन हो रहा है। अभी तुमको दैवी सम्प्रदाय नहीं कहेंगे। तुम हो ब्राह्मण सम्प्रदाय। देवता बनने वाले हो। दैवी सम्प्रदाय बन जायेंगे, फिर तुम्हारी आत्मा और शरीर दोनों स्वच्छ होंगे। ... याद से विकर्माजीत बनना है। यह सारी मेहनत की बात है।''

सा.बाबा 25.10.10 रिवा.

''याद में ही मेहनत है। याद से आत्मा पवित्र बनेगी, अविनाशी ज्ञान धन भी जमा होगा। फिर अगर अपवित्र बन जाते हैं तो सारा ज्ञान बह जाता है। पवित्रता ही मुख्य है। ... तुम्हारे में कितनी ताक़त रहती है। तुमको घर बैठे सुख मिल जाता है। तुम सर्वशक्तिवान बाप से इतनी ताक़त लेते हो, जो विश्व का मालिक बन जाते हो। सन्यासियों में भी पहले ताक़त थी, जंगलों में रहते थे।''

सा.बाबा 25.10.10 रिवा.

''इस चक्र को जानने से तुम चक्रवर्ती राजा, सुखधाम के मालिक बन जायेंगे। ... अच्छे बड़े-बड़े सेन्टर्स खोलो तो बड़े-बड़े आदमी आयेंगे। कल्प पहले भी हुण्डी भरी थी। अभी भी सावलशाह बाबा हुण्डी जरूर भरेंगे। दोनों बाप बचड़ेवाल हैं। ... कोई गरीब, कोई साहूकार। कल्प पहले भी इनके द्वारा राजाई स्थापन हुई थी।''

सा.बाबा 9.10.10 रिवा.

''सूक्ष्म लॉज़ के साथ स्थूल लॉज़ वा नियम भी हैं। जैसी-जैसी गलती, उसी प्रमाण ऐसी गलती करने वाले को सज़ा। ... जो स्वयं को ही लॉ के प्रमाण नहीं चला सकता, वह लॉफुल राज्य कैसे चला सकेगा ? इसलिए अब अपने को लॉ-मेकर समझकर हर कदम लॉ-फुल उठाओ अर्थात् श्रीमत प्रमाण उठाओ। मनमत मिक्स नहीं करना।''

अ.बापदादा 3.05.72

सतयुगी राजाई और संगमयुगी राजाई एवं दोनों में सम्बन्ध

परमात्मा राजवंश की स्थापना करता है और जो आत्मायें उनके सहयोगी बनते हैं, उनको उस राजाई का अधिकार वर्से के रूप में देता है। तो प्रश्न उठता है - वह वर्सा क्या है और क्या उस वर्से का सुख भविष्य की राजाई में ही प्राप्त होगा। वास्तविकता को विचार करें तो परमात्मा अभी संगमयुग पर आया है तो उनका वर्सा भी अभी ही मिलना चाहिए। यदि सतयुग की राजाई के सुख और संगमयुग के स्वराज्य अधिकारीपन की राजाई के सुख की तुलना करें तो संगमयुग की राजाई का सुख, सतयुग की राजाई के पदमगुणा श्रेष्ठ है। जब हम दोनों प्रकार की राजाइयों के सुख की भेंट करते हैं, तब ही हमको संगमयुगी राजाई के सुख की अनुभूति होती है।

अब प्रश्न उठता है कि संगमयुग की राजाई का वर्सा क्या है और उसकी अनुभूति हम कैसे करें या कर सकते हैं। बाबा ने कहा संगमयुग की राजाई का ताज, तिलक और तख्त सतयुग की राजाई से कई गुणा श्रेष्ठ है। बाबा ने अभी हमको जो ज्ञान दिया है, उसकी यथार्थ रीति धारणा करने वाला स्वराज्य अधिकारी ही संगमयुगी राजाई का सुख अनुभव कर सकेगा।

सतयुग की राजाई में भौतिक सुख तो अथाह होगा लेकिन जो खुशी और नशा संगमयुग की राजाई में ही अनुभव होता है, वह उस राजाई में नहीं होगा, परन्तु उसके न होते भी वे वहाँ सन्तुष्ट और खुश होंगे। वास्तव में सतयुग में खुशी-नाखुशी की बात ही नहीं रहती है क्योंकि उनको वहाँ ज्ञान ही नहीं होता है कि नाखुशी भी कोई होती है और हमको भी ऐसे जीवन में जाना होगा। ये ज्ञान अभी संगमयुगी राजाई में ही है और उसका ज्ञान होते भी जो नशा और खुशी संगमयुग की राजाई में है, वह सतयुग की राजाई में न होता है और न हो सकता है। यथार्थ रीति सुख को अनुभव करने के लिए सुख और दुख दोनों का ज्ञान और अनुभव अति आवश्यक है, जो सतयुग की राजाई में होता नहीं है।

हम भगवान के दिलतख्त के अधिकारी बच्चे हैं। यह परमात्म दिलतख्त का अनुभव संगमयुग पर ब्राह्मण आत्माओं के ही भाग्य में है। इसका जितना निश्चय होगा, उतना ही नशा होगा और वह नशा हमारे चेहरे और चलन से दिखाई देगा। यह भगवान का दिलतख्त ही भविष्य के राज-तख्त का और राज परिवार में आने का आधार है।

संगमयुग पर जितना अधिक समय परमात्म दिलतख्तनशीन बनकर रहे, उतना ही अधिक समय राज परिवार में आयेंगे। जो परमात्म दिलतख्तनशीन हैं, वे देहभान और

देहाभिमान की मिट्टी में बुद्धि रूपी पाँव नहीं रख सकते। वे सदा ही ईश्वरीय प्राप्तियों के, ज्ञान-गुणों-शक्तियों के झूले में झूलते रहेंगे। ये संगमयुगी तख्त और संगमयुगी ज्ञान-गुण-शक्तियों के झूले, स्वर्ग के रतनजड़ित तख्त और रतनजड़ित झूलों से पद्मगुणा श्रेष्ठ हैं। परन्तु विधि के विधान को टाला नहीं जा सकता है, इसलिए इस संगमयुगी राजाई से सतयुगी राजाई में और फिर कलियुगी राजाई में जाना ही होगा। परन्तु जो इस समय के ताज, तख्त, झूलों का महत्व समझ लेता है, वही इनके सुख का अनुभव कर सकता है।

''स्टूडेण्ट्स जब पढ़ते हैं तो खुशी से पढ़ते हैं और टीचर भी बहुत खुशी और रुचि से पढ़ाते हैं। बेहद का बाप, जो टीचर भी है, हमको बहुत रुचि से पढ़ाते हैं। ... विचार करो - यह बाप तुमको कितना रुचि से पढ़ाते होंगे, तो बच्चों को भी कितना रुचि से पढ़ना चाहिए। बेहद का बाप एक ही बार आकर डायरेक्ट पढ़ाते हैं।''

सा.बाबा 20.10.10 रिवा.

''आज बापदादा चारो ओर के परमात्म तख्तनशीन, भृकुटी तख्तनशीन और विश्व के तख्तनशीन बच्चों को देख हर्षित हो रहे हैं। यह परमात्म दिलतख्त सिर्फ आप ब्राह्मणों के लिए ही है। भृकुटी का तख्त तो सबके पास है लेकिन परमात्म तख्त सिर्फ ब्राह्मण आत्माओं के ही भाग्य में है। यह परमात्म तख्त ही विश्व का तख्त दिलाता है। तो तीनों तख्त के अधिकारी आप ब्राह्मण आत्मायें ही हो।''

अ.बापदादा 24.10.10

''तो इतना नशा है कि हम भगवान के दिलतख्त के अधिकारी हैं। यह नशा और खुशी सबको सदा स्मृति में रहती है कि हम कौन हैं। इसका निश्चय और नशा रहता है? ... स्वयं बाप भी ऐसे बच्चों की महिमा गाते हैं। तो नशा है कि हम कौन हैं? जितना निश्चय होगा, उतना ही नशा होगा और यह निश्चय और नशा आपके चेहरे और चलन से दिखाई दे रहा है।''

अ.बापदादा 24.10.10

''हम भगवान के दिलतख्त के अधिकारी हैं, ... जिसको निश्चय है, उसको नशा जरूर होता है। बापदादा भी अभी हर बच्चे के चेहरे और चलन से आत्माओं को यह अनुभव कराना चाहते हैं। वाणी द्वारा तो अनुभव करने लगे हैं। ... अपने आपको चेक करो कि सारे दिन में कितना समय परमात्म दिलतख्त पर रहता हूँ? क्योंकि यह दिलतख्त ही विश्व का राज्य प्राप्त कराने का आधार है।''

अ.बापदादा 24.10.10

''अभी जितना ज्यादा समय इस परमात्म दिलतख्त के अधिकारी रहते हो, उतना ही ज्यादा समय भविष्य में राज्य घराने में अधिकारी बनते हो। ... इसके आधार से तख्त पर तो

नम्बरवार ही बैठेंगे लेकिन सदा राज्य फैमिली में, राज-घराने में अधिकारी बनेंगे। ... अपना हिसाब निकालना क्योंकि इसके आधार से ही आप सदा राज घराने में आयेंगे।''

अ.बापदादा 24.10.10

''जो लाड़ले बच्चे होते हैं, उनको झूले में या गोदी में रखते हैं, मिट्टी में पाँव नहीं रखने देते हैं। तो बापदादा ने तीन तख्त के अधिकारी बच्चों को कितने भिन्न-भिन्न झूले दिये हैं। कभी शान्ति के, कभी सुख के, कभी प्रेम के झूले में झूलो। तख्त और झूले इन्हीं में पाँव रखना। ... जितना समय पाँव तख्त और झूले में रहा, उसके हिसाब से ही भविष्य रॉयल घराने में आयेंगे।''

अ.बापदादा 24.10.10

''जब से ज्ञान में आये, उस समय से चेक करो कितना समय मेरा पाँव झूलों में और तख्त पर रहा ? ... जितना समय संगमयुग पर तख्त और झूले में पाँव रहा, उसके हिसाब से ही भविष्य में राज्य तख्तनशीन बनेंगे, रॉयल घराने में आयेंगे। रॉयल प्रजा में भी नहीं, लेकिन रॉयल घराने में आयेंगे। इस हिसाब से आप अपना निकालो। ... समाप्ति तो अचानक होनी है।''

अ.बापदादा 24.10.10

''बापदादा तो हर बच्चे को दो युगों तक अर्थात् 21 जन्म ही सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी रॉयल घराने में रहने का अधिकार दे रहा है लेकिन अधिकार लेना, ये हर बच्चे के पुरुषार्थ के ऊपर है। ... ब्रह्मा बाप भी आप बच्चों को अपने साथ-साथ रॉयल घराने में देखना चाहते हैं। ... उसका आधार है संगमयुग। ... अभी ब्रह्मा बाप और ब्राह्मण साथ हैं। चाहे अव्यक्त रूप में है लेकिन साथ हैं।''

अ.बापदादा 24.10.10

सतयुग की राजाई, सृष्टि-चक्र और संगमयुग

सतयुग की राजाई और स्वदर्शन-चक्र

सतयुग की राजाई का सुख और संगमयुग के सुख में रात-दिन का अन्तर है। सतयुग की राजाई में सर्व प्रकार का भौतिक सुख तो होगा परन्तु वहाँ आनन्द अर्थात् अतीन्द्रिय सुख नहीं होगा। अतीन्द्रिय सुख या आन्नद संगमयुग की विशेष प्राप्ति है, जो सतयुग की राजाई की प्राप्ति से भी विशेष है। इसलिए सतयुग-त्रेता राजाई के सुख के दिलासे में जीने वाले वास्तव में धोखे में हैं। जो संगमयुग की प्राप्तियों को पहचान कर, उनका सुख लेता है, उसके लिए सतयुग की राजाई तो निश्चित है ही क्योंकि सतयुत्र-त्रेता की राजाई संगमयुग की प्राप्तियों की परछाई है अर्थात् संगमयुग पर किये कर्तव्यों का फल है और जो संगमयुग के सुखों की अनुभूति करेगा, वही संगमयुग के कर्तव्यों को सफलता पूर्वक कर

सकेगा।

कलियुग में विकारों के वशीभूत आत्मा में राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, इच्छा-आकांक्षा, अहंकार-हीनता आदि होती है, संगमयुग पर आत्मा ईश्वरीय ज्ञान-गुण-शक्तियों के द्वारा स्वराज्य अधिकारी होकर उन पर विजय प्राप्त करती है अर्थात् उनसे मुक्त होती है, परन्तु सतयुग में यह सब नहीं होते हैं, इसलिए वहाँ स्वराज्य अधिकारी बनने का कोई पुरुषार्थ नहीं करना होता है। सतयुग में आत्मा सहज ही स्वराज्य अधिकारी और विश्व के राज्य की अधिकारी होती है।

संगमयुग पर मान-अपमान, निन्दा-स्तुति, जय-पराजय, सुख-दुख, लाभ-हानि, यश-अपयश सब होता है परन्तु आत्मा परमात्मा से प्राप्त विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान के आधार पर साक्षी होकर दोनों को देखती है और इनसे मुक्त होकर एकरस स्थिति में रहती है, जो आत्मा की सर्वश्रेष्ठ स्थिति है और आत्मा की चढ़ती कला तथा भविष्य राजपद का आधार है। सतयुग में ये सब नहीं होता है, इसलिए पुरुषार्थ की कोई आवश्यकता नहीं होती है। सतयुग में आत्मा सहज ही संगमयुग पर मिले राजभाग का उपभोग करती है।

सतयुग में भूत-भविष्य का न ज्ञान होता है और न ही उसका चिन्तन या चिन्ता होती है। संगमयुग पर ये सब होता है परन्तु आत्मा स्वराज्य अधिकारी बनकर श्रेष्ठ चिन्तन के द्वारा उनसे मुक्त होने का पुरुषार्थ करती है और उसमें सफल होती है अर्थात् मुक्त होकर मुक्ति-जीवनमुक्ति का यथार्थ सुख अनुभव करती है, जिसको हठयोग में निर्संकल्प और निर्विकल्प समाधि कहा जाता है।

द्वापर-कलियुग की राजाई में राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, इच्छा-आकांक्षायें, अहंकार-हीनता आदि सब होता है, जिसके कारण व्यर्थ और अशुभ चिन्तन होता है और यथार्थ ज्ञान न होने के कारण ये निरन्तर बढ़ते जाते हैं।

''इस अन्तिम मरजीवा जन्म में हर कर्म की सफलता का फल अर्थात् गति-सद्गति प्राप्त होने का वरदान मिला हुआ है। ... भविष्य के इन्तजार में तो नहीं रहते हो? ... कभी मिल जायेगा, भविष्य में मिल जायेगा - यह दिलासे का सौदा नहीं है। तुरत दान महापुण्य, ऐसी प्राप्ति है।''

अ.बापदादा ... पार्टी

''अभी बाप राजाई स्थापन कर रहे हैं, सारे युनिवर्स के लिए। यह भी समझाने की बात है। दैवी राजधानी इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर बाप स्थापन कर रहे हैं। ... अभी तुम पुरुषोत्तम संगमयुग पर पुरुषोत्तम बनने का पुरुषार्थ कर रहे हो। तुम्हारा विकारी पतित मनुष्यों से कोई

कनेक्शन नहीं है। ... बच्चों को बाप की कशिश तब होगी, जब याद की यात्रा पर होंगे''

सा.बाबा 4.09.10 रिवा.

संगमयुग की राजाई है स्वराज्य अधिकारी, जिसकी फलस्वरूप ही सतयुग की राजाई की प्राप्ति होती है और उसके लिए पुरुषार्थ है देह और देह की दुनिया को भूल अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर परमात्मा की याद, जिस याद से आत्मिक शक्ति का विकास होता है, जिससे कर्मेन्द्रियाँ वश में होती हैं और आत्मा स्वराज्य अधिकारी बनकर इस संगमयुग की राजाई के परम सुख का अनुभव करती है। सतयुग की राजाई उसको ही मिलती है, जो संगमयुग के इस राजपद पर स्थित होकर अपने तन-मन-धन को ईश्वरीय सेवा में सफल करता है।

सतयुग की राजाई और संगमयुग की राजाई अर्थात् स्वराज्य की स्थापना संगमयुग पर परमपिता परमात्मा द्वारा ही होती है। संगमयुग की राजाई के सुख के अनुभव का आधार है ईश्वरीय ज्ञान, गुण, शक्तियों की धारणा है और सतयुग की राजाई के सुख के अनुभव का आधार स्थूल साधन-सम्पत्ति परन्तु उस स्थूल साधन-सम्पत्ति की प्राप्ति का आधार भी संगमयुग पर ज्ञान-गुण-शक्तियों की धारणा ही है।

''बाबा की नज़र पहले-पहले ग़रीब बच्चों पर जाती है क्योंकि बाप गरीब-निवाज़ है ना। ... तुमको नशा चढ़ता है कि हम फिर से अपनी राजधानी स्थापन कर रहे हैं, जैसे कल्प पहले की थी। यह थोड़ेही कहेंगे कि हम ऐसे-ऐसे मकान बनायेंगे। नहीं, तुम वहाँ जायेंगे तो ऑटोमेटिक तुम वह बनाने लग पड़ेंगे क्योंकि आत्मा में पार्ट भरा हुआ है।''

सा.बाबा 13.7.10 रिवा.

''जिन्होंने जास्ती भक्ति की होगी, वे ही आकर यह ज्ञान पहले लेंगे। नहीं आते हैं तो समझ जायेंगे कि यह इतना ज्ञान उठाने वाला नहीं है। ... तुमको सतोप्रधान दुनिया का फिर से राज्य लेना है। तुम जानते हो - हम कल्प-कल्प राज्य लेते हैं, फिर गँवाते हैं और फिर बाप आकर देते हैं। ... यहाँ तो बैठे-बैठे भी मर जाते हैं, इसलिए अपना पुरुषार्थ करते रहो।''

सा.बाबा 5.07.10 रिवा.

''तुम्हारी बुद्धि कितनी विशाल होनी चाहिए और तुमको कितनी खुशी होनी चाहिए क्योंकि अभी तुम्हारी बुद्धि में ऊपर से लेकर सारा ज्ञान है। यह ज्ञान ब्राह्मण ही उठाते हैं, न शूद्रों में और न देवताओं में यह ज्ञान है। ... अभी हम फिर से अपनी राजधानी में जा रहे हैं, यह पुरानी दुनिया खत्म हो जायेगी।''

सा.बाबा 30.06.10 रिवा.

''कल्प-कल्प यह ज्ञान यज्ञ रचा जाता है। यह ड्रामा बना हुआ है। ड्रामा प्लेन अनुसार कल्प में एक ही बार यह यज्ञ रचा जाता है। यह कोई नई बात नहीं है। ... अब चक्र फिर से रिपीट हो रहा है, फिर से नई दुनिया स्थापन हो रही है। तुम नई दुनिया में स्वराज्य पाने के लिए पढ़ रहे हो। पवित्र भी जरूर बनना है। बनते भी वे ही हैं, जो ड्रामा अनुसार कल्प पहले बने थे।''

सा.बाबा 28.06.10 रिवा.

''सबको सीढ़ी उतरनी ही है, हर एक को सतो-रजो-तमो में आना ही है। ... अभी तुम बच्चों को अथाह खुशी होनी चाहिए। तुम्हारे ख्याल-ख्वाब में भी नहीं था कि हम विश्व का मालिक बनते हैं। ... तुम्हारी बुद्धि में यह सब होना चाहिए। यह नाटक तो बड़ा वण्डरफुल है।''

सा.बाबा 10.05.10 रिवा.

''बाप पहले से ही तो सब नहीं बतायेंगे ना। फिर तो यह खेल हो न सके। तुमको सब साक्षी होकर देखना है। साक्षात्कार होते जायेंगे। ... फिर हम अपनी राजधानी में आयेंगे। यह चक्र फिरता रहता है। अनेक बार यह चक्र लगाया है। ... अब यह नाटक पूरा होता है, अपने घर वापस जाना है। इस महाभारत लड़ाई के बाद ही स्वर्ग के गेट्स खुलते हैं।''

सा.बाबा 16.04.10 रिवा.

''यह है नई बात कि कल्प-कल्प 5000 वर्ष में संगमयुग पर एक ही बार बाप आते हैं। जब कलियुग का अन्त और सतयुग की आदि का संगम होता है, तब ही बाप आते हैं, नई दुनिया स्थापन करने। नई दुनिया सतयुग में इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य था, फिर त्रेता में होता है राम का राज्य। ... बाप तुमको ऐसा साहूकार बना देते हैं, जो देवताओं को भगवान से भी माँगने की दरकार नहीं रहती है।''

सा.बाबा 25.10.10 रिवा.

सतयुग की राजाई और विनाश का सम्बन्ध

परमात्मा आकर विश्व में राजशाही की स्थापना करते हैं परन्तु आज विश्व में सर्वत्र प्रजातन्त्र की राज-व्यवस्था है और विश्व में महाविनाश भी होने वाला है, जिसमें सारा भौगोलिक और ऐतिहासिक परिवर्तन होगा, तो इन सब परिस्थिति में विश्व में राजशाही की पुनः स्थापना कैसे होगी। इसके क्या-क्या विधि-विधान हैं, वह भी परमात्मा ने बताया है।

परमात्मा आकर सतयुग की राजाई की स्थापना करते हैं, उसके परिणाम स्वरूप पुरानी दुनिया का विनाश भी होता है, जिससे प्रजातन्त्र का अन्त होता है और विश्व में राजशाही की स्थापना होती है। बाबा ने अनेक बार ये भी कहा है कि जब तक राजाई की स्थापना नहीं हुई

है, तब तक विनाश या महाभारत लड़ाई लग नहीं सकती। जब राजाई की स्थापना अर्थात् नई दुनिया की स्थापना पूरी होगी, फिर विनाश शुरू होगा और सब आत्मायें घर चली जायेंगी, फिर तुम आकर सतयुग की दैवी राजाई में जन्म लेंगे, प्रिन्स-प्रिन्सेज बनेंगे।

बाबा कहते हैं - जब तुम पावन बन जाते हो, सतयुगी राजाई के योग्य बन जाते हो अर्थात् गुण-संस्कार धारण कर लेते हो, तो तुम्हारे लिए राजाई चाहिए, उसके लिए पुरानी दुनिया का विनाश होता है और तुम सतयुग की राजाई का राज्य-भाग्य पाते हो।

''जिस तरफ साक्षात् परमपिता परमात्मा बाप है, उनकी विजय जरूर होनी है। ... अभी तुम्हारा है योगबल, जिससे तुम माया पर विजय पाते हो। परन्तु इसको न समझने के कारण शास्त्रों में असुरों और देवताओं की लड़ाई लिख दी है। ... सतयुग-त्रेता में ये मन्मनाभव का मन्त्र होता नहीं है। इस मन्त्र से तुमने राजाई पाई, फिर उसकी दरकार नहीं रहती है।''

सा.बाबा 8.09.10 रिवा.

''पवित्र तो सारी दुनिया बनती है। तुम्हारे लिए स्वर्ग की स्थापना करते हैं। यह ड्रामा अनुसार होना ही है। यह खेल बना हुआ है। तुम पवित्र बन जाते हो, फिर विनाश शुरू हो जाता है। ... इस ड्रामा को अभी ही तुम समझ सकते हो। ... जब तक राजधानी स्थापन न हो जाये, तब तक विनाश नहीं होगा। तुम बहुत गुप्त वारियर्स हो।''

सा.बाबा 9.09.10 रिवा.

''यह भी तुम बच्चे जानते हो कि विनाश भी आने का है जरूर, जिसकी तैयारियाँ हो रही हैं। नेचुरल केलेमिटीज़ की भी ड्रामा में नूँध है। कोई कितना भी माथा मारे परन्तु तुम्हारी राजधानी तो स्थापन होनी ही है। कोई की ताक़त नहीं जो कोई इसमें कुछ कर सके। बाकी अवस्थायें तो नीचे-ऊपर होंगी ही क्योंकि राजधानी में सब प्रकार के चाहिए।''

सा.बाबा 13.8.10 रिवा.

''तुम बच्चों को निश्चय है कि बाप नई दुनिया स्वर्ग की स्थापना कर रहे हैं, ... यह पुरानी दुनिया खलास हो जानी है। सागर की एक ही लहर में सारी पृथ्वी डाँवाडोल हो जायेगी। विनाश तो होना ही है ना। नेचुरल केलेमिटीज़ किसको भी छोड़ती नहीं हैं।''

सा.बाबा 27.07.10 रिवा.

''तुम्हारी माया से युद्ध तो अन्त तक चलती रहेगी। यह भी जानते हो महाभारत लड़ाई होनी है जरूर। नहीं तो पुरानी दुनिया का विनाश कैसे हो। ... तुमको अपना राज्य-भाग्य स्थापन करना है, तो आपस मिलकर राय करनी चाहिए कि कैसे-कैसे सर्विस करें, जिससे सभी को पैग़ाम मिल जाये कि अब इस पुरानी दुनिया का विनाश होना है, बाप नई दुनिया स्थापन कर

रहे हैं।''

सा.बाबा 26.7.10 रिवा.

''बाप आकर तुमको नर से नारायण बनाते हैं। तुम्हारा भी फर्ज है, अपने हमजिन्स की सेवा करना, भारत की सेवा करना। ... तुम जानते हो हम अपना राज्य स्थापन कर रहे हैं। विनाश के लिए भी ड्रामा में युक्ति रची हुई है। आगे भी मूसलों की लड़ाई लगी थी। जब तुम्हारी पूरी तैयारी हो जायेगी, सब फूल बन जायेंगे, तब विनाश होगा।''

सा.बाबा 21.7.10 रिवा.

''कल्प-कल्प मैं तुम आत्माओं को पढ़ाने आता हूँ, तुमको ही राजाई देता हूँ। फिर तुम आधा कल्प बाद रावण राज्य में चले जाते हो। ... अभी बाप द्वारा पैराडाइज़ की स्थापना हो रही है, उसके लिए यह महाभारत लड़ाई भी खड़ी है।''

सा.बाबा 11.08.10 रिवा.

''तुम जब 16 कला सम्पूर्ण बनेंगे, तब विनाश की भी तैयारी पूरी होगी। वे विनाश के लिए और तुम अविनाशी पद पाने के लिए तैयारी कर रहे हो। कौरवों और पाण्डवों की लड़ाई हुई नहीं है। लड़ाई लगती है कौरवों और यादवों की। ... यहाँ के लिए ही गायन है पहले जब रक्त की नदियाँ बहती हैं, तब फिर घी की नदियाँ बहेंगी। ... वे आपस में बॉम्बस से लड़कर खत्म हो जायेंगे, यहाँ फिर सिविलवार की ड्रामा में नूँध है।''

सा.बाबा 22.7.10 रिवा.

''साइन्स वाले स्टार्स में दुनिया ढूँढने के लिए कितना माथा मारते रहते हैं। माथा मारते-मारते मौत सामने आ जायेगा। यह सब है साइन्स खा अति घमण्ड। ... दूसरी तरफ मौत के लिए बॉम्बस बना रहे हैं। समझते भी हैं कि कोई प्रेरक है। खुद कहते हैं वर्ल्ड वार जरूर होनी है। यह वही महाभारत लड़ाई है।''

सा.बाबा 22.07.10 रिवा.

''यह 84 का चक्र फिरता ही रहेगा, इसका अन्त नहीं है। यह भी तुम नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार ही जानते हो। ... तुम बच्चे जानते हो कि ड्रामा अनुसार अभी बड़ी लड़ाई लग नहीं सकती क्योंकि अभी पूरी राजाई स्थापन हुई नहीं है, होनी जरूर है। जब तक पूरी राजाई स्थापन हो हम भी तैयारी कर रहे हैं और वे भी तैयारी करते रहते हैं।''

सा.बाबा 17.06.10 रिवा.

''मनुष्य जब लड़ाई देखते हैं तो कहते हैं - यह तो महाभारत की लड़ाई की निशानी है। बाप कहते हैं - यह रिहर्सल होती रहेगी, यह लड़ाई चलते-चलते बन्द हो जायेगी। तुम जानते हो अभी हमारी स्थापना पूरी थोड़ेही हुई है, जो फाइनल लड़ाई लग जाये।''

सा.बाबा 7.06.10 रिवा.

''जितना तुम नज़दीक होते जायेंगे तो तुमको अपनी राजधानी की ड्रेस आदि का भी साक्षात्कार होता रहेगा। ... तुम जानते हो - जब हमारी पढ़ाई पूरी होगी तो विनाश शुरू होगा। विनाश होना जरूर है। तुम्हारे में भी कोई-कोई ही यह जानते हैं। अगर यह समझें कि दुनिया विनाश होनी है तो नई दुनिया के लिए तैयारी में लग जायें।''

सा.बाबा 07.05.10 रिवा.

''यह मूसलों की अन्तिम लड़ाई है, 5000 वर्ष पहले भी जब लड़ाई लगी थी, तो यह यज्ञ भी रचा था। इस पुरानी दुनिया का अब विनाश होना है। अभी नई राजधानी स्थापन हो रही है। तुम यह रुहानी पढ़ाई पढ़ते हो राजाई लेने के लिए। तुम्हारा धन्धा ही यह है रुहानी पढ़ाई पढ़ना और पढ़ाना।''

सा.बाबा 16.04.10 रिवा.

''लड़ाई सामने खड़ी है। लड़ाई जोर भरने में देरी थोड़ेही लगती है। परन्तु तुम बच्चे समझते हो अभी हमारी राजधानी स्थापन हुई नहीं है, तो विनाश कैसे हो सकता है। अजुन अभी तो बाप का पैग़ाम ही चारो तरफ कहाँ दिया है। ... बाप का यह पैग़ाम सबके कानों में जाना चाहिए। भल लड़ाई लगे, बॉम्बस भी लग जायें, परन्तु तुमको निश्चय है कि हमारी राजधानी जरूर स्थापन होनी है। तब तक विनाश हो नहीं सकता।''

सा.बाबा 29.09.10 रिवा.

सतयुग की राजाई और भारत
सतयुग-त्रेता की चक्रवर्ती राजाई का विस्तार और संकुचन
भारत की चक्रवर्ती राजाई का उत्थान और पतन

विश्व में राजतन्त्र की स्थापना में भारत की विशेष भूमिका है। परमात्मा भारत में ही परमपिता परमात्मा आकर विश्व में प्रजातन्त्र को खत्म कर पुन: राजतन्त्र की स्थापना करते हैं। परमात्मा और आत्मायें अविनाशी है, ये विश्व-नाटक भी अविनाशी है और इस विश्व-नाटक में भारत भूमि भी अविनाशी है। भारत जैसी राजाई किसी अन्य देश और खण्ड में नहीं होती है। चक्रवर्ती राजाई का केन्द्र-बिन्दु भारत ही है क्योंकि विश्व में राजाई की स्थापना करने वाला परमपिता परमात्मा भारत में ही आकर चक्रवर्ती राजाई की स्थापना करते हैं, जिसकी राजधानी भारत में वर्तमान देहली या देहली के आसपास इन्द्रप्रस्थ के नाम से होती है। चक्रवर्ती राजाई के समकक्ष सतयुग में और भी 7 और त्रेता में 11 राजाइयाँ होती हैं परन्तु उनके चक्रवर्ती राजा के साथ मधुर सम्बन्ध होते हैं, इसलिए वे एक ही चक्रवर्ती राजा से सम्बन्धित होते हैं। ब्रिटिश राज्य के लिए गायन है कि उनके राज्य में कब सूर्य अस्त नहीं होता था, परन्तु उनकी राजाई को चक्रवर्ती राजाई नहीं कहा जा सकता है क्योंकि उस समय विश्व में और भी अनेक राजाईयाँ थी और जो ब्रिटिश शासन के अधीन देश थे, उनके भी उनके साथ मधुर सम्बन्ध नहीं थे। वे सब स्वतन्त्रता के लिए संघर्षरत थे। बाबा ने कहा है - सतयुग में राजाई की 8 गद्दियाँ और त्रेता में 12 गद्दियाँ चलती हैं।

भारत में ही दैवी राज्य और आसुरी राज्य चलता है। अभी परमात्मा द्वारा दैवी राज्य की स्थापना होती है, फिर भारत में ही आसुरी राज्य भी होगा अर्थात् भारत में कल्प के आदि में जो दैवी राजाई परमात्मा स्थापन करते हैं, वह विश्व की सर्वश्रेष्ठ राजाई होती है और कलियुग के अन्त में भारत के राजायें भोगी-विलासी होने के कारण अपनी स्वतन्त्र राजाई को गँवाकर अंग्रेजों की दासता में रहकर नाममात्र के राजायें कहलाते हैं। रामराज्य और रावणराज्य भारत में ही होता है, इसलिए भारत में राम और रावण का, देवताओं और असुरों का और देवताओं और असुरों के देवासुर संग्राम आदि का गायन है। परन्तु अभी बाबा ने बताया है कि ऐसा कोई देवासुर संग्राम नहीं हुआ है, ये तो संगमयुग पर आसुरी वृत्तियों और दैवी वृत्तियों के आध्यात्मिक युद्ध का गायन है। परमात्मा ने कहा है जैसे परमात्मा बाप की महिमा अपरमअपार है, वैसे ही भारत की और भारत की दैवी राजाई अर्थात् स्वर्ग की महिमा भी अपरमअपार है।

भारत सर्वात्माओं के पिता परमात्मा की अवतरण भूमि है, इसलिए प्राय: सभी देशों, धर्मों, सभ्यताओं का भारत के प्रति आकर्षण रहा है और समयान्तर सभी मुख्य धर्म और सभ्यताओं ने भारत भूमि पर किसी न किसी तरह से राज्य किया है और परमात्मा से वर्से में मिली यहाँ की धन-सम्पत्ति का उपभोग किया है। ये भी इस विश्व-नाटक की अविनाशी नूँध है, इसका विधि-विधान है, जिसका राज़ भी ज्ञान सागर परमात्मा आकर इस संगमयुग पर बताते हैं।

अब प्रश्न उठता है कि यथार्थ भारत क्या है, कैसा था और कैसा होगा ? वास्तव में कल्पान्त में जब इस पतित विश्व का विनाश होता है, तो भारत का ही थोड़ा सा भाग बचता है, जहाँ पर दैवी राजाई अर्थात् सतयुग की स्थापना होती है। फिर विश्व-नाटक के नियमानुसार जैसे-जैसे आत्मायें परमधाम से इस विश्व रंगमंच पर अपना अविनाशी पार्ट बजाने के लिए आती जाती हैं, वैसे-वैसे भारत की राजाई का या भारत का विस्तार होता जाता है और यह विस्तार आधे कल्प तक अर्थात् त्रेता के अन्त तक सतत होता रहता है। भले ही वहाँ कई राजाइयाँ होती हैं परन्तु वे सब एक ही चक्रवर्ती राजाई के अन्तर्गत प्रेम और सद्-भाव से चलती है और सारा विश्व भारत ही होता है, इसलिए उस समय तक भारत का भारत नाम से नामकरण भी नहीं होता है। उस समय का भारत या दैवी राजाई आज के मिस्र, यूनान, सुदूर मध्येशिया, इण्डोनेशिया आदि तक होता है, इसलिए ही उन देशों में दैवी सभ्यता के कुछ नाममात्र चिन्ह मिलते हैं। इस प्रकार वहाँ तक एक ही चक्रवर्ती राजाई होती है, जिसका केन्द्र बिन्दु अर्थात् राजधानी वर्तमान देहली के आसपास जमुना के कण्ठे पर होती है और उसको इद्रप्रस्त कहा जाता है।

त्रेता के अन्त और द्वापर के आदि में जब दैवी धर्म और सभ्यता का पतन होता है और आसुरी सभ्यता का उदय होता है तो उस समय विश्व में कुछ विशेष उथल-पथल होती है, जिससे पृथ्वी जो 90 अंश पर सीधी होती है, वह साढ़े तेईस अंश पर झुक जाती है, जिससे सागर और नदियों के बहाव में परिवर्तन होता है, जिससे जो एक खण्ड के रूप में विश्व था, वह कई खण्डों में विभाजित हो जाता है। उसके बाद दक्षिण-पश्चिम में इब्राहम, उत्तर-पश्चिम में क्राइस्ट आदि धर्मपितायें आकर अपने धर्म की स्थापना करते हैं और उस धर्म की कलम आदि सनातन देवी-देवता धर्म से अर्थात् आदि सनातन देवी देवता धर्म की आत्माओं से ही लगती है, बौद्ध धर्म की स्थापना तो भारत में ही होती है और उसका विस्तार पूर्व में होता है। पहले-पहले उन सभी धर्मों में देवी-देवता धर्म की आत्मायें ही परिवर्तन होती हैं और उनके यहाँ उस धर्म की आत्मायें ऊपर से आकर जन्म लेती हैं। फिर जब उस धर्म वंश की आत्मायें ऊपर से आती

जाती हैं और उनकी वृद्धि हो जाती है, तब वे अपनी नई राजाई विभिन्न स्थानों पर स्थापन करते हैं, उसको पहचान देने के लिए उस देश और धर्म का नामकरण करते हैं, तब जो देवी-देवताओं की चक्रवर्ती राजाई होती है, वह खत्म हो जाती है और जो राजाई इन्द्रप्रस्त अर्थात् वर्तमान भारत के आधीन रहती है, वह भारत कहलाती है अर्थात् भारत का भी नामकरण होता है। इस प्रकार जो त्रेता के अन्त तक भारत की चक्रवर्ती राजाई का विस्तार होता रहा और द्वापर से उसका संकुचन आरम्भ हो जाता है, जो संकुचन होते-होते भारत वर्तमान रूप में आ जाता है। अभी स्वतन्त्रता के समय भी भारत में जो प्रजातन्त्र की स्थापना हुई, उसमें भी भारत के तीन भाग होकर, पाकिस्तान, बंगलादेश और भारत बना है अर्थात् भारत की सीमाओं का संकुचन हुआ है।

भारत की चक्रवर्ती राजाई के उत्थान और पतन की कहानी अति रोचक है और उसका उत्थान सतयुग की आदि को कहें या त्रेता के अन्त को कहें, यह भी विचारणीय विषय है। वास्तव में दैवी राजाई का चरमोत्कर्ष तो सतयुग की आदि को ही कहा जायेगा परन्तु विस्तार त्रेता के अन्त को कहा जायेगा। बाबा ने भी कहा सम्पूर्ण स्वर्ग तो सतयुग की आदि को ही कहा जायेगा, उसके बाद तो कलायें कम होती जाती हैं, जिससे सुख में भी कमी आती जाती है।

''तुम जानते हो हम भारत की सेवा कर दैवी राज्य स्थापन करते हैं, जहाँ हम फिर राज्य करेंगे। ... अभी यह पुरानी दुनिया जलकर बिल्कुल खत्म हो जानी है, यहाँ जो कुछ देख रहे, यह सब रहने का नहीं है। तुम सब नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार अपने तन-मन-धन से भारत को स्वर्ग बनाने की सेवा करते हो।... अभी हम श्रीमत पर रामराज्य स्थापन करते हैं।''

सा.बाबा 23.08.10 रिवा.

''ब्राह्मणों का है कुल, ब्राह्मणों की डिनायस्टी नहीं है। डिनायस्टी तब कहा जाये, जब राजा-रानी बनें। (राजा-रानी माना ताज हो, सिंहासन हो, राजधानी हो)... बाबा ने समझाया है - भारत में पहले डबल सिरताज राजा-रानी थे, फिर सिंगल ताज वाले बनते हैं। इस समय नो ताज। यह भी अच्छी रीति सिद्ध कर बताना है। बता वे सकेंगे, जिनकी धारणा होगी।''

सा.बाबा 19.08.10 रिवा.

''यह हार-जीत की कहानी भी भारत की ही है। और सब खण्ड तो बाई-प्लाट्स हैं। भारत में ही डबल सिरताज और सिंगल ताज वाले राजायें बनते हैं। ... भारत के देवी-देवताओं के सिवाए और कोई खण्ड में और किसी बादशाह को लाइट का ताज नहीं होता है। ... बाप दिन-प्रतिदिन तुमको बहुत गुह्य ते गुह्य बातें समझाते रहते हैं। फिर जो जितना बुद्धि में बिठा

सके।''

सा.बाबा 16.08.10 रिवा.

''इस समय भारत सबसे गरीब है। ग़रीबों की सेवा करने के लिऐ ही बाप आते हैं। ... तुमको बेहद के बाप से बहुत मदद मिल रही है। इतनी मदद कोई दे न सके। तुम बच्चों को बाप विश्व की बादशाही देते हैं, तो हौंसला बहुत बुलन्द चाहिए।''

सा.बाबा 18.8.10 रिवा.

''बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझो। ड्रामा अनुसार आधा कल्प तुम देह-अभिमानी हो रहते हो, अब देही-अभिमानी बनना है। ड्रामा अनुसार अभी इस पुरानी दुनिया को बदल नया बनना है। ... नई दुनिया में नया भारत था, उसमें देवी-देवताओं का राज्य था, जमुना के कण्ठे पर उनकी केपिटल थी, जिसको परिस्तान भी कहते हैं।''

सा.बाबा 1.07.10 रिवा.

''समझाना चाहिए कि हम अपना खर्चा करते हैं, हम कोई से भीख वा डोनेशन नहीं लेते हैं। ... बाप आकर राजयोग सिखलाकर आदि सनातन दैवी राजधानी की स्थापन कराते हैं। भारत में दैवी धर्म की राजधानी थी, अभी नहीं है। बाप कहते हैं मैं फिर से दैवी राजधानी स्थापन करता हूँ।''

सा.बाबा 13.05.10 रिवा.

''भक्ति में भी खुशी होती है, बहुत खुशी में नाचते रहते हैं परन्तु नीचे उतरते आते हैं।... भक्ति में रचता और रचना को कोई भी नहीं जानते हैं। रचता बाप और रचना के आदि-मध्य-अन्त को जानने से तुम क्या बनते हो और न जानने से तुम क्या बन पड़ते हो ? जानने से तुम सॉलवेन्ट बनते हो, न जानने से वे ही भारतवासी इन्सॉलवेन्ट बन पड़ते हैं।''

सा.बाबा 10.05.10 रिवा.

''भारतवासी सारे विश्व के मालिक थे। तुमको वह विश्व का राज्य सिर्फ याद के बल से मिला था, अब फिर मिल रहा है और कल्प-कल्प मिलता है इस याद के बल और पढ़ाई के बल से। पढ़ाई में भी बल होता है क्योंकि पढ़कर बैरिस्टर आदि बनते हैं तो बल हुआ ना। ... तुम योगबल से विश्व पर राज्य करते हो।''

सा.बाबा 10.05.10 रिवा.

''वण्डर है ना, इस समय सब आपस में लड़कर खलास हो जाते हैं, मक्खन भारत को मिल जाता है। ... तुम भक्ति में जन्म-जन्मान्तर जो सुनते आये हो, और अभी हम तुमको समझाते हैं, अब तुम जज करो कि राइट क्या है।''

सा.बाबा 08.05.10 रिवा.

''बाप है सारी दुनिया को रजिस्टर करने वाला। स्वर्ग का मालिक बनने के लिए तुमको यहाँ से ही पासपोर्ट मिलता है। ... बैरिस्टरी पढ़ते हैं तो योग बैरिस्टर से होता है और वे बैरिस्टर

बनते हैं। जिनका योग परमपिता परमात्मा के साथ है तो वे डबल सिरताज महाराजा-महारानी बनते हैं। ... यह पढ़ाई कितना ऊंच बनाने वाली है।''

सा.बाबा 8.10.10 रिवा.

''नर्क के बाद है स्वर्ग। अभी यह है पुरुषोत्तम संगमयुग, जब तुम बाप से राजयोग सीखकर डबल सिरताज महाराजा-महारानी बनते हो। ... इसमें सिर्फ बुद्धि से बाप को याद करना है, और कुछ करने की दरकार नहीं है। परन्तु माया ऐसी है, जो बाप की याद भुला देती है। याद में ही विघ्न पड़ते हैं। यही तो युद्ध है ना।''

सा.बाबा 8.10.10 रिवा.

''विलायत वालों को भी बाप का सन्देश तो देना है ना। ये चित्र ऐसी फर्स्ट क्लास चीज़ है, जो देखकर कहेंगे - सच्चा ज्ञान तो इनमें ही है, और कोई के पास तो है ही नहीं। ... ड्रामा अनुसार वे विनाश के निमित्त बने हुए हैं। ... बाबा ने बताया है कि अगर दोनों मिल जायें तो विश्व के मालिक बन सकते हैं, यह लक्ष्मी-नारायण का चित्र सदा साथ रहना चाहिए। किसको भी समझा सकते हो कि हम इस आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना कर रहे हैं श्रीमत पर। यहाँ चाल-चलन को सुधारा जाता है।... अपना याद का चार्ट रखना बहुत अच्छा है। तुम जानते हो हम इस 84 के चक्र को जानने से ही चक्रवर्ती राजा बन जाते हैं और फिर बाप की याद से पवित्र भी बनना है। ''

सा.बाबा 1.10.10 रिवा.

'' परन्तु ड्रामा में ऐसा है नहीं। विश्व की बादशाही तो योगबल से ही मिलती है।''

सा.बाबा 8.10.10 रिवा.

ज्ञान-योग-धारणा-सेवा चारो से स्वर्ग की राजाई की स्थापना होती है और चारो से स्वर्ग की राजाई का अधिकार प्राप्त होता है परन्तु राजा वे बनेंगे, जो चारो में सफल होते हैं और चक्रवर्ती राजा वे बनते हैं, जो चारो में पास-विद्-ऑनर होते हैं।

सतयुग-त्रेता की राजाई का उत्थान और पतन

जैसाकि ऊपर कहा गया है कि सतयुगी राजाई का उत्थान और पतन और देवी-देवताओं की राजाई की सीमाओं का विस्तार और संकुचन दो अलग-अलग विषय हैं और दोनों की अलग-अलग कसौटियाँ हैं अर्थात् मापदण्ड हैं।

सतयुग की राजाई कैसे स्थापन होती है और उसका पतन कैसे होता है, उसका राज़

भी बाबा ने बताया है। जो उस राज़ को समझ लेता है, वही इस राजाई की स्थापना में परमात्मा का सहयोगी बनता है और उस राज्य का अधिकारी बनता है। पवित्रता और ज्ञान-योग के बल से सतयुग की दैवी राजाई की स्थापना होती है और पवित्रता की यथार्थ धारणा में कमी होने के कारण पतन होता है। भारत में जब कलियुग में राजायें पतित होकर भोगी-विलासी हो जाते हैं तो भारत में अन्य देशों और धर्मों का राज्य होता है और भारत में दासता आती है और नाममात्र के भारत में राजायें रह जाते हैं और अन्त में प्रजा संघर्ष करके उस दास्ता से मुक्ति पाती है और वे नाममात्र के राजायें भी खत्म हो जाते हैं और प्रजातन्त्र की राज-व्यवस्था आती है।

''आधा कल्प देवी-देवताओं का राज्य चलता है, फिर आधा कल्प के बाद रावण राज्य शुरू होने से देवतायें वाम मार्ग में चले जाते हैं। बाकी ऐसे नहीं कि युद्ध में इन्हों को किसी ने हराया।... यह लक्ष्मी-नारायण न लड़ाई से राज्य लेते हैं और न लड़ाई में राज्य गँवाते हैं। यह तो तुम योग में रह पवित्र बनकर पवित्र राज्य स्थापन करते हो।''

सा.बाबा 23.04.10 रिवा.

''भारत में इस समय तो कोई राजाई ही नहीं है, जिसको जीतकर इन्होंने राज्य लिया हो। यह लक्ष्मी-नारायण कोई लड़ाई करके राजाई तो पाते नहीं हैं।... आत्मा कोई फट से तो सतो प्रधान नहीं बनती है। इन सब बातों पर विचार-सागर मन्थन किया जाता है। बाबा का विचार सागर मन्थन चलता है, तब तो समझाते हैं ना।''

सा.बाबा 27.09.10 रिवा.

''बाप कहते हैं - इस अन्तिम जन्म में पूरा पुरुषार्थ करना है। अपना पैसा आदि भी सब सफल कर अपना कल्याण करो। अपना कल्याण करेंगे तो भारत का भी कल्याण होगा। ... याद की यात्रा से और सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त को जानने से ही हम चक्रवर्ती राजा बन जायेंगे, फिर उतरना शुरू होगा। फिर अन्त में बाबा के पास आ जायेंगे। यह चक्र चलता रहता है।''

सा.बाबा 23.08.10 रिवा.

''बाप सर्वशक्तिवान है तो माया रावण भी सर्वशक्तिवान है। आधा कल्प रावण का राज्य चलता है। इस रावण पर जीत बाप के सिवाए कोई पहना सके। ड्रामा अनुसार रावण राज्य भी होना ही है। भारत की हार और भारत की जीत पर यह ड्रामा बना हुआ है।''

सा.बाबा 5.8.10 रिवा.

''बाबा हमको पवित्र बनाकर पवित्र दुनिया में ले जाते हैं तो ऐसे बाप का कितना रिगार्ड रखना चाहिए। ऐसे बाबा पर तो कूर्बान जाना चाहिए, जो परमधाम से आकर हमको पढ़ा रहे हैं। ...

बाबा हमको पढ़ा रहे हैं, हम मनुष्य से देवता बनने आये हैं, यह अभी तुमको पता पड़ा है। पहले हम देवता थे, स्वर्गवासी थे, भारत में राज्य करते थे, फिर रावण ने हमारा राज्य छीन लिया। अभी बाप फिर से दे रहे हैं।''

सा.बाबा 26.06.10 रिवा.

''तुम श्रीमत पर योगबल से राज्य लेते हो, फिर गँवाते हो, फिर लेते हो। तुमको यह पूरा ज्ञान अभी मिला है। ... इन लक्ष्मी-नारायण को भी यह ज्ञान नहीं होगा कि हमने यह राजाई कैसे ली। ... जैसा कर्म, वैसा जन्म मिलता है। कोई मेहतर, वेश्या आदि बनते हैं, यह भी कर्मभोग है ना।''

सा.बाबा 10.05.10 रिवा.

''तुम जानते हो यह ऊंच ते ऊंच रुहानी स्कूल है। रुहानी बाप बैठ पढ़ाते हैं। पढ़ाई तो बच्चों को याद आनी चाहिए। यह भी बच्चा ठहरा। सभी को सिखलाने वाला वह बाप है। ... यह स्मृति बुद्धि में रहनी चाहिए कि हमने 84 जन्म लिए हैं, हम विश्व के मालिक थे, देवी-देवता थे, फिर पुनर्जन्म लेते-लेते आकर पट में पड़े हैं। भारत कितना सॉलवेन्ट था।''

सा.बाबा 01.05.10 रिवा.

''भारतवासी बच्चे भूल गये हैं कि हम कोई समय विश्व के मालिक डबल सिरताज थे। अभी बाप स्मृति दिलाते हैं कि तुम विश्व के मालिक थे, फिर तुम 84 जन्म लेते नीचे उतरते आये हो। ... भारत ही सचखण्ड था, भारत ही अभी झूठ खण्ड बना है। झूठखण्ड किसने बनाया, फिर सचखण्ड किसने बनाया, यह किसको पता नहीं है।''

सा.बाबा 5.05.10 रिवा.

''अभी यह है संगम। जब इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य था तो रावण राज्य नहीं था। फिर रामराज्य से रावण राज्य कैसे चेन्ज होता है, ये कोई नहीं जानते हैं। ... यह रुहानी नॉलेज रुहानी बाप ही आकर रूहों को देते हैं। ... आत्मा अविनाशी है, वह कभी लीन नहीं होती है।''

सा.बाबा 26.10.10 रिवा.

''तुम जानते हो - हम कल्प-कल्प राज्य लेते और गँवाते हैं, रावण से हार खाते हैं और रावण पर जीत पाते हैं। अभी सर्वशक्तिवान बाप को याद करने से रावण पर जीत पानी है। ... हम सुखधाम के राही हैं। पहले हम शान्तिधाम जायेंगे, फिर सुखधाम में आयेंगे।''

सा.बाबा 21.10.10 रिवा.

''अभी हमारा बाबा हमको पढ़ा रहे हैं। हमारा यादगार भी यहाँ है। इस देलवाड़ा मन्दिर की तो अपरमअपार महिमा है। यह हू-ब-हू हमारा यादगार है। अभी हम राजयोग सीख रहे हैं, फिर भक्ति मार्ग में हमारा यादगार बनेंगा। ... नीचे योग तपस्या में बैठे हैं, ऊपर में स्वर्ग की राजाई है। झाड़ में भी कितना क्लीयर है।''

सा.बाबा 21.10.10 रिवा.

''अभी बाप के डायरेक्शन से हम फिर अपनी राजधानी स्थापन कर रहे हो। तुम बच्चे मेरे मददगार हो। तुम पवित्र बनते हो तो तुम्हारे लिए पवित्र दुनिया जरूर स्थापन होनी है। ... याद से विकर्म विनाश होते हैं और पढ़ाई से स्टेटस मिलता है। दैवीगुण भी धारण करने हैं। हाँ, इतना जरूर है कि माया के तूफान आयेंगे। भक्ति और ज्ञान दोनों के लिए सवेरे का टाइम अच्छा है।'' सा.बाबा 21.10.10 रिवा.

''तुम ही कल्प-कल्प बाप से वर्सा लेते हो अर्थात् तुम ही माया रावण पर जीत पाते हो और फिर हारते हो। यह है बेहद की हार और जीत का खेल। ... इस सृष्टि-चक्र में पहले-पहले इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य था, फिर और राजायें आने शुरू हुए। ... इस पढ़ाई से तुम अपने पुरुषार्थ अनुसार पद पाते हो। जितना जो पढ़ेंगे, उतना ग्रेड मिलेगी। इसमें है राजाई की ग्रेड।'' सा.बाबा 5.10.10 रिवा.

सतयुग-त्रेता के राजतन्त्र की स्थापना और विस्तार

सतयुग के राजतन्त्र की स्थापना भारत में देहली के आसपास के क्षेत्र पाकिस्तान के पूर्वी क्षेत्र, राजस्थान के उत्तरी क्षेत्र और उत्तर प्रदेश के पश्चिमी क्षेत्र में होती है और विस्तार जनसंख्या वृद्धि के साथ उसके चारो ओर होता जाता है, जो त्रेता के अन्त में अफ्रीका के उत्तरी भाग मिस्र, योरोप के दक्षिणी भाग, उत्तरी एशिया, पूर्व में चीन और इण्डोनिशिया तक हो जाता है। इसलिए समयान्तर में भले ही इन सब देशों में मुस्लिम धर्म और सभ्यता की स्थापना और विस्तार हुआ, फिर भी दैवी सभ्यता के चिन्ह आज तक वहाँ पाये जाते हैं। मुस्लिम सभ्यता में भी राजशाही ही चली आई है। जैसे-जैसे मुस्लिम धर्म और सभ्यता की राजाई स्थापन हुई, भारत का विभाजन होता गया और विभिन्न देश और राजाईयाँ अस्तित्व में आती गई और भारत की राजाई का क्षेत्र निरन्तर संकुचित होता गया।

''अभी तुम गुप्त वेष में अपनी राजधानी स्थापन कर रहे हो। ... तुम हो इन्कॉगनीटो, अननोन वारियर्स, नान-वायोलेन्स। तुम डबल अहिंसक सेना हो। सबसे बड़ी हिंसा तो यह विकार की है, जो आत्मा को पतित बनाती है। इस काम विकार को जीतना है। गीता में भगवानुवाच है - काम महाशत्रु है, इस पर जीत पाने से ही तुम जगतजीत बनेंगे।''

सा.बाबा 29.07.10 रिवा.

''तुमको पक्का निश्चय है कि हम ही राज्य करते थे, फिर हमने राज्य गँवाया, अब फिर बाबा आया हुआ है, उनसे राज्य-भाग्य लेना है। ... अभी नाटक पूरा होता है, हम सब वापस घर जायेंगे। बाबा आये हैं सबको वापस ले जाने के लिए।'' सा.बाबा 21.5.10 रिवा.

''लक्ष्मी-नारायण सिर्फ एक तो नहीं थे, उन्हों की सारी राजधानी भी थी। हम यह स्वराज्य स्थापन कर रहे हैं। ... मन्मनाभव अक्षर गीता के हैं। भगवान शिवबाबा है, वह कहते हैं - मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे, 84 के चक्र को याद करो तो यह बन जायेंगे। ... बाप 100 प्रतिशत पवित्रता-सुख-शान्ति का राज्य फिर से स्थापन कर रहे हैं - यह याद रहने से खुशी भी होगी और किसको तीर भी लगेगा।'' सा.बाबा 15.10.10 रिवा.

''बाप तो परमधाम से पैसे आदि नहीं लेकर आते हैं। तुम्हारी चीज़ें तुम्हारे काम में आती हैं। बच्चे वृद्धि को पाते रहते हैं, खज़ाना भरपूर रहता है। बच्चों का दिया हुआ फिर बच्चों के ही काम में आता है। ... तुम बच्चे जानते हो हम बाप से 21 जन्म के लिए अपना राज्य-भाग्य पा रहे हैं। राजधानी स्थापन करने में यह थोड़ी-बहुत तकलीफ तो सहन करनी ही है। कहा जाता है खुशी जैसे खुराक नहीं।'' सा.बाबा 15.10.10 रिवा.

दैवी राजाई की स्थापना, उत्थान और पतन
राजाई की स्थापना और पतन
दैवी राजाई और सभ्यता का विस्तार और पतन

Q. दैवी राजाई, राजाई और दैवी सभ्यता तीन बातें अलग-अलग हैं, तो तीनों में क्या समानता है और क्या असमानता ?

तीनों में कुछ भूलभूत समानतायें और असमानतायें हैं, जिनके विषय में यहाँ विचार करेंगे। दैवी राजाई की स्थापना सतयुग के आदि में होती है और सतयुग की आदि ही उसका चरमोत्कर्ष है, उसके बाद ड्रामा के विधि-विधान अनुसार उसमें गिरावट आरम्भ हो जाती है और गिरते-गिरते त्रेता के अन्त में दैवी राजाई और सभ्यता विलीन हो जाती है। कहने का तात्पर्य कि दैवी राजाई का चरमोत्कर्ष सतयुग के आदि में ही होता है और उसका सर्वाधिक विस्तार त्रेता के अन्त में होता है।

दैवी राजाई की स्थापना भारत में वर्तमान देहली और उसके आसपास कुछ क्षेत्र में ही होती है, फिर विस्तार तो सुदूर में होता है परन्तु सुदूर में हुए उस विस्तार को चरमोत्कर्ष नहीं कहा जायेगा क्योंकि समय की गति के साथ स्वर्ग की अर्थात् दैवी राजाई की चमक कम होती जाती है क्योंकि सतोप्रधानता की कलायें कम होती जाती हैं। बाबा ने भी कहा है- सतोप्रधान स्वर्ग या सम्पूर्ण स्वर्ग सतयुग की आदि को ही कहा जायेगा।

कलियुग में सर्वत्र प्रजातन्त्र है, परमात्मा आकर विश्व में राजतन्त्र और दैवी सभ्यता और राजाई की पुन: स्थापना करते हैं, जो कलियुग के अन्त तक चलती है। कलियुग के अन्त में कुछ समय के लिए राजाई खत्म होकर प्रजातन्त्र की राज-व्यवस्था आती है, जो भारत और सारे विश्व में होती है।

दैवी राजाई और सभ्यता की स्थापना और चरमोत्कर्ष तो वर्तमान भारत में ही होता है और विस्तार सुदूर मिस्र, यूनान, दक्षिणी यूरोप, चीन, इण्डोनेशिया आदि तक होता है। त्रेता के अन्त में जब दैवी धर्म और सभ्यता का अन्त होता है, तो दैवी सभ्यता भी विलीन हो जाती है, जिससे आसुरी अर्थात् देहाभिमानी सभ्यता की आदि होती है और साथ ही दुनिया में अन्य धर्म और सभ्यताओं की भी स्थापना और विस्तार होता है, जिससे भारत का संकुचन आरम्भ हो जाता है और भारतीय सभ्यता का पतन होता जाता है।

''तुम देवियाँ मनुष्यों को ज्ञान-दान करती हो, जिससे उनकी सब मनोकामनायें पूरी होती हैं। ... अभी तुम जानते हो - हमने बाप से राजाई ली, राजाई की, फिर कैसे धीरे-धीरे उतरती कला होती है। पुनर्जनम लेते-लेते कलायें कम होते-होते अभी देखो कैसी हालत हुई है। यह भी नई बात नहीं है, हर 5000 वर्ष बाद चक्र फिरता रहता है।''

सा.बाबा 23.07.10 रिवा.

''तुम भारतवासी ही विश्व के मालिक थे, जब सतयुग था। अभी तुम ऐसे नहीं कहेंगे कि हम विश्व के मालिक हैं। ... अभी हम संगमयुगी हैं, फिर हम सतयुग में सारे विश्व के मालिक बनेंगे। ये बातें तुम बच्चों की बुद्धि में आनी चाहिए। तुम जानते हो विश्व की बादशाही देने वाला बाप आया है। ज्ञान दाता एक बाप ही है।''

सा.बाबा 29.05.10 रिवा.

''अभी बाप ने हमको स्वच्छ बुद्धि दी है, जिससे हम रचता और रचना के आदि-मध्य-अन्त को जान गये हैं। जितना-जितना जानते जायेंगे, उतना खुशी का पारा चढ़ता जायेगा और खुशी में रोमांच खड़े होते जायेंगे। अभी हम फिर से अपने ठिकाने पर पहुँच गये हैं। हम समझते हैं कि बरोबर बाप ने हमको स्वर्ग की राजाई दी थी, जो हमने गँवा दी, अभी बाप फिर से दे रहे हैं।''

सा.बाबा 29.05.10 रिवा.

''तुमसे बहुत पूछते हैं - तुम बी.के. का उद्देश्य क्या है ? बोलो - बी.के. का उद्देश्य है, विश्व में सतयुगी सुख-शान्ति का स्वराज्य स्थापन करना। हम हर कल्प, 5000 वर्ष बाद श्रीमत पर विश्व में शान्ति स्थापन कर विश्व-शान्ति की प्राइज़ लेते हैं। यथा राजा-रानी, तथा प्रजा सब प्राइज़ लेते हैं। नर्कवासी से स्वर्गवासी बनना कम प्राइज़ है क्या !''

सा.बाबा 20.10.10 रिवा.

सतयुग-त्रेता के राजतन्त्र में चक्रवर्ती राजा और अन्य समानान्तर राजाओं की भूमिका

सतयुग-त्रेता में एक चक्रवर्ती राजा होता है, जिसकी राजधानी इन्द्रप्रस्थ अर्थात् वर्तमान भारत में देहली या देहली के आसपास होती है और उसके समानान्तर सतयुग में 7 और राजायें होते हैं, जिनकी क्रमानुसार राजगद्दियाँ चलती रहती है। समयान्तर में जनसंख्या वृद्धि और सतोप्रधानता की कलाओं के गिरने के कारण राजाइयों की संख्या बढ़ती जाती है, जिससे त्रेता में एक चक्रवर्ती राजा और उसके समानान्तर राजाइयाँ 11 अन्य राजाइयाँ अर्थात् कुल मिलाकर 12 हो जाती हैं और उनकी क्रमानुसार राजगद्दियाँ चलती रहती है। सतयुग-त्रेता में अनेक राजाइयाँ होते भी सब में परस्पर प्रेमभाव होता है और सब चक्रवर्ती राजा के साथ समानता और सद्भाव से चलते हैं अर्थात् उनमें किसी प्रकार का मतभेद नहीं होता है। इसलिए वहाँ का एकराज्य, एकभाषा, एकधर्म का गायन है।

''84 जन्मों का चक्र भी तुम ही लगाते हो। तुम्हारे बिगर यह ज्ञान और कोई को मिल न सके। जो इस धर्म के होंगे, वे ही यहाँ आयेंगे। राजधानी स्थापन हो रही है। तुम्हारे में भी कोई राजा-रानी, कोई प्रजा बनेंगे। सूर्यवंशी में लक्ष्मी-नारायण दि फर्स्ट, सेकेण्ड, थर्ड - 8 गद्दी चलती हैं। फिर क्षत्रिय धर्म में भी फर्स्ट, सेकण्ड, थर्ड, ऐसे 12 गद्दियाँ चलती हैं। (ये 8 सूर्यवंशी की और 12 क्षत्रियों की गद्दियाँ क्रमानुसार चलती हैं या समानान्तर, बाबा का भाव-अर्थ क्या है?)''

सा.बाबा 12.07.10 रिवा.

''प्रदर्शनी आदि में यह लाइन भी जरूर लिखनी चाहिए - हर एक एक्टर का अपना पार्ट है, बाप भी इस ड्रामा में निराकारी दुनिया से आकर साकारी शरीर का अधार लेकर पार्ट बजाते हैं। ... यह सिद्ध करके बताना है। इस सृष्टि-चक्र को जानने से मनुष्य स्वदर्शन चक्रधारी बन चक्रवर्ती राजा विश्व का मालिक बन सकते हैं। तुम्हारे पास तो सारी नॉलेज है। बाप के पास है गीता की नॉलेज, जिससे मनुष्य नर से नारायण बनते हैं। फुल नॉलेज बुद्धि में आ गई तो फिर फुल बादशाही मिलेगी।''

सा.बाबा 14.04.10 रिवा.

सतयुग-त्रेता के राजतन्त्र में राजा और प्रजा का परस्पर सम्बन्ध

सतयुग-त्रेता के राजतन्त्र में राजा और प्रजा का सम्बन्ध पिता-पुत्र के समान होता है अर्थात् राजा प्रजा की पालना और देखभाल पुत्र के समान करता है और प्रजा राजा को पिता

तुल्य सम्मान देती है, उसके सुख के लिए हर प्रकार का सहयोग करती है। दोनों अपने-अपने स्थान पर सुख-शान्ति का अनुभव करते हैं। दोनों में अहंकार-हीनता की कोई भावना नहीं होती है। सारा राज्य एक परिवार के समान होता है, इसलिए बाबा कहते हैं - वहाँ सब अपने को मालिक समझते हैं अर्थात् सब में अपनत्व का भाव और भावना होती है।

सतयुग-त्रेता का राजतन्त्र, प्रकृति और भौगोलिक परिवर्तन

सतयुग-त्रेता में राजा-प्रजा सभी पावन होते हैं, उनके कोई विकर्म आदि होते नहीं, इसलिए प्रकृति उनकी दासी होती है अर्थात् सबको मनवांछित फल देती है। जब कलियुग के अन्त और सतयुग के आदि के संगमयुग पर आसुरी राज्य और सभ्यता का अन्त और दैवी राज्य और दैवी सभ्यता अभ्योदय होता है अर्थात् भोगबल का अन्त और योगबल की आदि होती है तो भी विश्व में अभूतपूर्व भौगोलिक परिवर्तन होता है और जब दैवी राज्य, दैवी सभ्यता का अन्त होता है तब भी विश्व में विशाल भौगोलिक परिवर्तन होता है, जिससे दैवी राज्य और सभ्यता के अवशेष भी विलीन हो जाते हैं। प्रकृति आत्माओं को उनके कर्मों के अनुसार सुख-दुख दोनों देने के निमित्त बनती है। जहाँ सतयुग में मृत्यु शब्द का ही ज्ञान नहीं होता है, वहाँ द्वापर से आत्मा में मृत्यु-दुख और मृत्यु-भय भी आरम्भ हो जाता है।

''आज इस दुनिया में करोड़ो मनुष्य हैं, फिर तुम 9 लाख होंगे। सो भी एबाउट कहा जाता है।... यह राजाई स्थापन हो रही है। बुद्धि कहती है सतयुग में बहुत छोटा झाड़ होता है परन्तु बहुत ब्युटीफुल होता है। नाम ही है स्वर्ग, पैराडाइज़। तुम बच्चों की बुद्धि में सदैव सारा चक्र फिरता रहे तो बहुत अच्छा है।'' सा.बाबा 17.05.10 रिवा.

सतयुग-त्रेता की राजाई और द्वापर-कलियुग की राजाई का आधार सतयुग की राजाई और ईश्वरीय सेवा

सतयुग-त्रेता की राजाई की स्थापना इस संगमयुग की पढ़ाई से होती है, जिस पढ़ाई में ज्ञान, योग, धारणा और सेवा के चार मुख्य विषय हैं। इसमें सेवा का विशेष महत्व है परन्तु सेवा वे ही कर सकते हैं, जिनमें ज्ञान-योग, दैवीगुणों और शक्तियों की धारणा होती है। अभी इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर जो जितना ज्ञान-योग, दैवीगुणों और शक्तियों को धारण करते हैं और उनकी धारणा के आधार पर सेवा करते हैं और उस सेवा में वे जिन और जितनी

आत्माओं को रास्ता बताते हैं और उस रास्ते पर चलने में जिनको मदद करते हैं, वे ही उनकी सतयुग-त्रेता की राजाई में आते हैं। परन्तु द्वापर-कलियुग की राजाई की स्थापना दान-पुण्य के आधार पर होती है और उसके विस्तार के लिए युद्धादि भी होते हैं क्योंकि द्वापर-कलियुग में आत्माओं में देहाभिमान के कारण काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि विकार आ जाते हैं, जिससे वे अपने राज्य के विस्तार के लिए युद्धादि करते हैं।

''याद का जौहर भरे, तब सर्विस कर सकें। फिर देखो - हमने सर्विस करके कितनी प्रजा बनाई है। हमने कितनों को आप समान बनाया, वह हिसाब चाहिए ना। प्रजा बनानी पड़े, तब राजाई पद पा सकते। ... योग में रहे, वाणी में जौहर भरे, तब किसको तीर लगे। ... बाबा ने कहा है भक्तों को ज्ञान सुनाओ। व्यर्थ किसको न दो, नहीं तो और ही निन्दा करायेंगे।''

सा.बाबा 15.07.10 रिवा.

''महीन बुद्धि वाले ही अच्छी रीती समझकर समझा सकते हैं। उनको अन्दर में भासना आती है कि यह नाटक अनादि बना हुआ है। ... मनुष्य तो बिल्कुल घोर अन्धियारे में हैं। तुम अभी घोर रोशनी में हो। बाप आकर रात को दिन बना देते हैं। आधा कल्प तुम राज्य करते हो, तो तुमको कितनी खुशी होनी चाहिए।''

सा.बाबा 16.07.10 रिवा.

''बच्चों को अपनी राजाई स्थापन करनी है, इसमें बड़ी विशालबुद्धि चाहिए। ... सर्विस की वृद्धि तब ही होगी, जब बच्चों की फ्राक़दिल होगी। कोई भी शुभ कार्य आपही करना बहुत अच्छा है।... बाबा तो दाता है। बाबा किसको थोड़ेही कहेंगे कि इस कार्य में इतना लगाओ।''

सा.बाबा 9.07.10 रिवा.

''यह है ज्ञान यज्ञ। यज्ञ में आहुति डालनी होती है। ज्ञान सागर बाप ही आकर यज्ञ रचते हैं। यह बड़ा भारी यज्ञ है, जिसमें सारी पुरानी दुनिया स्वाहा होनी है।... इस बेहद की सर्विस में कितनी विशालबुद्धि होनी चाहिए। हम विश्व पर जीत पाते हैं। काल पर भी जीत पाकर अमर बन जाते हैं। ... तुम किसको भी विश्व का मालिक बना सकते हो।''

सा.बाबा 9.07.10 रिवा.

''अभी तुम बाप के बने हो तो फिर नशा चढ़ना चाहिए ना। गायन है - अतीन्द्रिय सुख पूछना हो तो गोपी वल्लभ के गोप-गोपियों से पूछो। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार ही खुशी का पारा चढ़ेगा। कोई तो झट आप समान बनाने की सेवा करने लगते हैं। बच्चों का काम ही यह है कि सब कुछ भुलाये अपनी राजधानी की याद दिलाना।''

सा.बाबा 8.06.10 रिवा.

''तुमको विश्व की बादशाही देता हूँ। तुम हमारे बनकर सर्विस करो। भोलानाथ है तब तो सब उनको याद करते हैं। अभी तुम हो ज्ञान मार्ग में। अब तुम बाप की श्रीमत पर चलो और विश्व की बादशाही लो। ... सो भी सूर्यवंशी में।''

सा.बाबा 21.05.10 रिवा.

''अभी जो बच्चे मात-पिता की दिल पर चढ़ते हैं, वे ही भविष्य में तख्तनशीन बनेंगे। जो रातदिन सर्विस में बिजी रहते हैं, वे ही दिल पर चढ़ते हैं। बाप का पैग़ाम तो सबको देना है। ... यह राखी बाँधते हो, तो पैसा-कौड़ी कुछ भी लेने का नहीं है। बोलो हमको और कुछ चाहिए नहीं है, सिर्फ 5 विकारों का दान दो। यह दान लेने के लिए हम आये हैं।''

सा.बाबा 22.05.10 रिवा.

''बाप आकर गन्दग़ी से निकालते हैं, जितना हो बहुतों को निकालने की सर्विस करना चाहिए। जो करेंगे, वे ऊंच पद पायेंगे। ... बाप तुमको सतयुग से भी ऊंच यहाँ बनाते हैं। बाप ईश्वर पढ़ाते हैं तो उनको अपनी पढ़ाई का जलवा दिखाना है, तब बाप भी कुर्बान जायेंगे। दिल में आना चाहिए - बस, अभी हम भारत को स्वर्ग बनाने का ही धन्धा करेंगे।''

सा.बाबा 13.05.10 रिवा.

''बाप हमको स्वर्ग का प्रिन्स-प्रिन्सेज बनने के लिए पढ़ा रहे हैं तो तुमको कितनी खुशी रहनी चाहिए। ... बच्चों को सर्विस का शौक होना चाहिए। हम ऐसी-ऐसी सर्विस कर, गरीबों का उद्धार कर, उनको स्वर्ग का मालिक बनायें।''

सा.बाबा 10.05.10 रिवा.

''बाप हमको पढ़ाकर सतयुग का मालिक बनाते हैं। ... अन्दर में बच्चों को शौक होना चाहिए कि हम बाबा के सपूत बच्चे बनकर क्यों न जाकर सर्विस करें। ... पढ़ेंगेनहीं, सर्विस नहीं करेंगे तो किसी के पास जाकर दास-दासियाँ बनेंगे। क्या शिवबाबा के पास दास-दासी बनेंगे?''

सा.बाबा 11.05.10 रिवा.

''अभी तुम पढ़ते हो स्वर्ग के प्रिन्स-प्रिन्सेज बनने के लिए। प्रिन्स-प्रिन्सेज का जब स्वयंवर होता है, तब फिर नाम बदलता है। ... अमर कथा सुनाकर बाप तुमको अमरपुरी का मालिक बनाते हैं। ... ये बड़ी समझने की बातें हैं। जितना समझेंगे और औरों को समझायेंगे, उतना प्रजा बनती जायेगी और तुम ऊंच पद पायेंगे।''

सा.बाबा 23.10.10 रिवा.

सतयुग-त्रेता की राजाई और द्वापर-कलियुग की राजाई में अन्तर

सतयुग-त्रेता की राजाई ज्ञान-योग, धारणा और सेवा के आधार पर होती है, इसलिए उसको ज्ञान मार्ग कहा जाता है परन्तु वहाँ ज्ञान स्पष्ट नहीं होता है। सतयुग-त्रेता की राजाई का विस्तार विश्व-नाटक के विधि-विधान के अनुसार जनसंख्या वृद्धि और समय के परिवर्तन के साथ स्वत: होता है परन्तु विश्व-नाटक के विधि-विधान अनुसार आत्मिक शक्ति कम होती जाती है और स्थूल प्रकृति में भी सतोप्रधानता से तमोप्रधानता के सिद्धान्त अनुसार कलायें उतरती जाती हैं, जिससे सुख-शान्ति की स्थिति में गिरावट अवश्य आती जाती है। सतयुग-त्रेता की राजाई कल्प के संगमयुग पर परमपिता परमात्मा की श्रीमत पर किये गये संकर्मों के फलस्वरूप नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार परमात्मा पिता से वर्से के रूप में प्राप्त होती है।

द्वापर-कलियुग की राजाई की स्थापना दान-पुण्य के आधार पर होती है और विस्तार लड़ाई आदि के आधार पर होता है। सतोप्रधानता से तमोप्रधानता का सिद्धान्त यहाँ भी प्रभावित होता है, जिससे दिन-प्रतिदिन दुख-अशान्ति बढ़ती जाती है। द्वापर-कलियुग की राजाई में कर्म और फल का सिद्धान्त लागू होता है। यह सिद्धान्त सतयुग-त्रेता की राजाई में भी लागू होता है परन्तु वहाँ कर्म संगमयुग पर करते हैं, फल सतयुग में मिलता है। द्वापर-कलियुग में हर जन्म में कर्म और फल का विधि-विधान चलता है।

सतयुग-त्रेता की राजाई में धर्म-सत्ता और राज्य-सत्ता एक के ही हाथों में होती है परन्तु द्वापर-कलियुग में दोनों सत्तायें अलग-अलग हाथों में होती है, जिससे राज्य-सत्ता पर धर्म-सत्ता का अंकुश न होने के कारण चारित्रिक पतन होता है, राजा-प्रजा दोनों विकारों के वशीभूत विकर्मों में प्रवृत्त होते जाते हैं, जिससे विभिन्न प्रकार से दुख-अशान्ति बढ़ती जाती है।

सतयुग-त्रेता में एक ही धर्म और एक ही चक्रवर्ती राजा के अन्तर्गत सारा विश्व होता है परन्तु द्वापर-कलियुग में कोई चक्रवर्ती राजा नहीं होता है, इसलिए विभिन्न धर्म और विभिन्न राजाइयाँ होती हैं, जिनके बीच में अनेक प्रकार के मतभेद भी होते हैं, इसलिए सभी अपने-अपने मत पर चलते हैं।

सतयुग-त्रेता की राजाई परमपिता परमात्मा के द्वारा सीधे स्थापन होती है, परन्तु द्वापर-कलियुग की राजाई की स्थापना में परमपिता परमात्मा का सीधे कोई हाथ नहीं होता है, परन्तु धर्म-कर्म राजाई का आधार अवश्य होता है।

सतयुग-त्रेता की राजाई में एक चक्रवर्ती राजा होता है और समकक्ष अर्थात् समानान्तर अन्य राजाइयाँ भी होती हैं परन्तु कोई किसकी राजाई में हस्तकक्षेप नहीं करता है

और न ही कोई किसकी राजाई को हड़पने की कोशिश करता है। सब एक-दूसरे के सहयोगी होते हैं। परन्तु द्वापर-कलियुग में विकारों के वशीभूत होने के कारण ये सब होता है, जिससे युद्धादि होते हैं, जो राजा-प्रजा दोनों के लिए दुख-अशान्ति का कारण बनता है।

सतयुग-त्रेता की राजाई में एक-धर्म, एक-राज्य, एक-भाषा होती है, परन्तु द्वापर-कलियुग की राजाई में अनेक राज्य, अनेक धर्म और अनेक भाषायें होती हैं, जिसके आधार परस्पर बहुत मन-मुटाव होता है।

सतयुग-त्रेता, द्वापर-कलियुग की राजाई में भक्ति और ज्ञान

सतयुग-त्रेता की राजाई में भक्ति और ज्ञान दोनों यथार्थ रीति नहीं होते हैं। भले सतयुग-त्रेता की राजाई परमात्मा के द्वारा दिये गये यथार्थ ज्ञान के आधार पर स्थापन होती है परन्तु सतयुग-त्रेता में ज्ञान स्पष्ट नहीं होता है। वहाँ दुख-अशान्ति होती नहीं है, राजा-प्रजा सब सुख-शान्ति सम्पन्न होते हैं, इसलिए वे न भगवान को जानते हैं और न जानने की आवश्यकता अनुभव करते हैं, इसलिए वहाँ भक्ति आदि भी नहीं होती है। द्वापर-कलियुग की राजाई में राजा-प्रजा दोनों में यथार्थ ज्ञान न होने के कारण दोनों के कर्म-संस्कार गिरते हैं, जिससे विकर्म होते हैं और उसके फलस्वरूप दुख-अशान्ति होती है, उससे मुक्त होने के लिए विभिन्न प्रकार से पुरुषार्थ करते हैं भक्ति मार्ग में भक्ति करते हैं परन्तु यथार्थ ज्ञान नहीं होता है, इसलिए उसको अन्धश्रद्धा की भक्ति कहा जाता है। भले द्वापर-कलियुग में भक्ति करते हैं और ज्ञान की ओर आकर्षण होती है, उसके लिए परमात्मा को जानने का पुरुषार्थ करते हैं, उनको याद करते हैं। पुकारते हैं - हे ज्ञान के सागर, पतित-पावन आकर हमको ज्ञान दो, रास्ता बताओ, मुक्ति दो, परन्तु परमात्मा को जानते नहीं हैं। द्वापर-कलियुग में राजा-प्रजा दोनों में यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान नहीं होता है और दोनों की आत्मिक शक्ति क्षीण होने के कारण देहाभिमान के वशीभूत विकर्म होते हैं, जिससे दुख-अशानति होती है और उससे मुक्त होने के कारण किसी न किसी रूप में भक्ति करते ही हैं। द्वापर युग में सबसे पहले भक्ति का आरम्भ राजा विक्रमादित्य ने ही किया और विश्व प्रसिद्ध सोमनाथ का मन्दिर बनाया। तत्पश्चात और भी मन्दिर आदि बनें।

‘‘बाप तुम बच्चों को ज्ञान की रोशनी देते हैं, उससे तुम्हारा ताला खुलता जाता है। ... बाप कहते हैं - मैं एक-एक की बुद्धि का ताला खोलूँ तो सबकी बुद्धि का ताला खुल जाये और सब

महाराजा-महारानी बन जायें। हम कैसे सबका ताला खोलेंगे। ... ड्रामा अनुसार समय पर ही सबकी बुद्धि का ताला खुलेगा। ड्रामा के ऊपर ही सारा मदार है।''

सा.बाबा 19.07.10 रिवा.

''जब अभी से ऐसे श्रेष्ठ संस्कार अपने में भरेंगे, तब तो ऐसे हाइएस्ट पद को प्राप्त करेंगे, जो सतयुग में प्रजा स्वमान से झुकेगी और द्वापर में भिखारी होकर झुकेंगे। आप लोगों के यादगारों के आगे भक्त भी झुकते हैं ना। ... जो अपनी ही रची हुई परिस्थिति के आगे झुक जाते हैं, उनको हाइएस्ट कहेंगे ? जब तक हाइएस्ट नहीं बने हो, तब तक होलीएस्ट भी नहीं बन सकते हो।''

अ.बापदादा 9.05.72

''थोड़ा भी ज्ञान सुना तो स्वर्ग में जरूर आयेंगे, फिर है हर एक के पुरुषार्थ पर। ... तुम सब आपही अपने को राजतिलक देते हो, तो अपनी आपही जाँच करनी है और पुरुषार्थ कर तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है।... तुम्हारे तो रोमांच खड़े हो जाने चाहिए। बेहद का बाप मिला है, उनकी सर्विस में मददगार बनना है। अन्धों की लाठी बनना है। जितना जास्ती बनेंगे, उतना अपना ही कल्याण होगा।''

सा.बाबा 18.10.10 रिवा.

''अभी तुमको 21 जन्मों के लिए बेहद के बाप का वर्सा मिलता है। भक्ति में बहुत दान-पुण्य करते हैं तो राजा के पास जन्म लेते हैं, सो भी अल्पकाल के लिए। तुम्हारी तो 21 जन्मों की गॉरण्टी है। वहाँ यह पता नहीं पड़ेगा कि हम बेहद के बाप से यह वर्सा लेकर आये हैं। यह ज्ञान इस समय ही तुमको मिलता है, तो कितना अच्छी रीति पुरुषार्थ करना चाहिए।''

सा.बाबा 18.10.10 रिवा.

''जयपुर में हठयोगियों का म्युज़ियम भी है, वहाँ राजयोग के चित्र हैं नहीं। राजयोग के चित्र हैं ही यहाँ देलवाड़ा में। ... राजयोग का मन्दिर यहाँ भारत में ही है। यह है चेतन्य। तुम यहाँ चेतन्य में बैठे हो। ... देलवाड़ा मन्दिर पूरा यादगार है। नीचे तपस्या में बैठे हैं, ऊपर में स्वर्ग दिखाया है।''

सा.बाबा 11.10.10 रिवा.

''तुम बच्चों ने भी भक्ति मार्ग में बहुत पैसे बरबाद किये हैं। यह भी ड्रामा का पार्ट है, जो तुमको धक्का खाना पड़ता है। यह है ही ज्ञान और भक्ति का खेल। अभी तुम बच्चों को सारी समझ मिली है। ज्ञान से सुख का रास्ता, सतयुग की राजाई मिलती है। ... अभी तुम जानते हो हम स्वर्गवासी बनने के लिए स्वर्ग की स्थापना करने वाले बाप के पास बैठे हैं।''

सा.बाबा 18.10.10 रिवा.

सतयुग-त्रेता एवं द्वापर-कलियुग की राजाई और मुक्ति-जीवनमुक्ति

सतयुग-त्रेता की राजाई जीवनमुक्त आत्माओं के द्वारा चलती है अर्थात् राजा-प्रजा दोनों ही जीवनमुक्त होते हैं। सतयुग-त्रेता की राजाई में देवी-देवता धर्म की आत्मायें ही होती हैं, जिनको परमात्मा के द्वारा जीवनमुक्ति का वर्सा मिला हुआ होता है। सतयुग-त्रेता की राजाई में राजा-प्रजा दोनों ही जीवनमुक्त होते हैं। सभी आत्मायें पहले मुक्ति में जाती हैं, फिर राजाई में आकर जीवनमुक्ति के सुख का उपभोग करती हैं। उस समय अन्य धर्मो की आत्मायें मुक्तिधाम में रहती हैं क्योंकि उनको परमात्मा के द्वारा मुक्ति का वर्सा मिलता है।

सतयुग के आदि में देवी-देवता धर्म की सभी आत्मायें एक साथ नहीं आती हैं, इसलिए उनमें से भी बहुत सी आत्मायें मुक्ति की स्थिति में मुक्तिधाम में ही रहती हैं, फिर जब उनका समय होता है, तब आकर राजाई करती हैं।

द्वापर-कलियुग की राजाई जब होती है, तब विश्व में जीवनमुक्त आत्मायें भी होती हैं और जीवन-बन्ध वाली आत्मायें भी होती हैं क्योंकि परमात्मा द्वारा सभी आत्माओं को मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा मिलता है, उसमें किसको मुक्ति का अधिक समय और किसको जीवनमुक्ति का अधिक समय होता है, परन्तु जो भी आत्मा परमधाम से इस धरा पर पार्ट बजाने आती है, तो वह पहले जीवनमुक्ति में होती है, फिर जीवनबन्ध में आती है।

सतयुग-त्रेता की राजाई में सभी जीवनमुक्त ही होती हैं, परन्तु द्वापर-कलियुग की राजाई में जीवनमुक्त और जीवनबन्ध दोंनों प्रकार की आत्मायें होती हैं, इसलिए आत्माओं को दुख-सुख दोनों होता है। इसी के कारण आज भी किन्हीं आत्माओं को जब ज्ञान के विषय में बताते हैं, तो वे कहते हैं, हम तो यहीं स्वर्ग में हैं अर्थात् उनका अभी जीवनमुक्ति का समय चल रहा है।

सतयुग-त्रेता की राजाई और धर्मसत्ता-राजसत्ता का सन्तुलन

सतयुग-त्रेता की राजाई और धर्मसत्ता-राजसत्ता का सम्बन्ध

सतयुग-त्रेता की राजाई में धर्म-सत्ता और राज-सत्ता एक ही हाथों में होती है, इसलिए राजा और प्रजा के सभी कर्म यथार्थ होते हैं। राजा-प्रजा दोनों में दैवी गुणों की धारणा होती है। दोनों में परस्पर सद्भाव होता है, इसलिए राज्य में सर्वत्र सुख-शान्ति होती है, प्रकृति भी मनवांछित फल देने वाली होती है। राजा में धर्म और राज्य दोनों प्रकार की शक्तियों का

सन्तुलन होता है, इसलिए राजा सत्ता के मद में धर्मान्ध नहीं होता है। धर्म और राज्य दोनों साथ होने के कारण राजा में राज-सत्ता का अहंकार नहीं होता है राजा को धर्म की अधीनता भी नहीं होती है। दोनों एक-दूसरे के सहयोगी होते हैं, इसलिए राज्य में दोनों कार्य स्वभाविक चलते हैं और विधि-विधान से चलते हैं। राजा को धर्म का दिशा-निर्देश मिलता है और धर्म को राज्य-सत्ता से सुरक्षा मिलती है, सहयोग मिलता है। इसलिए ही गायन है -Religion is might.

''रिलीजन इज़ माइट कहा जाता है अर्थात् रिलीजन में ताक़त है। अब सबसे जास्ती किस रिलीजन में ताकत है ? ... जो कुछ ताक़त है, वह ब्राह्मण धर्म में ही है। और कोई रिलीजन में कोई ताक़त नहीं है। तुम ब्राह्मण हो, ब्राह्मणों को ताक़त मिलती है बाप से, जिससे तुम विश्व के मालिक बनते हो। ... एक बाप को ही याद करने से ताक़त मिलती है।''

सा.बाबा 13.09.10 रिवा.

''स्वर्ग में तो किंगडम थी, सभी मनुष्य रिलीजियस, राइटियस थे। कितना बल था, विश्व के मालिक थे। अभी फिर मालिक बनने का पुरुषार्थ कर रहे हो। ... तुम ब्राह्मणों का कर्तव्य है भ्रमरी के मिसल कीड़ों को भूँ-भूँ कर आप समान बनाना और तुम्हारा पुरुषार्थ है सर्प के मिसल पुरानी खाल छोड नई लेना अर्थात् देहाभिमान को छोड़कर देही-अभिमानी बनना।''

सा.बाबा 27.07.10 रिवा.

''याद में ही मेहनत है। याद से आत्मा पवित्र बनेगी, अविनाशी ज्ञान धन भी जमा होगा। फिर अगर अपवित्र बन जाते हैं तो सारा ज्ञान बह जाता है। पवित्रता ही मुख्य है। ... तुम्हारे में कितनी ताक़त रहती है। तुमको घर बैठे सुख मिल जाता है। तुम सर्वशक्तिवान बाप से इतनी ताक़त लेते हो, जो विश्व का मालिक बन जाते हो। सन्यासियों में भी पहले ताक़त थी, जंगलों में रहते थे।''

सा.बाबा 25.10.10 रिवा.

''सोचना चाहिए - जो बात स्वयं को प्रिय नहीं लगती है, वह बाप को प्रिय कैसे लग सकती है। ... अपने आपसे पूछो कि कहाँ तक प्रीत की रीति निभाने वाले बने हैं। अपने को सदा हाइएस्ट और होलीएस्ट समझकर चलते हो ? जो स्वयं को हाइएस्ट समझकर चलते हैं, उनका एक-एक कर्म, एक-एक बोल इतना ही हाइएस्ट होता है, जितना बाप का हाइएस्ट अर्थात् ऊंच ते ऊंच है।''

अ.बापदादा 9.05.72

''जो हाइएस्ट स्थिति में हैं, वे कोई भी नीचाई का कार्य कर ही नहीं सकते। जैसे जो महान् आत्मा बनते हैं, वे कभी भी किसी के आगे झुकते नहीं हैं। उनके आगे सभी झुकते हैं, तब उनको महान् आत्मा कहा जाता है। तो जो आजकल के महान् आत्माओं से भी महान्, श्रेष्ठ आत्मायें हैं, बाप की चुनी हुई आत्मायें हैं, विश्व के राज्य के अधिकारी हैं, बाप के वर्से के

अधिकारी हैं, विश्व-कल्याणकारी हैं ... वे किसी परिस्थिति में वा माया के किसी आकर्षण में अपने को झुका सकते हैं? वे कहाँ किसी रीति झुक नहीं सकती हैं।''

अ.बापदादा 9.05.72

दैवी राजाई, देवी-देवता धर्म और विभिन्न धर्म और राज्य सत्तायें

कल्पान्त में जब परमपिता परमात्मा आकर दैवी राजाई की स्थापना करते हैं, जब सारे विश्व में प्रजातन्त्र होता है और विभिन्न धर्म होते हैं, उन सब धर्मों से आत्मायें परमात्मा के साथ आकर दैवी राजाई की स्थापना में सहयोगी बनती हैं और जो सहयोगी बनते हैं, वे ही उसके अधिकारी बनते हैं। इसलिए बाबा कहते हैं - सब धर्म वालों को बाबा का सन्देश दो। दैवी राजाई में देवी-देवता धर्म होता है अर्थात् दैवी राजाई धर्म के आधार पर स्थापन होती है, इसलिए उसमें किसी प्रकार की लड़ाई आदि की आवश्यकता नहीं होती है।

''राजधानी जरूर स्थापन होनी है। जो हमारे धर्म के होंगे, वे समझेंगे जरूर। जो देवी-देवता धर्म के नहीं हैं, वे कब समझेंगे नहीं। ... इसलिए तुमको न विकार में जाना है और न किसी से लड़ना-झगड़ना है। तुम्हारा ब्राह्मण धर्म बहुत ऊंच है। ... तुम्हारा काम है सबको मैसेज देना कि अपने को आत्मा समझ, बाप को याद करो।''

सा.बाबा 26.07.10 रिवा.

''आगे चलकर सभी समझ जायेंगे कि आदि सनातन धर्म के देवी-देवताओं की राजधानी जरूर स्थापन होनी है। ... अभी तुम बच्चे रोशनी में हो, और सभी मनुष्य रात में धक्के खाते रहते हैं। यह भी साक्षी होकर बुद्धि में धारण करना है। सेकेण्ड बाई सेकेण्ड सृष्टि का चक्र फिरता रहता है। एक दिन न मिले दूसरे से। हर समय सीन बदलती रहती है। इस समय टोटल है दुख की सीन।''

सा.बाबा 17.07.10 रिवा.

''यह सृष्टि एक बड़ा झाड़ है। बाप कितना अच्छी रीति इसका राज़ समझाते हैं। तुम्हारा ये झाड़ कितना अच्छी समझ से बनाया हुआ है, जो कोई भी झट समझ जायेगे कि हम किस धर्म के हैं। हमारा धर्म किसने स्थापन किया? ... यह सब ड्रामा में नूँध है, फिर भी होगा 5000 वर्ष के बाद। यह चक्र शुरू से कैसे रिपीट होता है, यह अभी तुम जानते हो।''

सा.बाबा 13.08.10 रिवा.

''अभी तुम्हारी बुद्धि में सारा सृष्टि-चक्र बैठा हुआ है। तुमको सब धर्मों की नॉलेज है। जैसे वहाँ रूहों का सिजरा है, यहाँ फिर है मनुष्यात्माओं का सिजरा, ग्रेट-ग्रेट ग्राण्ड फादर ब्रह्मा है।

... तुम राजाओं का राजा बनते हो, और कोई खण्ड में राजाओं के राजा नहीं होते हैं... भारत में ही अपवित्र राजायें, पवित्र राजाओं के मन्दिर बनाकर पूजा करते हैं।''

सा.बाबा 1.07.10 रिवा.

''जिसने 84 जन्म नहीं लिये होंगे, वह यहाँ ठहरेगा ही नहीं, उसकी बुद्धि में यह ज्ञान बैठेगा ही नहीं। उससे समझा जाता है कि यह देवी-देवता धर्म का नहीं है।... अभी भगवान आकर किंगडम स्थापन करते हैं। हर एक अपने पुरुषार्थ अनुसार उसमें पद पाते हैं। साक्षी होकर हर एक के पुरुषार्थ को देखा जाता है।''

सा.बाबा 29.05.10 रिवा.

''परिवार को छोड़ दिया तो एक तरफ ढीला हो गया। बिना परिवार के माला में कैसे आयेंगे ? माला तब बनती है, जब दाना, दाने से मिलता है और एक ही धागे में पिरोये हुए होते हैं। ... ब्राह्मण जीवन में यही न्यारापन है कि धर्म और राज्य दोनों की स्थापना होती है, सिर्फ धर्म की नहीं। और धर्म पितायें सिर्फ धर्म की स्थापना करते हैं। बाप की विशेषता है धर्म और राज्य दोनों की स्थापना करना। ... राजा के साथ राजधानी भी चाहिए। तो राजधानी अर्थात् ब्राह्मण परिवार सो राज परिवार।''

अ.बापदादा 9.01.95

''अभी आदि सनातन देवी-देवता धर्म का फाउण्डेशन लग रहा है और सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी दोनों राजाई स्थापन हो रही हैं। जो अच्छी रीति मेहनत करेंगे, वे सूर्यवंशी बनेंगे। और धर्म-स्थापक जो आते हैं, वे आते ही हैं अपने धर्म की स्थापना करने। पीछे उस धर्म की आत्मायें आती रहती हैं और धर्म की वृद्धि होती जाती है। तुम्हारा बीजरूप है शिवबाबा।''

सा.बाबा 25.10.10 रिवा.

''गीता के आदि और अन्त में है - मन्मनाभव। ... तुम राजा बनने के लिए पुरुषार्थ करते हो। और धर्म वालों को तो अपने धर्म-स्थापक के पिछाड़ी में आना पड़ता है। उसमें राजा बनने के पुरुषार्थ की बात नहीं है। एक ही गीता शास्त्र है, जिसकी बहुत महिमा है। बाप भारत में ही आकर गीता ज्ञान सुनाते हैं और सबकी सद्गति करते हैं। गीता में ही है राजयोग की बात।''

सा.बाबा 20.10.10 रिवा.

''अभी तुम बच्चे बाबा की श्रीमत पर विश्व में अपना राज्य स्थापन करते हो। तुम दैवीगुण धारण करते हो, इसलिए तुम्हारा ही पूजन होता है। ... और सब धर्म वालों को पता है कि उनका धर्म कब और किसने स्थापन किया, इसलिए वहाँ ब्लाइण्ड फेथ की बात नहीं है। भारतवासियों को कुछ पता नहीं है कि उनका धर्म कब और किसने स्थापन किया, इसलिए कहा जाता है ब्लाइण्ड फेथ।''

सा.बाबा 20.10.10 रिवा.

सतयुगी राजाई और राजयोग / सतयुग की राजाई और पुरुषार्थ

सतयुग-त्रेता की राजाई की स्थापना परमपिता परमात्मा राजयोग की पढ़ाई के द्वारा करते हैं, उस पढ़ाई में जो जितना पुरुषार्थ करते हैं, उस अनुसार राजाई पाते हैं अर्थात् राजाई में ऊंच पद पाते हैं। सतयुग-त्रेता की राजाई परमपिता परमात्मा की श्रीमत पर स्थापन होती है और जो आत्मायें जितना श्रीमत पर चलकर उस अनुसार पुरुषार्थ करते हैं, वे उस अनुसार राजपद पाते हैं। जो आत्मायें साकार में आये परमात्मा के साकार में बच्चे बनते हैं, सहयोगी बनते हैं, उनको परमात्मा स्वर्ग का वर्सा जन्मसिद्ध अधिकार के रूप में देता है परन्तु उस राजाई में पद हर आत्मा को उसके अपने पुरुषार्थ अनुसार ही मिलता है क्योंकि यह विविधतापूर्ण ड्रामा है, जिसमें पुरुषार्थ की बड़ महत्वपूर्ण भूमिका है। ज्ञान सागर परमात्मा राजाई स्थापन के साथ उसके पुरुषार्थ और प्रालब्ध के विधि-विधान को भी स्पष्ट रूप में बताते हैं। जो आत्मायें उन विधि-विधानों को समझकर जैसा पुरुषार्थ करते हैं, वे उस अनुसार सतयुग-त्रेता की राजाई में राजपद पाते हैं।

''तुम बच्चे अपने ही पुरुषार्थ से आपही अपने को राजतिलक देते हो। ग़रीब निवाज़ बाबा स्वर्ग का मालिक बनाने आये हैं लेकिन बनेंगे तो अपनी ही पढ़ाई से, कृपा या आशीर्वाद से नहीं। टीचर का तो पढ़ाना धर्म है। कृपा की बात नहीं।''

सा.बाबा 21.09.10 रिवा.

''जो महाराजा-महारानी बनेंगे, विजयमाला का दाना बनेंगे, उनको ही अन्त में मुबारक मिलेगी। उनकी ही पूजा होती है। ... बाप ने तुमको सारा हिसाब समझाया है। सब पुरुषार्थ करने लग पड़ें तो सब स्वर्ग में आ जायें, यह भी हो नहीं सकता। अभी तुम पुरुषार्थ करते हो स्वर्ग के लिए। अब जो हमारे धर्म वाले हैं, उनको कैसे निकालें।''

सा.बाबा 27.09.10 रिवा.

''बाबा कितनी प्वाइन्ट्स देते हैं, अगर वे सब बच्चों की बुद्धि में अच्छी रीति याद रहें, तो बहुत खुशी में रहेंगे। परन्तु बच्चे बाप को याद करने के बदले और दुनियावी बातों में पड़ जाते हैं। सदैव यह याद रहनी चाहिए कि हम श्रीमत पर अपना राज्य स्थापन कर रहे हैं।... बाप हमको राजाई के लिए राजयोग और ज्ञान पढ़ा रहे हैं।''

सा.बाबा 17.9.10 रिवा.

''विश्व की बादशाही लेते हो तो कुछ मेहनत तो करनी पड़ेगी। माया के विघ्न भी पड़ेंगे। इसमें सहनशीलता बहुत चाहिए। ... वह भी समय आयेगा, जो तुम बाहर भी नहीं निकल सकेंगे। दिन-प्रतिदिन जमाना बिगड़ता जाता है और बिगड़ना ही है।'' सा.बाबा 18.09.10 रिवा.

''अभी यह सारी राजधानी स्थापन हो रही है। राजा-रानी के साथ दास-दासियाँ भी चाहिए ना। ... ऐसा थोड़ेही कि ढीला पुरुषार्थ करना चाहिए, जो वहाँ जाकर दास-दासी बनें। ... बाबा बार-बार हर एक बात किलियर कर समझाते रहते हैं, जो फिर कोई ऐसे न कहे कि फलानी बात पर तो हमको समझाया नहीं।'' सा.बाबा 31.07.10 रिवा.

''बच्चे जानते हैं अभी हम श्रीमत पर अपनी राजधानी स्थापन कर रहे हैं। तुम हो रुहानी सेना। अभी फिर से सारे विश्व पर फिर अपना दैवी राज्य स्थापन कर रहे हैं श्रीमत पर। कल्प-कल्प हमारा यह पार्ट चलता है। ... तुम हो डबल अहिंसक रुहानी सेना। तुमको यही ख्याल है कि हम अपना राज्य कैसे स्थापन करें। ड्रामा करायेगा जरूर, फिर भी पुरुषार्थ तो करना ही होता है।'' सा.बाबा 26.07.10 रिवा.

''बाप अपकारियों पर भी उपकार करते हैं, ऐसे तुम भी फॉलो फादर करो। इसका भी यथार्थ रीति अर्थ समझना है। ... अभी तुम ख्याल करो - हम क्या थे, अभी क्या बने हैं और क्या बनने वाले हैं। अभी हम विश्व का मालिक बनते हैं, ख्याल-ख्वाब में भी नहीं था।''

सा.बाबा 22.07.10 रिवा.

''आज तुम पढ़ रहे हो, कल शरीर छोड़कर राजाई में जाकर जन्म लेंगे। ... एम एण्ड आब्जेक्ट ही प्रिन्स-प्रिन्सेज बनने की। राजयोग है ना। ... कोई कहते हैं ईश्वरीय ताक़त है तो सबको बादशाह बना दें। परन्तु सब बादशाह बन जायें तो प्रजा कहाँ से आयेगी। यह समझ की बात है ना।'' सा.बाबा 25.06.10 रिवा.

''सब थोड़ेही राजा बनेंगे। अरे तुम सबका चिन्तन क्यों करते हो। स्कूल में पढ़ाई पढ़ने वाले ऐसा थोड़ेही सोचते हैं, वे पढ़ने लग पड़ते हैं। यह भी पढ़ाई है। हर एक के पुरुषार्थ से समझा जाता है कि यह क्या पद पाने वाले हैं।'' सा.बाबा 18.06.10 रिवा.

''बाप आये हैं बच्चों को राजाई देने के लिए, तो बच्चों को कितना ना पुरुषार्थ करना चाहिए। ... शिवबाबा भी बिन्दी है, हम आत्मायें भी बिन्दी हैं। यहाँ आये हैं पार्ट बजाने के लिए। अब पार्ट पूरा होता है, अब घर वापस जाना है।'' सा.बाबा 25.05.10 रिवा.

''तुम जानते हो 5000 वर्ष पहले भी हमको बाप से बादशाही मिली थी, अभी फिर से दैवी राजधानी स्थापन हो रही है। इस पढ़ाई से ही हम उस राजधानी में जाते हैं। सारा मदार है पढ़ाई पर। पढ़ाई और धारणा से ही बाप समान !बनेंगे। ... जितना जास्ती धारणा करेंगे, उतना जास्ती मीठा बनेंगे।'' सा.बाबा 17.03.68

''कल्प-कल्प मैं आकर कहता हूँ कि मामेकम् याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। दिल में आना चाहिए कि हम बेहद के बाप के पास आये हैं। ... हम उनसे मिलने जाते हैं, जिनसे हम

विश्व के मालिक बनते हैं। अन्दर में कितनी बेहद की खुशी होनी चाहिए।''

सा.बाबा 18.05.10 रिवा.

''यह भी जानते हैं कि राजाई पद पाने वाले कोटों में कोई ही निकलते हैं। उनमें भी 8 रतन मुख्य गाये जाते हैं। ... 8 हैं पास विद् ऑनर, उनमें भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार हैं। देहाभिमान तोड़ने में बड़ी मेहनत लगती है। बिल्कुल देह का भान निकल जाये। ... कोई कोई पक्के ब्रह्मज्ञानी होते हैं, जो बैठे-बैठे देह का त्याग कर देते हैं। वायुमण्डल एकदम शान्त हो जाता है। वे अक्सर करके प्रभात के समय शुद्ध समय पर शरीर छोड़ते हैं।''

सा.बाबा 26.10.10 रिवा.

''जो इस देवी-देवता धर्म के होंगे, वे सब आकर फिर से अपना वर्सा लेंगे। अभी सेपलिंग लग रही है। किसके पुरुषार्थ से तुम समझ जायेंगे कि यह ऊंच पद पाने वाला है, यह इतना ऊँच पद पाने के लायक नहीं है। ... यह राजाई स्थापन हो रही है। बाप कहते हैं - मैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूँ। राजा बनना है तो प्रजा भी जरूर बनानी पड़े। नहीं तो राज्य कैसे पायेंगे।''

सा.बाबा 25.10.10 रिवा.

कल्पान्त का राज-व्यवस्था और कल्प के आदि का राज - राज व्यवस्था

कल्पान्त का राज-व्यवस्था प्रजातन्त्र है और कल्प के आदि का राज-व्यवस्था राजशाही है अर्थात् Kingdomship है। संगमयुग की राज-व्यवस्था स्वराज्य अधिकारीपन की है अर्थात् आत्मा अपने आत्मिक सवरूप में स्थित हो स्थूल-सूक्ष्म कर्मेन्द्रियों पर शासन करती है। ये आत्मा का अपनी कर्मेन्द्रियों पर शासन ही भविष्य में राजाई प्राप्त करने का आधार है। सतयुग-त्रेता की राजाई में राजा-प्रजा, प्रकृति तीनों सतोप्रधान या सतो-सामान्य होते हैं, इसलिए वहाँ का हर कार्य नियमानुसार चलता है, जो आत्माओं को सुख-शान्ति देने वाला होता है। कल्पान्त के राजतन्त्र अर्थात् प्रजातन्त्र में राजा-प्रजा दोनों स्वार्थी होते हैं, दोनों अपने हित को प्रधान रखकर ही कार्य करते हैं, जिसके कारण परस्पर वैमनस्य रहता है, दोनों ही धर्म-भ्रष्ट, कर्म-भ्रष्ट होते हैं, इसलिए दोनों ही दुख-अशान्ति में रहते हैं। दोनों एक-दूसरे पर दोषारोपण करते रहते हैं, जिससे राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, आशा-आकांक्षाओं के कारण व्यर्थ चिन्तन होता है, जिससे आत्मिक शक्ति का ह्रास होता है, राज्य-कारोबार में अनेक प्रकार के व्यवधान पड़ते हैं, जिसमें राजा-प्रजा दोनों का समय और शक्ति

नष्ट होती है।

सतयुग-त्रेता के राजतन्त्र में न किसी आत्मा में कोई दोष होता है, न किसकी दोष-दृष्टि होती है, इसलिए कोई किस पर दोषारोपण नहीं करते हैं, सब धर्म-कर्म श्रेष्ठ होते हैं, इसलिए सर्वत्र सुख-शान्ति रहती है। कल्पान्त के प्रजातन्त्र में प्रकृति भी तमोप्रधान होती है, इसलिए वह भी आत्माओं को उनके कर्मानुसार दुख देती है। जबकि सतयुग में प्रकृति दासी होती है और आत्माओं के सुख के लिए सब साधन प्रदान करती है।

''सतयुग से त्रेता अन्त तक 16,108 प्रिन्स-प्रिन्सेज की माला है। जो जितना पुरुषार्थ करेंगे, उस अनुसार नम्बरवार आयेंगे।... तुम बच्चों की बुद्धि में है - अभी हमको यह पुराना शरीर छोड़कर घर जाना है। यह भी याद रहे तो पुरुषार्थ तीव्र हो जायेगा।''

सा.बाबा 17.05.10 रिवा.

सतयुग-त्रेता की राजाई, योगबल और भोगबल

राजतन्त्र और योगबल-भोगबल का सम्बन्ध

सतयुग-त्रेता में योगबल और भोगबल दोनों ही नहीं होते हैं। सतयुग-त्रेता की राजाई परमात्मा योगबल के द्वारा स्थापन कराते हैं, जो राजाई आधा कल्प तक चलती है। सतयुग-त्रेता की वह राजाई संगमयुग पर किये गये योगबल के पुरुषार्थ का फल है अर्थात् परमात्मा का वर्सा है। वहाँ न योग का ज्ञान है और न योगबल है। योगबल संगमयुग पर ही होता है, जब परमात्मा सतयुग की राजाई स्थापन करने के लिए राजयोग सिखाते हैं।

सतयुग-त्रेता सन्तान भी योगबल अर्थात् आत्मिक शक्ति से होती है, भोगबल से नहीं, इसलिए वहाँ भोगबल भी नहीं होता है। विचारणीय है कि योगबल अलग बात है और आत्मिक शक्ति अलग बात है। परमात्मा के साथ योग लगाने से अर्थात् योगबल से आत्मा की सुसुप्त शक्ति जागृत होती है, जो आधा कल्प तक सफलता पूर्वक कार्य करती है अर्थात् उसका देह की शक्ति पर शासन होता है। परन्तु ड्रामा के विधि-विधान अनुसार आधा कल्प के बाद जब आत्मिक शक्ति कम हो जाती है, तब उस पर देहाभिमान की शक्ति प्रभावित हो जाती है और भोगबल से ही सन्तान आदि का जन्म होता है। इसलिए कहेंगे कि द्वापर-कलियुग के राजतन्त्र में भोगबल से अर्थात् देहाभिमान के द्वारा सारे कार्य होते हैं।

''अभी बाप से वर्सा मिलता है। वर्सा बहुत ऊंच है। विश्व की बादशाही मिलती है, कम बात है! स्वप्न में भी किसको नहीं होगा कि हमको पढ़ाई से, योग से विश्व की बादशाही मिल सकती है।

... बाप विश्व का मालिक बनाते हैं, हमारा भाग्य खोलते हैं, सौभाग्यशाली बनाते हैं। ... तुमको फिर से सौभाग्यशाली बनाने के लिए पढ़ाया जाता है।''

सा.बाबा 13.04.10 रिवा.

''जब कोई छी-छी नहीं रहेगा, तब कृष्ण आयेगा। तब तक तुम आते-जाते रहेंगे। कृष्ण को रिसीव करने वाले माँ-बाप भी पहले से चाहिए ना। फिर सब अच्छे-अच्छे रहेंगे, बाकी सब चले जायेंगे, तब ही उसको स्वर्ग कहा जायेगा। तुम कृष्ण को रिसीव करने वाले रहेंगे। भल तुम्हारा छी-छी जन्म होगा क्योंकि रावण राज्य है ना। शुद्ध जन्म तो हो न सके। गुल-गुल जन्म पहले-पहले कृष्ण का ही होता है।''

सा.बाबा 25.10.10 रिवा.

''अभी शुद्ध जन्म तो हो न सके। गुल-गुल जन्म पहले-पहले कृष्ण का ही होता है। उसके बाद ही नई दुनिया बैकुण्ठ कहा जाता है। कृष्ण बिल्कुल गुल-गुल नई दुनिया में आयेंगे। रावण सम्प्रदाय बिल्कुल खत्म हो जायेगी। कृष्ण का नाम उनके माँ-बाप से भी बहुत बाला है। ... कृष्ण से पहले जिनका भी जन्म होता है वह योगबल से जन्म नहीं कहेंगे। ऐसे नहीं कि कृष्ण के माँ-बाप ने योगबल से जन्म लिया है। नहीं, अगर ऐसा होता तो उनका भी नाम बाला होता। तो सिद्ध होता है कि उनके माँ-बाप ने इतना पुरुषार्थ नहीं किया है, जितना कृष्ण ने किया है। तुम ये सब बातें आगे समझते जायेंगे।''

सा.बाबा 25.10.10 रिवा.

''गायन है - मायाजीते जगतजीत। तुमको अभी जगतजीत बनना है। यह है ही हार और जीत, सुख और दुख का खेल। ... अब तुम बच्चों को ऐसा लक्ष्मी-नारायण जैसा बनना है। वहाँ घर-घर में दीपमाला रहती है। सबकी ज्योति जग जाती है। मेन पॉवर से योग लगाने से सबकी ज्योति जग जाती है।''

सा.बाबा 22.10.10 रिवा.

''बाप कहते हैं - बच्चे मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे और तुम सर्वशक्तिवान बन जायेंगे। शक्ति नहीं होगी तो राज्य कैसे करेंगे! शक्ति मिलती है योग से, इसलिए भारत का प्राचीन राजयोग बहुत गाया जाता है। ... तुम जानते हो - हम आत्मायें बाप को याद करने से विश्व पर राज्य प्राप्त कर सकते हैं। कोई की ताक़त नहीं, जो उस राज्य को छीन सके।''

सा.बाबा 21.10.10 रिवा.

''तुम जानते हो - हम इस ज्ञान और योगबल से विश्व को हेविन बनाते हैं, जहाँ हम राज्य करेंगे। बाकी सब मुक्तिधाम चले जायेंगे। तुम्हें अथॉरिटी बनना है। बेहद के बाप के बच्चे हो ना। बाप से शक्ति मिलती है याद से। बाप को ऑलमाइटी अथॉरिटी कहा जाता है। ... तुम हर एक रूप-बसन्त हो, तुम्हारे मुख से सदैव रतन ही निकलने चाहिए।''

सा.बाबा 16.10.10 रिवा.

सतयुग की क्रमानुसार राज-गद्दियाँ और जन्म

बाबा ने सतयुग-त्रेता की राजाई और उसकी राज-व्यवस्था के विषय में अनेक प्रकार ज्ञान दिया है, ऐसे ही सतयुग-त्रेता की राजगद्दियों और सतयुग-त्रेता में आत्माओं के जन्मों का भी राज़ भी बताया है। बहुधा हमारे अधिकांश भाई-बहनें क्रमानुसार राजगद्दियों और जन्मों को एक समान मान लेते हैं। यथा - अधिकतर भाई बहनों के मुख से सुनने को मिलता है कि सतयुग में आदि से आने वाली आत्मा के 8 जन्म होंगे और सतयुग में 8 राजगद्दियाँ चलती हैं।

वास्तव में सतयुग-त्रेता में जो क्रमानुसार राजाइयाँ चलेंगी और सतयुग त्रेता में जो जन्म होंगे, उनकी गणना अलग-अलग है। हमारे कई भाई-बहनें जो दोनों को एक समान ही मानते हैं अर्थात् कहते हैं कि सतयुग में 8 जन्म होंगे और 8 लक्ष्मी-नारायण की गद्दियाँ चलेंगी अर्थात् चक्रवर्ती गद्दी पर 8 लक्ष्मी-नारायण ही राज्य करेंगे, वह विवेकयुक्त, तर्कसंगत प्रतीत नहीं होता है। इस सम्बन्ध में एक व्यक्ति की आयु और उसके शासनकाल के विषय में आप विचार करें तो दोनों का समान होना सम्भव नहीं है। कोई बच्चा जन्म से मृत्यु तक राज्य नहीं कर सकता और यदि कोई जन्म से ही राजा बन भी जाये तो उसके पीढ़ी दर पीढ़ी सभी का जन्म से मृत्यु तक राज्य करना कभी भी सम्भव नहीं हो सकता है। इसलिए सतयुग में चलने वाली समानान्तर आठ राजाइयों की हर एक गद्दी पर 18 से 21 राजायें क्रमानुसार राज्य करेंगे, परन्तु वहाँ पहली राजाई में आने वाली हर आत्मा के जन्म 8 ही होंगे क्योंकि वहाँ आयु बड़ी होगी।

अब इस तथ्य पर बुद्धि से विचार करके देखें कि क्या ये सम्भव है? क्या कोई बच्चा जन्म लेते ही गद्दी पर बैठ जायेगा और यदि बैठ भी जाये तो क्या वह मृत्यु तक राज करता रहेगा और यदि करता भी रहे तो उसका जो बच्चा पैदा होगा तो वह कब गद्दी पर बैठेगा और पहले वाले का राज करने का समय कितना होगा और बच्चे का राज करने का समय कितना होगा?

इन तथ्यों पर विचार करने के बाद हमारा विवेक कहता है कि सतयुग के आदि में आने वाली आत्मा के सतयुग में 8 जन्म तो होंगे, परन्तु सतयुग में एक राजाई में गद्दियाँ कम से कम 18 से 21 तक चलेंगी।

अब प्रश्न उठता है कि बाबा ने जो कहा है कि सतयुग में 8 गद्दियाँ चलती है, उसका राज़ क्या है? बाबा ने यह भी कहा है कि सतयुग में एक ही राजा नहीं होगा, उसके समकक्ष

और भी राजायें होंगे। चक्रवर्ती राजा एक होगा, उसके समकक्ष और 7 राजायें होंगे, इस हिसाब से कुल 8 राजगद्दियाँ अर्थात् समानान्तर राजाइयाँ चलेंगी और सतयुग में हर राजाई में 18 से 21 तक राजायें क्रमानुसार राजगद्दी पर बैठेंगे।

सतयुग-त्रेता की राजाई और जन्म

सतयुग-त्रेता की राजाई और जन्म तथा दोनों में सम्बन्ध

जैसे सतयुग की राजाई में क्रमानुसार राज-गद्दियों और जन्मों का राज़ विचारणीय है, ऐसे ही राजाई की स्थापना और जन्मों के सम्बन्ध का राज़ भी विचारणीय है। सतयग-त्रेता की राजाई और जन्म के विषय में विचार करें तो दो बातों पर विचार करना अति आवश्यक है।

1. सतयुग-त्रेता की क्रमानुसार राजाइयों और सतयुग-त्रेता के जन्मों में क्या सम्बन्ध है ?
2. सतयुग के आदि में जो प्रथम राजाई होगी, उसके राजा-प्रजा जन्म कहाँ और कैसे लेंगे ?

ये दोनों बातें अलग-अलग हैं और दोनों ही महत्वपूर्ण हैं और विचार करने योग्य हैं। विचारणीय है कि सतयुग की प्रथम राजाई में जन्म लेने वाले राजा-महाराजायें किसी राजा के घर में जन्म लेंगे और राजाई उनसे वर्से में लेंगे या साधारण घरों में जन्म लेंगे और उनके द्वारा सतयुग की प्रथम राजाई की स्थापना होगी अर्थात् अभी जो विश्व में प्रजातन्त्र है, उससे राजतन्त्र की व्यवस्था श्रीकृष्ण के माँ-बाप से आरम्भ होगी या श्रीकृष्ण अर्थात् प्रथम नारायण के द्वारा आरम्भ होगी।

मम्मा ने कहा - गुप्त एडवान्स पार्टी में हम लोगों का काम है आप लोगों को पालनहार पार्टी की तैयारी करना। तो हम जहाँ आप लोगों की पालना होगी, उन आत्माओं को तैयार कर रहे हैं। आप लोग तो सतयुग के राजा-रानी तैयार कर रहे हो लेकिन राजा-रानी आयेंगे कहाँ, पालना कहाँ लेंगे ?... तो हम लोग इसी काम में बिजी हैं। ... हम लोग भी तपस्या करते हैं।

अ.बापदादा का सन्देश 23.06.92 गुल्जार दादी

''पद कृष्ण का ऊंच कहा जायेगा। बाप का सेकण्ड क्लास का पद है, जो सिर्फ निमित्त बनते हैं कृष्ण को जन्म देने के। ... बाप का नाम गुम हो जाता है, वह भी है जरूर ब्राह्मण, परन्तु पढ़ाई में कृष्ण से कम है। ... कृष्ण का बाप कौन था, यह किसको पता नहीं है। आगे चलकर मालूम पड़ेगा। बनना तो यहाँ से ही है।''

सा.बाबा 19.08.10 रिवा.

''बाप से वर्सा अथवा राजाई लेने में कुछ तो मेहनत करनी होगी। जितना हो सके बाप की याद में रहना है। अपने को आपही देखना है - हम कितना समय बाप की याद में रहते हैं और कितनों को बाप की याद दिलाते हैं। ... सतयुग में तुम नेचुरल आत्माभिमानी रहते हो। अन्त समय आत्मा खहती है - हमारा यह शरीर बूढ़ा हुआ है, अब इसको छोड़कर नया लेंगें।''

सा.बाबा 1.06.10 रिवा.

सतयुग-त्रेता की समानान्तर राजाईयाँ और क्रमानुसार राज-गद्दियाँ

सतयुग की समानान्तर 8 राजाइयाँ और त्रेता की 12 समानान्तर राजाइयों में सम्बन्ध -

परमात्मा आकर प्रजातन्त्र से राजतन्त्र की स्थापना करते हैं अर्थात् आत्माओं को राजतन्त्र की राज-व्यवस्था का ज्ञान देते हैं और राजयोग सिखाकर उसके योग्य बनाते हैं। जब राजाई की स्थापना होती है तो उसमें परस्पर व्यवहार के लिए भी समानान्तर राजाइयाँ भी अवश्य चाहिए, उसके विषय में भी बाबा ने ज्ञान दिया है। जैसे एक मुरली में बाबा ने कहा है कि श्रीकृष्ण राजकुमार होगा तो राधे, जिसके साथ उसका स्वयंवर होगा, वह भी तो किसी राजा की ही राजकुमारी होगी। इस प्रकार सतयुग में कितनी समानान्तर राजाइयाँ होगी, यह भी विचारणीय है। तो सतयुग की प्रथम राजाई में या सतयुग में कितनी समानान्तर राजाइयाँ चलेंगी और त्रेता में कितनी समानान्तर राजाइयाँ चलेंगी और उन राजाइयों में राजसिंहासन पर कितने राजा-रानियाँ बैठेंगे, यह भी एक विचारणीय और समझने योग्य विषय है। इसके विषय में भी बाबा ने समय-समय पर मुरलियों में अनेक प्रकार से महावाक्य उच्चारे हैं, जो समझने योग्य हैं। बाबा के महावाक्यों को सुनकर हमारा विवेक ऐसा कहता है कि सतयुग में 8 और त्रेता में 12 समानान्तर राजाइयाँ अवश्य चलेंगी।

इन सब तथ्यों पर विचार करते हैं तो सतयुग की में आठ समानान्तर राजाइयाँ होनी चाहिए और त्रेता में 12 समानान्तर राजाइयाँ होनी चाहिए और सतयुग-त्रेता के व्यक्ति आयु और एक राजा के राज्य करने के समय आदि के विषय में विचार करें तो सतयुग में कम से कम 20-21 और त्रेता में 30-32 राजाइयाँ क्रमानुसार अवश्य चलनी चाहिए। इस प्रकार सतयुग में लगभग 320 राजा-रानी और त्रेता में 768 राजा-रानी गद्दी पर अवश्य बैठेंगे। इस प्रकार दोनों मिलाकर 1088 राजा-रानी राजसिंहासन पर बैठेगे, जिनमें 20 सतयुग के और 32 त्रेता के और उतनी ही रानियाँ अर्थात् 104 (20+32x2) चक्रवर्ती राजा-रानी और 984 अन्य समानान्तर गद्दियों पर बैठने वाले राजा-रानी होंगे। बाबा ने ये भी कहा है कि त्रेता के अन्त तक 16,108 राजा-रानी और राज-परिवार में आयेंगे अर्थात् वे राजपरिवार में जन्म

लेंगे, उनका सम्मान भी राजा-रानी के समान होगा, परन्तु वे राजसिंहासन पर नहीं बैठेंगे अथवा एक बार राजसिंहासन पर बैठने के बाद राज-परिवार में या राज-करोबार में उच्च पदों पर आयेंगे। इन सब बातों के आधार पर ही बाबा ने कहा है कि सतयुग आदि से त्रेता अन्त तक 16108 आत्मायें राजाई में या राज-परिवार में आयेंगे।

''मनुष्यों को यह भी पता नहीं कि देवी-देवताओं को यह राज्य किसने दिया ? ... आज से 5 हजार वर्ष पहले इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य था, 2500 वर्षों तक देवताओं की डिनायस्टी चली। उनके बच्चों ने भी राज्य किया। लक्ष्मी-नारायण दि फर्स्ट, दि सेकेण्ड, ऐसे चला आता है।''

सा.बाबा 31.05.10 रिवा.

Q. सतयुग में आठ समानान्तर राजाईयाँ होती हैं और त्रेता में 12 समानान्तर राजाइयाँ चलती हैं तो आठ से 12 कैसे होती हैं अर्थात् किसी राजा के दो पुत्र होते हैं तो उनमें से कोई नई राजाई स्थापन करता है या प्रजा में से कोई अपनी राजाई स्थापन कर लेता है ?

सतयुग की राजाई और सिंहासनारूढ़ होना प्रथम राजाई में और बाद में

बाबा ने कहा है कि सतयुग में जब श्रीकृष्ण सिंहासन पर बैठेगा, स्वर्ग की आदि होगी तो उस समय कोई भी कलियुग का अर्थात् विकारी बीज से पैदा हुआ नहीं रहेगा। साथ ही बाबा ने ये भी कहा है कि श्रीकृष्ण को उनके माँ-बाप राजतिलक देकर राजसिंहासन पर बिठायेंगे। तो विचारणीय है, उनके माँ-बाप तो विकारी बीज से ही पैदा हुए होंगे क्योंकि योगबल की सन्तान को जन्म देने की प्रथा तो श्रीकृष्ण के जन्म से ही आरम्भ होती है। यह भी विचारणीय है कि श्रीकृष्ण और राधे और उनके समानान्तर राजायें कैसे सिंहासन पर विराजमान होंगे।

राजतन्त्र की व्यवस्था आरम्भ होने के बाद सतयुग-त्रेता में राजा-रानी के द्वारा अपने बच्चे को राजाई देने का क्या विधि-विधान होगा, वह भी विचारणीय विषय है। सतयुग में हर राजा को और प्रजा में भी हर युगल को एक बच्चा और एक बच्ची अवश्य होगी, इसलिए राजा को युवराज (Crown Prince) के विषय में कोई चिन्ता नहीं होती है। ऐसे ही त्रेता में भी हर राजा को एक बच्चा और एक बच्ची अवश्य होंगे। हो सकता है कि त्रेता में किसी राजा को दो बच्चे भी होते हों, जिसके कारण सतयुग में जो 8 समानान्तर गद्दियाँ चलती हैं, वे 12 हो जाती हैं। जिस राजा को दो पुत्र होते होंगे, तो दूसरा नई राजाई स्थापन कर लेता होगा।

क्योंकि वहाँ लोभ-मोह तो होता नहीं है और साधन-सम्पत्ति अथाह होती है। आयु बड़ी होती है परन्तु किसी में लोभ-मोह नहीं होता है, इसलिए युवराज के योग्य होने पर राजा स्वत: उसको राजसिंहासन पर बिठाकर स्वयं तटस्थ हो जाते होंगे अर्थात् वानप्रस्थ ले लेते होंगे। इन सबके विषय में बाबा ने भी कहा है कि वहाँ चलकर देखेंगे कि क्या होता है और क्या होगा, अभी चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है।ये तो राज समझने के लिए सहज विचार किया जाता है।

सतयुग की राजाई और कलियुग की राजाई का तुलनात्मक अध्ययन / बेहद की बादशाही और हद की बादशाही में अन्तर और समानतायें

सतयुग-त्रेता में एक धर्म, एक चक्रवर्ती राजाई, एक भाषा, एकमत, परस्पर सौहार्द होता है। भले अन्य राजाइयाँ भी होती हैं, परन्तु वे सब एक चक्रवर्ती राजा के साथ एकमत होकर सम्बन्ध रखते हैं, जिसकी राजधानी वर्तमान भारत में होती है। जबकि द्वापर-कलियुग की राजाई में अनेक धर्म, अनेक राजाइयाँ, अनेक भाषायें, परस्पर भेदभाव होता है।

सतयुग-त्रेता में राजा-रानी दोनों साथ में राजसिंहासन पर बैठते हैं, दोनों को समान अधिकार होते हैं और दोनों को दो ताज होते हैं। राजा-रानी में परस्पर प्रेमभाव होता है, इसलिए अधिकार के लिए किसी प्रकार का मतभेद नहीं होता है। द्वापर-कलियुग में समाज पुरुष-प्रधान हो जाता है, जिसके कारण राजा राजसिंहासन पर बैठता है परन्तु रानियाँ साथ में नहीं बैठती हैं। कब-कब किसी राजाई में रानियाँ भी राजसिंहासन पर बैठी हैं परन्तु वे राजा के उत्तराधिकारी न होने के कारण या किन्हीं विशेष परिस्थितियों में बैठी हैं।

सतयुग-त्रेता की राजाई में धर्म-सत्ता और राज-सत्ता एक राजा के हाथ में ही होती है, इसलिए वहाँ धर्मात्मा, महात्मा आदि का कोई भेद नहीं होता है। द्वापर-कलियुग की राजाई में धर्म-सत्ता और राज-सत्ता अलग-अलग हाथों में होती है, इसलिए राजा और धर्मगुरु होते हैं क्योंकि दोनों में सन्तुलन स्थापित करने के लिए राजा को भी धर्म-गुरुओं आदि से राय-सलाह लेने की आवश्यकता होती है।

सतयुग-त्रेता में साधन-सम्पत्ति प्रचुर मात्रा में होती है और हर राजा को एक बच्चा और एक बच्ची होती है, इसलिए राजसिंहासन के लिए कोई प्रकार की मारामारी नहीं होती है। जबकि द्वापर-कलियुग में राजसिंहासन अनेक प्रकार से मारामारी होती है। अनेक राजायें तो अपने सगे भाइयों को कत्ल करके भी राजसिंहासन पर बैठे हैं। त्रेता में या त्रेता के अन्त में किसी राजा को दो पुत्र भी होते हैं तो भी राजसिंहासन के लिए कोई मारामारी नहीं होती है।

दोनों परसपर सहयोग से नई राजाई स्थापन कर लेते हैं, जिसके आधार पर ही सतयुग में जो 8 समानान्तर राजाइयाँ चलती हैं, वे त्रेता में 12 हो जाती हैं, परन्तु किसी प्रकार का युद्धादि नहीं होता है।

सतयुग-त्रेता में राजा के पास न सेना होती है, न युद्धादि का सामान होता है, वहाँ कोई न्यायालय आदि भी नहीं होता है, परन्तु द्वापर-कलियुग में ये सब होता है।

सतयुग-त्रेता में राजाई के लिए कोई युद्धादि नहीं होते हैं। जबकि द्वापर-कलियुग की राजाइयाँ प्राय: युद्ध के द्वारा ही स्थापित होती हैं, फिर भले उस राजा के यहाँ जन्म लेने वाले युवराज को वह राजाई उस राजा से वर्से के रूप में मिलती है।

सतयुग-त्रेता की राजाई में प्रकृति भी दासी होती है, इसलिए वहाँ किसी प्रकार की प्राकृतिक आपदायें आदि नहीं होती हैं। द्वापर-कलियुग में पवित्र-अपवित्र दोनों प्रकार के होते हैं, इसलिए अनेक आत्मायें विकर्म करती हैं, जिसका फल देने के लिए प्राकृतिक आपदायें आदि होती हैं।

''और धर्म वाले जब पहले आते हैं तो सतोप्रधान होंगे ना। जब लाखों के अन्दाज़ में हो जाते हैं, तब लश्कर तैयार होता है और लड़कर बादशाही लेते हैं। ... और धर्म वाले स्वर्ग में नहीं आते हैं। भारत जब स्वर्ग था, उन जैसा पावन खण्ड कोई होता नहीं है। जब बाप आते हैं तब ही ईश्वरीय राज्य स्थापन होता है। वहाँ लड़ाई आदी की बात नहीं।''

सा.बाबा 20.09.10 रिवा.

''यह सुख और दुख का खेल है। सिर्फ सुख का ही खेल होता तो फिर यह भक्ति आदि कुछ भी न हो। ... अभी बाप बैठ सारा राज़ समझाते हैं। बाप कहते हैं - तुम बच्चे कितने भाग्यशाली हो। ... तुम स्वर्ग के राजा बनते हो तो पवित्र जरूर बनना पड़े। सतयुग-त्रेता में जिनका राज्य था, उनका ही फिर होगा। बाकी सब पीछे आयेंगे।''

सा.बाबा 18.09.10 रिवा.

''बच्चे ज़रा ख्याल तो करो, कैसे यह खेल की रचना है। तुम सिर्फ बाप को याद करते हो और स्वदर्शन चक्रधारी बनने से चक्रवर्ती राजा बनते हो।... ज्ञान मार्ग की माला अलग है, भक्ति की माला अलग है। रावण की राजाई अलग है, उसको रात कहा जाता है। तुम्हारी राजाई अलग है, उसको दिन कहा जाता है।''

सा.बाबा 23.06.10 रिवा.

''बाप गुप्त में आकर तुम बच्चों को गुप्त में बादशाही देते हैं।... गाया जाता है - गुप्त दान महापुण्य। दो-चार को मालूम पड़ा तो उसकी ताकत कम हो जाती है। ... राजा में पॉवर रहती

है। तुम ईश्वर अर्थ दान करते हो तो उसमें पॉवर रहती है। यहाँ तो कोई में पॉवर नहीं है।''

सा.बाबा 14.06.10 रिवा.

''भक्ति मार्ग में विनाशी धन दान करने से राजाई मिलती है। तुम्हारे पास कितना अविनाशी ज्ञान धन है। हर एक को कर्मों अनुसार फल मिलता है। ... तुम डबल सिरताज विश्व के मालिक बनते हो। उस समय दूसरी कोई राजाई है ही नहीं। फिर जब दूसरे धर्म आते हैं और उनकी वृद्धि हो जाती है, पहले वाले राजायें विकारी बन जाते हैं, तब वे अपनी राजाई स्थापन करते हैं।''

सा.बाबा 6.10.10 रिवा.

विश्व की राजाई और लक्ष्मी-नारायण का चित्र

अभी हमारा जो लक्ष्मी-नारायण का चित्र है, उसको देखने पर किसी के मन में सहज ही प्रश्न उठता है कि क्या वहाँ इतना सब पहनकर रहते होंगे। इसके सम्बन्ध में किसी विदेशी भाई को अव्यक्त बापदादा ने स्पष्ट किया था। बाबा से उसने पूछा कि बाबा - क्या लक्ष्मी-नारारण हर समय सतयुग में इतने गहनें आदि पहनकर रहेंगे या पहनते हैं। तब बाबा ने उसको कहा - तुम आर्टिस्ट हो और तुमको किसी सम्पूर्ण मानव (Prtfect human being) का चित्र बनाने को कहा जाये तो आप कैसा बनायेंगे। यह सुनकर वह भाई समझ गया कि ये चित्र एक सम्पूर्ण मानव अर्थात् सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी, धन-धान्य से सम्पन्न मानव का प्रतीक (Symbol) है।

ये लक्ष्मी-नारायण आदि देवताओं के चित्र और मन्दिर सतयुग-त्रेता की राजाई के चिन्ह हैं। बाबा ने कई बार कहा है कि ये लक्ष्मी-नारायण का चित्र स्पष्ट करता है कि सतयुग में इनकी राजाई थी।

''अभी तुम जानते हो कि यह चक्र कैसे फिरता है। भारत ही बहुत साहूकार था, फिर गरीब बन जाता है, फिर बाप आकर साहूकार बनाते हैं। भारत आज से 5 हजार वर्ष पहले स्वर्ग था, इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य था। पहले गद्दी इनकी चली थी। कृष्ण प्रिन्स ने स्वयंवर किया तो राजा बना और नारायण नाम पड़ा।''

सा.बाबा 11.06.10 रिवा.

''बाप स्वर्ग स्थापन करते हैं तो फिर जरूर पुरानी दुनिया का विनाश भी होगा। सतयुग में ये लक्ष्मी-नारायण राज्य करते थे। तुम बच्चों को नशा होना चाहिए कि हम अपने पुरुषार्थ से अभी यह लक्ष्मी-नारायण बन रहे हैं। हम ही भारत में राज्य करते थे, शिवबाबा राज्य देकर गया था। अभी फिर से बाबा राज्य देने आये हैं।''

सा.बाबा 21.05.10 रिवा.

''84 जन्म लेते-लेते तुम स्वर्ग से नर्क में आ गये हो, अब फिर स्वर्ग में जाना है। स्वर्ग और नर्क का यह खेल है। ... तुम यहाँ सत् बाप के संग में हो, उनको ही याद करते हो। वही ऊंच ते ऊंच भगवान है। वह है रचता, उनसे ही बच्चों को सुख-शान्ति का वर्सा मिलता है।... सतयुग में जब इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य था, तब बहुत थोड़े मनुष्य होंगे। एक धर्म, एक ही राजाई थी।''

सा.बाबा 23.10.10 रिवा.

सतयुगी राजाई और ज्ञान-गुण-शक्तियों की धारणायें

सतयुगी राजाई और निश्चय

सतयुग-त्रेता की राजाई पाने वालों को किन-किन बातों की धारणा करनी है, वह भी सतयुग की राजाई सथापन करने वाले बाबा ने स्पष्ट ज्ञान दिया है। जो उन सब धारणाओं को जीवन में धारण करते हैं, वे जरूर सतयुग-त्रेता में राजाई पाने के योग्य बनते हैं और जो योग्य बनते हैं, वे ही राजाई पाते हैं। राजाई पाने के लिए राज करोबार करने की शक्ति भी चाहिए तो उसके योग्य गुण भी चाहिए।

सतयुगी राजाई पाने के लिए सबसे पहली धारणा है पवित्रता की और आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर अपनी कर्मेन्द्रियों पर, मन-बुद्धि-संस्कार पर राजाई करने की अर्थात् स्वराज्य अधिकारी बनने की। जो स्वराज्य अधिकारी बनते हैं, उनमें अन्य सब गुणों और शक्तियों की धारणा स्वत: हो जाती है। बाबा ने अनेक बार कहा है - राजा बनना है तो प्रजा भी चाहिए। तो जो स्वराज्य अधिकारी बनते हैं, उनको सेवा में भी सहज सफलता मिलती है अर्थात् उनकी प्रजा सहज ही बन जाती है।

''अभी बाप हमको विश्व का मालिक बनाते हैं। जो विश्व का मालिक बनने वाले बच्चे हैं, उनके ख्यालात बहुत ऊंचे और चलन बहुत रॉयल होगी। उनका भोजन भी बहुत कम होगा, जास्ती हवच नहीं होगी। याद में रहने वालों का भोजन भी बहुत सूक्ष्म होता है। ... तुम बच्चों को विश्व का मालिक बनने की खुशी है। कहा जाता है - खुशी जैसी खुराक नहीं।''

सा.बाबा 14.07.10 रिवा.

''अगर मैं सही हूँ तो मेरा वायब्रेशन दूसरों तक क्यों नहीं जाता, कोई तो कारण होगा ना!... अगर अभी ब्राह्मण परिवार को सन्तुष्ट नहीं कर सकते हो तो राज्य क्या चलायेंगे! जितना बेहद का सहन, उतनी बेहद की दुआयें क्योंकि बाप के आज्ञाकारी बने हो। बाप ने कहा सहन करो। खुशी से आज्ञा मानना, मजबूरी से नहीं।''

अ.बापदादा 26.10.71 पार्टी

''संस्कार आत्मा में ही रहते हैं। तुम यहाँ से संस्कार ले जायेंगे, फिर आकर नई दुनिया में राज्य करेंगे। जैसे कल्प पहले सतयुग में राजधानी चली थी, वैसे ही फिर शुरू हो जायेगी। इसमें कुछ पूछने की भी दरकार नहीं रहती!है। मुख्य बात है अपने को आत्मा समझो, देहाभिमान में नहीं आओ। कोई विकर्म नहीं करो।''

सा.बाबा 13.07.10 रिवा.

''यह बाबा बूढ़ा है, फिर भी समझते हैं मैं पढ़ रहा हूँ। बहुत खुशी में रहते हैं, समझते हैं हम अभी यह शरीर छोड़ फिर जाकर राजा के घर में जन्म लूँगा। ... तुम बच्चे मूँझते क्यों हो, दिलहोल क्यों होते हो कि सभी थोड़ेही राजा बनेंगे - यह ख्याल आया, फेल हुआ। बैरिस्टरी, इन्जीनियरिंग पढ़ने वाले ऐसे कहेंगे कि क्या सब थोड़ेही बैरिस्टर, इन्जीनियर बनेंगे।''

सा.बाबा 17.05.10 रिवा.

''सदैव यह लक्ष्य रखो कि ट्रान्सफर होना है और ट्रान्सफर करना है। ऐसे नहीं कहना कि यह ट्रान्सफर हो तो मैं ट्रान्सफर हो जाऊं। नहीं, मुझे होना और मुझे ही करना है। जो ऐसे हिम्मत रखने वाले बनते हैं, वे ही विश्व के महाराजन बन सकते हैं। ... यह छोटा सा परिवार ही विश्व के राज्य अधिकरी बनने वाले हैं, इनके ऊपर अभी स्नेह का राज्य करना है, आर्डर नहीं चलाना है।''

अ.बापदादा 19.8.71

''अभी से विश्व महाराजन नहीं बन जाना है, अभी तो विश्व सेवाधारी बनना है। स्नेह देना ही भविष्य के लिए जमा करना है। ... ज्ञान देना सरल है लेकिन विश्व महाराजन बनने के लिए सिर्फ ज्ञान दाता नहीं बनना है। इसके लिए स्नेह देना अर्थात् सहयोग देना है। जहाँ स्नेह होगा, वहाँ सहयोग अवश्य होगा।''

अ.बापदादा 19.8.71

''तुम बच्चों को यह निश्चय है कि हम बेगर से प्रिन्स बनने वाले हैं। यह बेगर दुनिया ही खत्म होनी है। तो तुम बच्चों को बहुत खुशी रहनी चाहिए। ... यह इम्तहान है भी प्रिन्स-प्रिन्सेज बनने का। बाप को याद करना है और भविष्य वर्से को याद करना है। इस याद करने में ही मेहनत है। इस याद में रहेंगे तो फिर अन्त मति सो गति हो जायेगी।''

सा.बाबा 17.05.10 रिवा.

''बाप आये ही हैं तुम बच्चों को सदा सुखी बनाने। कोई बादशाह का बच्चा होगा तो वह बाप को और राजाई को देख खुश होगा ना। ... यहाँ तुम बच्चों को निश्चय है कि शिवबाबा आया हुआ है, वह हमको पढ़ा रहे हैं, जिससे फिर हम स्वर्ग में जाकर राजाई करेंगे।''

सा.बाबा 12.05.10 रिवा.

''निश्चय की निशानी है निश्चिन्त स्थिति, इसका अनुभव करो। होगा, नहीं होगा ... क्या होगा - इसको निश्चिन्त नहीं कहेंगे। फिर बाप के आगे फरियाद करते हो ... फरियाद करना अर्थात् अधिकार को गँवाना। अधिकारी कब फरियाद नहीं करेंगे। ... तो ये सब प्रैक्टिकल निशानियाँ अपने आप में चेक करो। ऐसे अलबेले नहीं रह जाना कि हम तो है ही निश्चयबुद्धि।''

अ.बापदादा 9.01.95

सतयुगी राजाई और विश्व की आध्यात्मिक-धार्मिक-राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्राफी

इस सम्बन्ध में ज्ञान सागर परमात्मा ने जो मुख्य बात बताई है, जिससे आत्माओं के अनेकानेक प्रश्नों का हल हो गया है, वह है कि यह सृष्टि-चक्र एक अनादि-अविनाशी नाटक है, जो हर कल्प अर्थात् हर 5000 वर्ष के बाद हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है। इस पुनरावृत्ति के सिद्धान्त से इस विश्व रचना के अनेक प्रश्नों का हल हो गया है, जिस हल को खोजने के लिए वैज्ञानिक, धार्मिक, राजनैतिक, दार्शनिक आदि अनेक प्रकार के प्रयत्न करते रहे हैं और कर रहे हैं।

नये विश्व के रचयिता परमात्मा आकर विश्व में पुन: राजाई की स्थापना करते हैं, उसके लिए आत्माओं को इस विश्व की आध्यात्मिक-धार्मिक-राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्राफी का ज्ञान देते हैं, जिस ज्ञान के आधार पर विश्व में पुन: राजशाही की स्थापना होती है। जो आत्मायें इस विश्व की हिस्ट्री-जॉग्राफी को समझ लेते हैं, वे ही सतयुग की दैवी राजाई के लिए अभीष्ट पुरुषार्थ करते हैं और कर सकते हैं। जो परमात्मा की श्रीमत के आधार पर यथार्थ रीति पुरुषार्थ करते हैं, वे उस राजाई में राजपद अवश्य पाते हैं।

इस विश्व की हिस्ट्री-जॉग्राफी हू-ब-हू पुनरावृत्त होती है। तो कल्प के आदि में देवी-देवताओं की राजाई थी, तो फिर भी अवश्य होगी। जो इस रहस्य को अच्छी रीति समझ लेते हैं, वे ही उस राजाई के लिए सहज पुरुषार्थ कर सकते हैं और ड्रामा अनुसार करते भी हैं, जिसके कारण वे राजाई पद अवश्य पाते हैं। यह इस विश्व-नाटक का अनादि-अविनाशी विधान है।

इस विश्व के इतिहास को देखें तो सारे कल्प में विश्व में राजाई ही चली है। कलियुग के अनत में थोड़े समय के लिए प्रजातन्त्र की राज-व्यवस्था आई है। इस विश्व में आधा कल्प दैवी राजाई होती है, जिसमें प्रकृति भी सतोप्रधान होती है अर्थात् भौगोलिक स्थिति भी सतोप्रधान

होती है, जिससे हर आत्मायें वहाँ सुख-शान्ति में रहती हैं। द्वापर-कलियुग में देहाभिमानी राजायें होते हैं, जिसके कारण प्रकृति भी रजो-तमो होकर उनके कर्मो के अनुसार सुख-दुख दोनों का कारण बनती है।

सतयुग की दैवी राजाई की स्थापना वर्तमान के भारत में होती है और उसका विस्तार त्रेता के अन्त तक सुदूर पश्चिम, उत्तर, पूर्व तक हो जाता है। इसलिए मिस्त्र, यूनान, रूस, इण्डोनेशिया आदि में आज भी भारत की दैवी सभ्यता के प्रतीक देवी-देवताओं के मन्दिर आदि मिलते हैं। इब्राहम, क्राइस्ट आदि धर्मपिताओं की प्रवेशता भी उन देशों में, देवी-देवता धर्म की आत्माओं के तन में ही हुई है। बाद में जब उस धर्म वंश की राजाई वहाँ स्थापन हुई, तब भारत की चक्रवर्ती राजाई खत्म हो गई और समयान्तर में भारत की राजाई का संकुचन आरम्भ हो गया। जिस समय वहाँ पर अन्य धर्मवंश की राजाईयाँ स्थापन हुई, तो वहाँ कुछ आत्माओं ने तो अपना धर्म परिवर्तन कर लिया और जिन्होंने धर्म परिवर्तन नहीं किया, उनका पलायन भारत की ओर होने लगा। इसलिए आज तक कहाँ-कहाँ भारत के इतिहास में पढ़ाया जाता है कि भारत में आर्य मध्येशिया से आये हैं। वास्तव में ये दासता का इतिहास है अर्थात् भारतीय सभ्यता के स्वमान को गिराने के लिए बनाया गया है।

''यह चक्र शुरू से कैसे रिपीट होता है, यह अभी तुम जानते हो। यह पास्ट, प्रैजेन्ट, फ्युचर का चक्र है। जो पास्ट हो जाता है, वह फिर फ्युचर होता है। इस समय तुमको यह नॉलेज मिलती है, फिर तुम राजाई ले लेते हो। इन देवताओं का राज्य चलता है। यह तुम किसको भी कहानी मिसल सुनाओ। बड़ी सुन्दर कहानी बन जायेगी।''

सा.बाबा 13.08.10 रिवा.

''तुमको प्रदर्शनी में लिखना चाहिए कि इस लड़ाई के पहले ज्ञान सागर बाप स्वर्ग का उद्घाटन कर रहे हैं, फिर विनाश के बाद स्वर्ग के द्वार खुल जायेंगे।... अब बाप तुमको मनुष्य से देवता बनाते हैं। इस वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी फिर से रिपीट होनी है।... बाप ही पुरानी दुनिया को नई दुनिया बनाते हैं। ये सब समझने की बाते हैं।''

सा.बाबा 14.08.10 रिवा.

''बच्चों में स्वीट वे हैं, जो बहुतों का कल्याण करते हैं। बाप भी स्वीटेस्ट है, तब तो सब उनको याद करते हैं। ... पुरानी दुनिया और नई दुनिया किसको कहा जाता है, वह भी तुम अभी जानते हो। ... वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी कैसे रिपीट होती है, वह भी बाप ने तुमको समझाया है।''

सा.बाबा 17.08.10 रिवा.

''पाँच हजार वर्ष के बाद हिस्ट्री रिपीट होती है, तुमको राजाई मिलती है। बाकी और सब आत्मायें शान्तिधाम चली जाती हैं। ... अभी तुमको बाप मिला है और तुम सारे सृष्टि-चक्र को जानते हो तो तुमको खुशी में गद्गद होना चाहिए। ... गॉड फादर ही है नॉलेजफुल। उनको ही यह नॉलेज है कि यह सृष्टि-चक्र कैसे फिरता है।''

सा.बाबा 11.08.10 रिवा.

''वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी कैसे रिपीट होती है, बाप में यह सारी नॉलेज है। हमारी आत्मा में 84जन्मों का पार्ट भरा हुआ है। इस योग की ताक़त से आत्मा सतोप्रधान बन गोल्डन एज में चली जायेगी। ... सबको बोलो - इस याद के बल से हम पवित्र बन पवित्र दुनिया सतयुग में जायेगे और सबके शरीरों का विनाश हो जायेगा, आत्मायें परमधाम में चली जायेंगी।''

सा.बाबा 11.08.10 रिवा.

''बाप ज्ञान का सागर है, वह कहते हैं - बच्चे, तुम भी पूरे ज्ञान के सागर बनो। जितना मेरे में ज्ञान है, उतना तुम भी धारण करो। शिवबाबा को देह का नशा नहीं है। तुम भी देही-अभिमानी बनो। ... इस बेहद की हिस्ट्री-जॉग्राफी को जानना चाहिए ना। अभी है संगमयुग। फिर से दैवी राज्य स्थापन हो रहा है। इस पुरानी दुनिया का विनाश होना है।''

सा.बाबा 13.07.10 रिवा.

''बाप द्वारा सृष्टि चक्र की हिस्ट्री-जॉग्राफी को जानकर तुम चक्रवर्ती राजा बन रहे हो। बाप कितना प्यार और रुचि से पढ़ाते हैं, तो तुमको भी इतना पढ़ना चाहिए ना। ... शिवबाबा इनमें प्रवेश कर तुमको कितना प्यार से पढ़ाते हैं। बाप कहते हैं - मैं आता हूँ पुराने शरीर में। कैसे साधारण रीति आकर पढ़ाते हैं। कोई अहंकार नहीं।''

सा.बाबा 16.07.10 रिवा.

''बाप को जितना याद करेंगे, उतना पावन बनेंगे और फिर ऊंच पद पायेंगे नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। ... नई दुनिया में राजाओं का राजा कैसे बन सकते हैं, उसके लिए बाप ही राजयोग सिखलाते हैं। बाप ही नॉलेजफुल है, परन्तु उनमें कौनसी नॉलेज है, यह कोई नहीं जानते हैं। सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त की हिस्ट्री-जॉग्राफी बेहद का बाप ही सुनाते हैं।''

सा.बाबा 19.07.10 रिवा.

''जो अच्छी रीति पढ़ते हैं, वे ऊंच बनते हैं। अभी तुम सारे वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी जान गये हो। तुम 84 के चक्र को भी जानते हो। ... बाप कहते हैं - बच्चे, यह युद्ध का मैदान है ना। इसमें होपलेस नहीं होना चाहिए। याद के बल से ही माया पर जीत पानी है।''

सा.बाबा 20.07.10 रिवा.

''अभी बच्चों की बुद्धि में यह नॉलेज है कि हमने 84 का चक्र लगाया है। अब हमको पवित्र बनकर वापस घर जाना है। पवित्र बनकर फिर नये सिर चक्र लगायेंगे। यह सार बुद्धि में रखना है। जैसे बाप की बुद्धि में वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी वा 84 जन्मों के चक्र का ज्ञान है, वैसे तुम्हारी बुद्धि में भी रहना चाहिए।''

सा.बाबा 24.07.10 रिवा.

''यह वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी कैसे रिपीट होती है, यह नटशेल में सारा चक्र बुद्धि में रहना चाहिए। ... ज्ञान मार्ग में चित्रों की दरकार नहीं है। भक्ति मार्ग में जो चित्र आदि बनाये हैं, उनको करेक्ट करने के लिए चित्र आदि बनाने पड़ते हैं।... वास्तव में यह सब ड्रामा में नूँध है। कोई कुछ करता थोड़ेही है, सब ड्रामा अनुसार होता है।''

सा.बाबा 24.07.10 रिवा.

''कोई भी पतित घर वापस जा नहीं सकता। पवित्र जरूर बनना है। शिव की बरात गाई हुई है। पहले तो सुप्रीम बाप को जाना चाहिए। ... बाप कहते हैं - मैं आता हूँ एक सत् धर्म की स्थापना करने, बाकी सभी धर्मों का विनाश हो जाता है। सृष्टि-चक्र को फिर से फिरना ही है। कहा भी जाता है कि वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट होती है। अभी पुरानी दुनिया है, फिर नई दुनिया को रिपीट होना है।''

सा.बाबा 2.08.10 रिवा.

''यहाँ ही तुमको दुखधाम से पार सुखधाम में जाना है क्योंकि अभी तुम बच्चों को पता पड़ा है कि दुखधाम क्या है और सुखधाम क्या है। ... अभी तुम अपने 84 जन्मों की हिस्ट्री-जॉग्राफी को जान गये हो। तुम जानते हो अभी हमको पुण्यात्मा बनना है। दुनिया में कोई भी 84 जन्मों की हिस्ट्री-जॉग्राफी को नहीं जानते हैं। ज्ञान सागर बाप ही आकर बताते हैं।''

सा.बाबा 3.08.10 रिवा.

''बाप को सभी आत्मायें याद करती हैं। पहले तुम देहाभिमानी थे, तो कुछ भी नहीं जानते थे। अभी बाप ने तुम बच्चों को देही-अभिमानी बनाया है। ... अभी तुम बच्चे जानते हो कि यह दुनिया बदल रही है। इस पुरानी दुनिया का विनाश होना है, नई दुनिया की स्थापना बाप कर रहे हैं। एक गीता में ही विनाश का वर्णन है।''

सा.बाबा 3.08.10 रिवा.

सतयुग-त्रेता की राजाई, समर्पणता और गृहस्थ-व्यवहार

परमात्मा आकर विश्व में सतयुगी राजाई की स्थापना करते हैं और उस राजाई की स्थापना और उसको चलाने का विधि-विधान भी बताते हैं। बाबा ने जो बताया है, उस अनुसार उस राजाई में आने का मुख्य विधान है, परमपिता परमात्मा के प्रति समर्पणता। बाबा ने कहा है - जो समर्पण होते हैं, वे ही राजाई पद पाते हैं। परन्तु समर्पणता का अर्थ कोई तन की समर्पणता से नहीं है, इसलिए बाबा ने ये भी कहा है कि गृहस्थ व्यवहार में रहने वाले भी समर्पण हो सकते हैं। जो गृहस्थ-व्यवहार में रहते हैं परन्तु बाबा की श्रीमत पर चलते हैं, अपना तन-मन-धन-जन ईश्वरीय सेवा में लगाते हैं, अपना पूरा पोतामेल बाबा को देते हैं, वे भी समर्पण की लिस्ट में ही हैं और राजपद के अधिकारी हैं। राजाई पद के विधि-विधान में ईश्वरीय सेवा का मूल स्थान है क्योंकि बाबा ने कहा है - जो जिसकी सेवा करता है, वे ही उसकी प्रजा बनते हैं, इसलिए जो देह से समर्पण हैं या गृहस्थ-व्यवहार में रहते हुए समर्पण है, परन्तु उनकी सेवा में अच्छी लगन है, तो वे भी राजाई पद अवश्य पायेंगे।

''अभी तुम जानते हो कि हम युद्ध के मैदान पर हैं। कल्प-कल्प बाप आकर हमको माया पर जीत पहनाते हैं। मूल बात है पावन बनने की। पतित बनें हैं विकार से।... ब्राह्मणों में भी नम्बरवार होते हैं। शमा पर परवाने आते हैं, उनमें कोई जल मरते हैं और कोई फेरी पहनकर चले जाते हैं। यहाँ भी ऐसे है। ... माया से युद्ध चलती है, इसको युद्ध स्थल कहा जाता है।''

सा.बाबा 10.05.10 रिवा.

''सभी धर्म-स्थापक द्वापर के बाद आकर अपना-अपना धर्म स्थापन करते हैं। उसमें बड़ाई की कोई बात नहीं है। ... ब्रह्मा की बड़ाई तब है, जब बाप ने आकर इनमें प्रवेश किया है।... बाप ने इनको कहा - यह मेरा सो तुम्हारा और तुम्हारा सो मेरा, देख लो! तुम मेरे मददगार बनते हो, अपना तन-मन-धन लगाते हो तो उसकी एवज़ में यह मिलेगा।''

सा.बाबा 06.05.10 रिवा.

सतयुग की राजाई और भाग्य

परमात्मा सतयुग की राजाई की स्थापना करते हैं, जिसमें राजा, प्रजा, दास-दासी सब प्रकार के होते हैं। बाप तो सर्व आत्माओं का बाप है और सबको राजाई पद प्राप्त करने का पुरुषार्थ कराते हैं, इसलिए बाबा ने अनेक बार कहा है कि यह राज-योग है, प्रजा-योग नहीं हैं। प्रजा तो जो अच्छी रीति नहीं पढ़ते हैं, वे बन जाते हैं। बाबा ने यह भी कहा है कि राजाई में सब तो राजा नहीं बनेंगे, राजाई में राजा-प्रजा, नौकर-चाकर, दास-दासियाँ भी अवश्य होंगे। इसलिए सतयुगी राजाई में भी राजाई में पद हर आत्मा ड्रामा के पार्ट, अपनी तकदीर और पुरुषार्थ अनुसार ही प्राप्त करते हैं। उसमें परमात्मा भी कुछ नहीं कर सकते हैं। परन्तु भाग्य क्या है, उसका राजाई से क्या सम्बन्ध है, यह भी विचारणीय विषय है, जिसका राज भी बाप बताते हैं। ड्रामा का पार्ट और आत्मा के किये गये कर्मों का फल ही भाग्य है। इस विश्व-नाटक में कर्म और फल, पुरुषार्थ और प्रालब्ध का अद्वितीय सन्तुलन है अर्थात् इसका विधान है, उस अनुसार ही सब नई दुनिया में अर्थात् स्वर्ग में राजपद का भाग्य पाते हैं। इस प्रकार हम देखें तो ड्रामा का पार्ट और आत्मा के भूतकाल में किये गये कर्मों का फल ही वर्तमान में उसका भाग्य है और अभी जो कर्म करते हैं, उसका फल ही भविष्य में भाग्य होगा अर्थात् उस अनुसार ही आत्मा को सतयुग का राज्य-भाग्य मिलेगा।

''जिस बाप से विश्व का राज्य मिलता है, उनको याद नहीं कर सकते हैं। तकदीर में ही नहीं है तो फिर तदबीर भी क्या करेंगे। ... अब बाप कितनी अच्छी-अच्छी बातें समझाते हैं, फिर हर एक की बुद्धि पर है कि वे कितना धारण करते हैं।''

सा.बाबा 27.05.10 रिवा.

''जो अच्छा पुरुषार्थ करते हैं, वे राजा-रानी बन जाते हैं, जो पुरुषार्थ नहीं करते, वे ग़रीब बन जाते हैं। तक़दीर में नहीं है तो तदबीर भी कर नहीं सकते।... हर एक अपने को देख सकते हैं कि हम क्या सर्विस करते हैं, उससे क्या पद पायेंगे।''

सा.बाबा 12.04.10 रिवा.

''तुम बच्चों को चित्रों पर समझाने की बहुत अच्छी प्रैक्टिस करनी है। ... कई बच्चे राजाई पद पाने का पुरुषार्थ नहीं करते हैं तो प्रजा में चले जायेंगे। जो सर्विस नहीं करते, अपने पर तरस नहीं आता है कि हम क्या बनेंगे, उनके लिए समझा जाता है कि ड्रामा में इनका पार्ट ही इतना है। अपना कल्याण करने के लिए ज्ञान के साथ योग भी अच्छा हो।''

सा.बाबा 13.04.10 रिवा.

''ये ज्ञान की बातें तुम्हारे में भी नम्बरवार ही धारणा कर सकते हैं। धारणा नहीं कर सकते तो बाकी क्या काम के रहे। ... जो कहते जो कुछ मिला सो अच्छा। उनके लिए बाप कहेंगे - इनकी तकदीर में राजाई नहीं है। अपनी सद्गति करने के लिए पुरुषार्थ तो करना चाहिए ना। देही-अभिमानी बनना है।''

सा.बाबा 12.04.10 रिवा.

''सारी सृष्टि की आत्मायें बाप के बच्चे होते हुए भी, जिन्होंने प्रीत की रीति निभाई है वा प्रीत-बुद्धि बने हैं, ऐसे प्रीत की रीति निभाने वाले बच्चों के साथ बाप ने इतनी प्रीत की रीति निभाई है, जो अन्य सभी आत्माओं को अल्पकाल का सुख प्राप्त होता है लेकिन ... आपको सारे विश्व के सर्व सुखों की प्राप्ति सदा काल के लिए होती है। सभी को मुक्तिधाम में बिठाकर प्रीत की रीति निभाने वाले बच्चों को विश्व का राज्य-भाग्य प्राप्त कराते हैं।''

अ.बापदादा 9.05.72

''तुम्हें पाके हमने जहाँ पा लिया है ... इसमें बोलने का नहीं रहता है, यह तो समझने की बात है। ... अभी हम बेहद के बाप से बेहद का वर्सा लेते हैं, जो कोई छीन न सके। वहाँ दूसरा कोई छीनने वाला होता ही नहीं है। उसको कहा जाता है अद्वैत राज्य। ... अभी हम फिर बाप की श्रीमत पर भारत को वाइसलेस बना रहे हैं।''

सा.बाबा 6.10.10 रिवा.

''बाप कहते हैं - तुम विचार करो, सतयुग में तुम्हारे पास क्या-क्या होगा, सोने के महल कैसे थे, ... हद के राजा का बच्चा समझता है कि हम इस हद की राजाई के वारिस हैं। तुमको कितना नशा रहना चाहिए कि हम बेहद के बाप के वारिस हैं। बाप स्वर्ग की स्थापना करते हैं। ... जिनके हम वारिस बनते हैं, उनको जरूर याद करना है। बिगर याद करने के वारिस बन नहीं सकते।''

सा.बाबा 6.10.10 रिवा.

''तुम जानते हो हम डबल सिरताज, राजाओं के राजा बन रहे हैं। तो तुमको अन्दर में कितनी खुशी होनी चाहिए। भगवान बाप हमको पढ़ाते हैं। कभी कोई समझ न सके कि निराकार बाप कैसे आकर पढ़ाते हैं। ... बाप हमको रास्ता बताते हैं, हम फिर दूसरों को बताते हैं। तुम सबको कहते हो - बाप को याद करो, तो ऊंच पद मिलेगा। बाप द्वारा तुम राजाओं के राजा बनते हो।''

सा.बाबा 5.10.10 रिवा.

''तुम बच्चे अभी बाप को जानते हो तो कितना गद्गद् होना चाहिए। तुम ही कल्प-कल्प बाप से वर्सा लेते हो।... खुदा दोस्त की भी कहानी है। उनको जो पहले मिलता था, उसको एक दिन के लिए बादशाही देते थे।... तुम जानते हो बरोबर हम बाप से योगबल से विश्व की बादशाही लेते हैं।''

सा.बाबा 5.10.10 रिवा.

विश्व का राज्य अधिकार और स्वराज्य अधिकार

परमपिता परमात्मा विश्व में प्रजातन्त्र को समाप्त कर विश्व में राजशाही की स्थापना करते हैं, उसके लिए आकर ज्ञान देते हैं और आत्माओं को उस राजाई करने के योग्य बनाने और राजाई में आने के लायक बनाने के लिए पुरुषार्थ करते हैं, उसके लिए ब्राह्मण आत्माओं का सहयोग लेते हैं क्योंकि बाबा कहते हैं - मैं तो राजाई करता नहीं हूँ, न मैं राजाई में आता हूँ। राजाई तुम ही करते हो और तुमको ही राजाई स्थापन करने का पुरुषार्थ करना है। राजाई के योग्य कैसे बनें और राजाई में ऊंच पद कैसे पायें, उसके विधि-विधान क्या हैं, वह सब परमात्मा बताते हैं। जो आत्मायें उन विधि-विधानों को अपनाते हैं, वे सतयुगी राजाई में राजाई पद अथवा ऊंच पद पाते हैं।

परमात्मा के द्वारा बताये गये विधि-विधानों के विषय में विचार करें तो हम देखेंगे कि राजाई में राजा बनने या ऊंच पद पाने का मुख्य विधान है स्वराज्य अधिकारी बनना। जो आत्मा अभी संगम पर स्वराज्य अधिकारी बनती है, वही सतयुगी राजाई में जाने की अधिकारी बनती है परन्तु स्वराज्य अधिकारी भी सब एक समान नहीं बनते हैं, इसलिए पद भी सब एक समान नहीं पाते हैं। सब अपने पुरुषार्थ अनुसार राजाई में पद पाते हैं।

सतयुगी राजाई सदा सुखमय राजाई है, परन्तु यदि हम उस राजाई के सुख या कलयुगी राजाई के सुख की तुलना संगमयुग के स्वराज्य अधिकारीपन की राजाई से करें तो जो सुख इस स्वराज्य अधिकारीपन की राजाई में जो सुख है, वह न सतयुग की राजाई में है और न कलियुग की राजाई में है। भले ही सतयुग की राजाई में सदा सुख है परन्तु वह सुख और राजाई उतरती कला की है। बाबा ने अनेक बार कहा है कि अगर देवताओं को भी यह पता पड़ जाये कि हम उतरती कला में जा रहे हैं, तो उनका राजाई का सुख ही उड़ जाये। ऐसे ही द्वापर-कलियुग की राजाई का सुख भी उतरती कला का ही है और द्वापर-कलियुग में तो देहाभिमान के नशे के कारण अनेक प्रकार के विकर्म करते हैं, जिससे सदा सुख की कोई गारण्टी नहीं है। दुख-अशान्ति भी होती है। राजायें भी रोग-शोक में आते हैं।

परन्तु संगमयुग की राजाई चढ़ती कला की राजाई है। इस राजाई की खुशी और नशा निरन्तर वृद्धि को पाता रहता है। स्वराज्य अधिकारीपन की राजाई अविनाशी प्राप्तियों अर्थात् ज्ञान-गुण-शक्तियों पर आधारित है, इसलिए इस राजाई का नशा और खुशी अति श्रेष्ठ है। वास्तव में यही सच्ची राजाई का सुख है, जो इस राजाई का सुख सही रीति अनुभव करता है, उसको सतयुगी राजाई की कोई चिन्ता नहीं रहती है। सतयुग की राजाई तो संगमयुगी स्वराज्य अधिकारीपन की राजाई की परछाई है। जो इस स्वराज्य अधिकारीपन की

राजाई का जितना गहरा अनुभव करता है, वह उतना ही सतयुगी राजाई का अधिकार पाता है।

दैवी राज्य, दैवी सभ्यता और विश्व में प्राकृतिक परिवर्तन

वास्तविकता पर विचार करें तो विश्व में प्राकृतिक परिवर्तन का मूलाधार पवित्रता अर्थात् ब्रह्मचर्य ही है। जब विश्व में भोगबल अर्थात् विकार से गर्भ धारण करने प्रथा बन्द होती है और योगबल से गर्भ धारण करने और सन्तानोत्पत्ति का विधि-विधान आरम्भ होता है तो भी विश्व में विशाल प्राकृतिक परिवर्तन होता है अर्थात् उथल-पुथल होती है, जिससे विश्व में आमूल प्राकृतिक परिवर्तन होता है और जब देवतायें वाम मार्ग में जाते हैं, उनमें योगबल से गर्भधारण करने की शक्ति खत्म हो जाती है और भोगबल से सन्तानोत्पत्ति का विधि-विधान आरम्भ होता है तो भी विश्व में विशाल प्राकृतिक परिवर्तन होता है, उथल-पुथल होती है, जिससे सारी प्रकृति परिवर्तन हो जाती है।

द्वापर में जो प्राकृतिक परिवर्तन होता है, उसमें पृथ्वी अपनी धूरी पर साढ़े तेईस अंश झुक जाती है, फिर जब कल्पान्त अर्थात् कलियुग के अन्त में परिवर्तन होता है तो पृथ्वी अपनी धुरी पर 90 अंश पर सीधी हो जाती है, जिससे पृथ्वी पर विशाल प्राकृतिक परिवर्तन होता है, जिससे जल का बहाव परिवर्तन होता है, मौसम में परिवर्तन होता है। अनेक भूखण्ड सागर में चले जाते हैं, अनेक नये बाहर निकल आते हैं, नदियों का बहाव परिवर्तन होता है।

दैवी राज्य, दैवी सभ्यता और नग्न सभ्यता अर्थात् आदिवासी सभ्यता का आधार या कारण

ज्ञान सागर परमात्मा ने हमको सृष्टि-चक्र के आदि-मध्य-अन्त का स्पष्ट ज्ञान दिया है, जो हमारी पढ़ाई का मूलाधार है। तो जब सृष्टि-चक्र के आदि में दैवी धर्म, दैवी सभ्यता, दैवी राज्य था तो विश्व में प्राय: सभी खण्डों में ये नग्न-सभ्यता अर्थात् आदिवासी सभ्यता की आदि कहाँ से हुई, इसका कारण क्या बना ? क्या ये नग्न-सभ्यता के सदस्य आदिवासी दैवी धर्म और दैवी सभ्यता के सदस्य हैं ?

अभी तक भारत और विश्व के अनेक खण्डों में नग्न सभ्यता के आदिवासी पाये जाते हैं, जिनके विषय में विचार करें तो बुद्धि में स्पष्ट होगा कि ये नग्न सभ्यता के सदस्य किस धम्र और सभ्यता के सदस्य हैं और वे कैसे इस स्थिति को प्राप्त हुए।

वास्तव में दुनिया के सभी खण्डों के आदिवासी या नग्न-सभ्यता वाले दैवी सभ्यता

या देवी-देवता धर्म के ही होंगे क्योंकि उसके पहले तो और कोई सभ्यता थी ही नहीं। जब द्वापर के आदि में उथल-पुथल होती है, पृथ्वी की धूरी परिवर्तन होती है तो अनेक खण्डों का नव-निर्माण होता है और जो खण्ड दैवी सभ्यता की राजाइयों की राजधानियों से दूर थे, वे ऐसे स्थानों पर चले गये, जहाँ से उनका सम्बन्ध उस राजाई से कट गया और उनके सामने ऐसी परिस्थिति आ गई, जिससे वे समयान्तर में ऐसा जीवन जीने के लिए बाध्य हो गये।

वैसे भी देखे तो देवी-देवताओं ने कोई नया अविष्कार आदि नहीं किया। जो सतयुग के आदि में साइन्स एण्ड टेक्नोलॉजी थी, वह धीरे-धीरे खत्म होती गई और अन्त में सभी साइन्स एण्ड टेक्नॉलॉजी खत्म हो गई। फिर जब द्वापर आदि में दैवी सभ्यता का पतन हुआ और आसुरी सभ्यता की आदि हुई तो जो उथल-पुथल हुई, उसके कारण कुछ भूभाग और मनुष्य अलग-थलग पड़ गये, जिससे इस नग्न सभ्यता का आदि हुआ होगा।

''तुम्हारे इन चित्रों में सारे सृष्टि-चक्र के आदि-मध्य-अन्त का राज़ आ जाता है।... बच्चों को पढ़कर पढ़ाने की कोशिश करनी चाहिए। जितना जास्ती पढ़ेंगे और पढ़ायेंगे, उतना ऊंच पद पायेंगे। बाप कहते हैं - मैं तदबीर तो कराता हूँ, परन्तु तकदीर भी तो हो ना। हर एक ड्रामा अनुसार पुरुषार्थ करते रहते हैं। ड्रामा का राज़ भी बाप ने समझाया है।''

सा.बाबा 7.10.10 रिवा.

''एक भी मनुष्य नहीं है, जिसको पता हो कि यह विश्व एक नाटक है। ... कोई कहते भी हैं कि यह नाटक है, हम पार्ट बजाने आये हैं। नाटक में पार्ट बजाने आये हैं तो उस नाटक के आदि-मध्य-अन्त का भी पता होना चाहिए। ... यह अनादि-अविनाशी बना-बनाया ड्रामा है, जो आदि से अन्त तक रिपीट होता रहता है। ... हू-ब-हू रिपीट होगा, ज़रा भी फर्क नहीं हो सकता।''

सा.बाबा 21.10.10 रिवा.

प्रश्नावली

Q. दैवी धर्म और सतयुग-त्रेता की दैवी राजाई की आदि स्थापना भारत में और विस्तार सुदूर तक होता है तो उत्थान किसको कहा जायेगा अर्थात् चरमोत्कर्ष कब कहा जायेगा अर्थात् आदि में या अन्त में ?

दैवी धर्म और दैवी सभ्यता और दैवी राजाई का चरमोत्कर्ष तो सतयुग की आदि को ही कहा जायेगा परन्तु उसका क्षेत्रीय विस्कार त्रेता के अन्त में होता है।

Q. सतयुग-त्रेता की राजाई के पतन के कारण क्या होते हैं ?

अज्ञानता अर्थात् आत्मिक स्वरूप की अनभिज्ञता, जिससे समयान्तर में देहभान और देहाभिमान, जिसके फलस्वरूप आत्मा में मनोविकार आते हैं, उसमें मुख्य है काम विकार, जिसके वशीभूत होने से दैवी सभ्यता और दैवी राजाई का पतन होता है।

Q. सतयुग की आदि से ही उतरती कला होती है, तो उसको पतन कहें या द्वापर से जब वाम मार्ग में जाते हैं तब पतन कहा जायेगा ?

वास्तव में आत्मा और प्रकृति की सतोप्रधानता की कलायें तो आदि से ही उतरनी आरम्भ हो जाती हैं परन्तु दैवी राजाई, दैवी धर्म, दैवी सभ्यता का पतन द्वापर से होता है, जब विश्व में आसुरी रावणराज्य आरम्भ होता है, आत्मा विकारों के वशीभूत हो जाती है। पतन का कारण समय अनुसार नम्बरवार देहभान, देहाभिमान, आत्मिक शक्ति का ह्रास, विकार, काम-वासना बनते हैं।

Q. कलियुग के अन्त में प्राय: विश्व में सभी देशों में प्रजातन्त्र की राज-व्यवस्था है तो सतयुगी राजाई की स्थापना, विनाश के पहले होती है या बाद में होती है अर्थात् नये कल्प अर्थात सतयुग आदि में राजाई की स्थापना होती है या बाद में होती है ?

Q. सतयुग की राजाई की स्थापना श्रीकृष्ण के माता-पिता के द्वारा होगी अर्थात् श्रीकृष्ण किसी राजा के घर में जन्म लेगा या श्रीकृष्ण से ही राजाई की स्थापना होगी और उसके स्थापन होने का विधि-विधान क्या होगा ?

सतयुगी राजाई की स्थापना पहले भी हो सकती है और बाद में भी हो सकती है। इस सम्बन्ध में बाबा के समय-समय पर उच्चारे महावाक्य और निम्नलिखित तथ्य विचारणीय हैं -

यदि सतयुग की प्रथम राजाई श्रीकृष्ण अर्थात् प्रथम लक्ष्मी-नारायण से आरम्भ होती है तो वह कैसे स्थापन होगी अर्थात् श्रीकृष्ण को कौन राजा बनायेगा।

यदि प्रथम राजाई श्रीकृष्ण के माँ-बाप के समय से स्थापन होती है तो क्या वे श्रीकृष्ण के सिहांसन पर बैठने के समय होंगे ? क्योंकि बाबा ने कहा है कि श्रीकृष्ण जब सिहांसन पर बैठता है अर्थात् जब 1-1-1 सम्वत् आरम्भ होता है तो वहां कोई पुरानी दुनिया का अर्थात् विकारी बीज से पैदा हुआ व्यक्ति नहीं होगा, जबकि श्रीकृष्ण के माता-पिता तो विकारी बीज से पैदा हुए होंगे क्योंकि योगबल से जन्म तो श्रीकृष्ण के जन्म से ही आरम्भ होता है।

Q. यदि श्रीकृष्ण किसी राजा के घर में जन्म लेगा और उनके मात-पिता उनको गद्दी पर बिठायें तो श्रीकृष्ण के गद्दी पर बैठने के समय भी विकारी बीज से पैदा हुए मनुष्य होंगे और वे कितने समय तक रहेंगे ? या श्रीकृष्ण को और उनके समकक्ष राजाओं को गद्दी पर बिठाने के बाद तुरत ही वे तिरोध्यान हो जायेंगे अर्थात् परमधाम चले जायेंगे ?

''गाया हुआ है राजाओं के पास जन्म होता है, परन्तु क्या होता है सो तो आगे चलकर देखना है। अभी थोड़ेही बाबा बतायेंगे, वह फिर आर्टिफिशियल नाटक हो जाये। इसलिए बाबा बताते कुछ भी नहीं हैं। ड्रामा में बताने की नूँध नहीं है। बाप कहते हैं - मैं भी पार्टधारी हूँ। आगे की बाते पहले से ही जानता होता तो बहुत कुछ बतलाता।'' सा.बाबा 19.08.10 रिवा.

Q. सतयुग की प्रथम चक्रवर्ती राजाई देहली में होगी या अन्य किसी स्थान पर होगी, जहाँ से श्रीकृष्ण नारायण बनने के बाद देहली अर्थात् इन्द्रप्रस्थ में अपनी राजधानी बनायेगा ?

Q. सतयुग की राजाई और सतयुग के जन्मों में क्या सम्बन्ध है ?

Q. सतयुग की राजाई का त्रेतायुगी राजाई में और त्रेतायुगी राजाई का द्वापरयुगी राजाई में कैसे परिवर्तन होता होगा ?

आत्मा की सतोप्रधानता की कलाओं के गिरने के साथ ही आत्मिक शक्ति का ह्रास ही इस परिवर्तन का कारण बनता है।

Q. सतयुग की दैवी राजाई, भारत की द्वापरयुगी राजाई और अन्य धर्मों की राजाई के विधि-विधानों में क्या भिन्नता होती है ?

Q. जो दूसरी-तीसरी राजाई में राजा-रानी बनने वाले हैं, वे पहली राजाई में आ नहीं सकते तो दोनों में कौन महान कहे जायेंगे, किनकी अष्ट रतनों में गिनती की जायेगी ?

हमारे विवेक अनुसार जो सतयुग की प्रथम राजाई में आते हैं, वे ही महान है, उनमें से ही अष्ट रत्नों की माला बनेंगी।

Q. अष्ठ रत्नों और चक्रवर्ती राजा-रानी के गुण-धर्मों में कोई सम्बन्ध है ? यदि है तो वह

क्या है, कैसा है और कहाँ तक है ?

Q. प्रथम विश्व-महाराजन और उनके समकक्ष राजाइयों के राजा-रानी और सतयुग के अन्तिम विश्व-महाराजन के गुणों, स्वभाव-संस्कारों में किसके गुण और स्वभाव-संस्कार श्रेष्ठ होंगे और दोनों में कौन अष्ठ रतनों में गिने जायेंगे ?

विचारार्थ भारत के प्रथम बैच अर्थात् प्रथम केबिनेट के मिनिस्टर्स यथा सरदार पटेल, लालबहादुर शास्त्री, राम मनोहर लोहिया, उस समय के स्टेट गवर्नर्स आदि और अभी के प्राइम मिनिस्टर्स चन्द्रशेखर, देवेगौणा, मनमोहन सिंह आदि में कौन श्रेष्ठ कहे जायेंगे।

Q. राजशाही की स्थापना में ईश्वरीय सेवा का क्या महत्व है ?

Q. चारो बातों अर्थात् बाप, आप, ड्रामा और परिवार में क्या गुण-धर्म-विशेषतायें हैं, जिन पर पूरा निश्चय हो तो विजय निश्चित है ?

बाप में - ज्ञान-सागर, पतित-पावन, सर्वशक्तिवान, निराकार शिवबाबा, ब्रह्मा तन में आकर नई दुनिया स्वर्ग की स्थापना कर रहा है। उसके गुण-शक्तियों की अनुभूति।

आप में - अपने स्वमान, गुण-शक्तियों, कल्प-कल्प के विजयी हैं। बाबा से हमको स्वर्ग के राज्य-भाग्य का वर्सा अवश्य मिलेगा। आत्मिक स्वरूप परम शान्ति-शक्ति सम्पन्न है। नये विश्व की स्थापना में हम सर्वशक्तिवान परमात्मा के मददगार हैं।

ड्रामा में - यह विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण, कल्याणकारी है। इस विश्व-नाटक में जो हुआ सो अच्छा हुआ, जो हो रहा है वह अच्छा है और जो होगा वह अच्छा होगा और यह कल्प-कल्प हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है अर्थात् ड्रामा के सत्य, न्यायपूर्ण, कल्याणकारी सिद्धान्त का ज्ञान और निश्चय अति आवश्यक है।

परिवार में- ब्राह्मण परिवार, जिसका यादगार माला और विश्व परिवार, जिसकी यादगार कल्प-वृक्ष है। दोंनों गुण धर्मों में निश्चय।

''जब निश्चयबुद्धि सदा हो तो विजयी सदा हो या बीच-बीच में घुटका और झुटका होता है ? निश्चय का फाउण्डेशन चारो ओर से मज़बूत है ? ... या किसी एक ओर ढीला हो जाता है ?... निश्चय अर्थात् बाप में, आप में, ड्रामा में और ब्राह्मण परिवार में निश्चय। इस चारो तरफ के निश्चय को जानना नहीं लेकिन मानकर चलना। अगर जानते हो लेकिन चलते नहीं हो तो विजय डगमग होती है।''

अ.बापदादा 9.01.95

''परिवार को छोड़ दिया तो एक तरफ ढीला हो गया। बिना परिवार के माला में कैसे

आयेंगे ? माला तब बनती है, जब दाना, दाने से मिलता है और एक ही धागे में पिरोये हुए होते हैं। ... ब्राह्मण जीवन में यही न्यारापन है कि धर्म और राज्य दोनों की स्थापना होती है, सिर्फ धर्म की नहीं। और धर्म पितायें सिर्फ धर्म की स्थापना करते हैं। बाप की विशेषता है धर्म और राज्य दोनों की स्थापना करना। ... राजा के साथ राजधानी भी चाहिए। तो राजधानी अर्थात् ब्राह्मण परिवार सो राज परिवार।''

अ.बापदादा 9.01.95

Q. परमात्म दिल-तख्त और भविष्य के राज-तख्त के गुण-धर्मों में क्या मूलभूत अन्त है ?

परमात्म दिल-तख्त का अनुभव संगमयुग पर ही हो सकता है, दैवी राज-तख्त का अनुभव तो दो युगों तक होता है और बाद में भी राज-तख्त का अनुभव हो सकता है।

परमात्म दिल-तख्त ही भविष्य राज-तख्त की प्राप्ति का आधार है।

परमात्म दिल-तख्त चढ़ती कला का तख्त है, जबकि भविष्य का राज-तख्त उतरती कला का तख्त है।

परमात्म दिल तख्तनशीन आत्मा अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करती है, जो जितना भोगे, उतना बढ़ता जाता है। राज-तख्त का सुख तो दिनों दिन कम ही होता जायेगा, जिसका वहाँ भले अनुभव हो या न हो। परमात्म दिल-तख्त पर कितनी भी आत्मायें एक साथ बैठ सकती हैं, परन्तु राज-तख्त पर तो एक ही बैठेगा या भिन्न राजाइयों में कुछ ही बैठ सकते हैं।

''अभी जितना ज्यादा समय इस परमात्म दिलतख्त के अधिकारी रहते हो, उतना ही ज्यादा समय भविष्य में राज्य घराने में अधिकारी बनते हो। ... इसके आधार से तख्त पर तो नम्बरवार ही बैठेंगे लेकिन सदा राज्य फेमिली में, राज-घराने में अधिकारी बनेंगे। ... अपना हिसाब निकालना क्योंकि इसके आधार से ही आप सदा राज घराने में आयेंगे।''

अ.बापदादा 24.10.10

''जो लकीर की फकीर होते, उनको अपनी प्राप्ति का नशा वा शक्ति जो होनी चाहिए, वह नहीं रहेगी। ... तो ऐसे मर्यादाओं की लकीर को उलंघन करने वाले दोनों प्रकार के फकीर बन जाते हैं। इसलिए कब भी फकीर नहीं बनना। इस समय जो विश्व के बादशाह बनेंगे, उनके भी बादशाह हो। ... इस समय ब्राह्मणपन की जो स्टेज है वा डायरेक्ट बाप द्वारा नॉलेजफुल बनने की स्टेज ऊंच है, ऐसी स्टेज को छोड़ फकीर बनना शोभता नहीं है।''

अ.बापदादा 27.4.72

Q. अष्ट रत्न कौन होंगे ? प्रथम समानान्तर राजाईयों वाले या क्रमानुसार चक्रवर्ती गद्दी पर बैठने वाले प्रथम अष्ट ?

Q. अष्ट रत्न आठ युगल होंगे या आठ रत्न अर्थात् आठ आत्मायें ?

संस्कार और संस्कारों का परिवर्तन

Q. क्या सतयुग के आदि में जो दास-दासी बनेंगे, वे सारे कल्प में राजा-रानी बनेंगे ?

Q. क्या सतयुग के आदि में जो प्रजा में आयेंगे, वे सारे कल्प में राजा-रानी बनेंगे ?

संस्कारों के परिवर्तन के विषय में विचार करें तो संस्कारों का परिवर्तन एक जटिल क्रिया है अर्थात् संस्कार अचानक और एकाएक परिवर्तन नहीं होते हैं और न हो सकते हैं। संस्कारों के परिवर्तन की भी कलम लगती है, जिसके लिए बाबा ने भी डायरेक्ट-इन्डायरेक्ट बोला है। बाबा ने कई बार कहा है कि जैसे तुम सतोप्रधान से तमोप्रधान धीरे-धीरे क्रमानुसार बने हो अर्थात् सतोप्रधान से सतो, फिर रजो और तमो बने हो, वैसे ही सतोप्रधान बनने के लिए तमोप्रधान से तमो, रजो, सतो फिर सतोप्रधान बनोगे। ऐसे ही संस्कारों का पर भी परिवर्तन होता है। कोई में एकदम दास-दासी से राजाई के संस्कार नहीं आ सकते हैं और न एकदम राजा के संस्कार दास-दासी के हो सकते हैं। उदाहरणार्थ जब भारत के राजा पोरस को सिकन्दर ने कैद कर लिया, तो उससे पूछा - तुम्हारे साथ क्या व्यवहार किया जाये। तो तुरन्त पोरस ने उत्तर दिया - जैसा एक राजा, दूसरे राजा के साथ करता है।

इस विश्व-नाटक के विधि-विधानों का अध्ययन करें और बाबा के महावाक्यों पर विचार करें तो बाबा ने कहा है - यह सुख-दुख का खेल है अर्थात् इसमें सुख-दुख का, सतोप्रधानता और तमोप्रधानता का सन्तुलन (Balance) है। परन्तु बाबा ने ये नहीं कहा है कि ये राजा-प्रजा-दास-दासी का खेल है अर्थात् जो राजा बना, वह दास-दासी अवश्य बनेंगा। नहीं, राजा-रानी, प्रजा, दास-दासी के संस्कार होते हैं, जो आत्मा के पार्ट के आदि से अन्त तक चलते हैं। बाबा ने ये भी कहा है, अभी के पुरुषार्थ से पता चल जाता है कि ये सारे कल्प में क्या बनने वाले हैं। किसी बन्धन में आकर राजा का दास-दासी बनना अलग बात है और संस्कारों अनुसार दास-दासी बनना अलग बात है।

ऐसे ही राजा, प्रजा, दास-दासी सबको समय और पार्ट अनुसार सुख और दुख होता है और उनके सुख-दुख का सन्तुलन है अर्थात् राजा तमोप्रधान बनने पर राजाई के संस्कार होते भी दुखी होगा तो प्रजा और दास-दासी भी सतोप्रधान स्थिति में सुखी और तमोप्रधान बनने पर दुखी होंगे। विश्व-नाटक के विधि-विधान अनुसार हर आत्मा सतोप्रधान से तमोप्रधान, पावन से पतित बनती है परन्तु मूल संस्कारों के अंश और वंश के साथ।

आत्मा के सुख-दुख का सम्बन्ध राजा, प्रजा, दास-दासी के पद से नहीं है। सुख-दुख का सम्बन्ध पावन और पतित बनने तथा उस अनुसार किये गये कर्मों से है।

विविध ईश्वरीय महावाक्य

''लौकिक बाप को सपूत और कपूत बच्चे होते हैं ना। बेहद के बाप को भी ऐसे हैं। सपूत जाकर राजा बनेंगे, कपूत जाकर झाड़ू लगायेंगे। चलन से सब मालूम पड़ जाता है। ... हम बेहद के बाप के बच्चे हैं, हमको तो विश्व में शान्ति स्थापन करनी है। अगर अपने ही घर में अशान्ति होगी तो शान्ति कैसे स्थापन करेंगे।''

सा.बाबा 2.09.10 रिवा.

''संगमयुग पर जो अच्छे पुरुषार्थी हैं, वे समझते हैं कि हमने 84 जन्म लिए हैं। एक ने तो 84 जन्म नहीं लिये हैं, राजा के साथ प्रजा भी चाहिए। तुम ब्राह्मणों में भी नम्बरवार हैं। कोई राजा-रानी बनते हैं तो कोई प्रजा भी बनते हैं। ... कोई को देखने से जिनकी विकार की दृष्टि जाती है, उनके 84 जन्म नहीं हो सकते हैं। वे नर से नारायण बन नहीं सकेंगे।''

सा.बाबा 21.08.10 रिवा.

''राजाओं के पास जन्म लेते हो, परन्तु इतने महल आदि सब पहले से थोड़ेही होते हैं। वे तो सब बनाने पड़ते हैं। कौन बनवाते हैं, जिनके पास जन्म लेते हैं।'' सा.बाबा 19.08.10 रिवा.

''ब्रिटिश गवर्मेन्ट के समय, जब राजाओं का राज्य था तो स्टेम्प में भी राजा-रानी के सिवाए और कोई का फोटो नहीं डालते थे। आजकल तो देखो कितनों के स्टेम्प बनाते रहते हैं। ... इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य होगा तो चित्र भी एक ही महाराजा-महारानी का होगा।''

सा.बाबा 20.08.10 रिवा.

''जाग सजनियाँ जाग ... ड्रामा अनुसार यह टच किया हुआ गीत है, जो फिर बच्चों के काम में आता है। अभी हम राजाई स्थापन कर रहे हैं। हम रावण से अपनी राजाई ले रहे हैं। ... तुम बच्चों की लड़ाई है माया रावण से, जिसका तुम ब्राह्मणों के सिवाए और कोई को पता नहीं है। तुम जानते हो हमको गुप्त रूप से विश्व पर अपना राज्य स्थापन करना है।''

सा.बाबा 18.08.10 रिवा.

''बाप ये सब बातें समझाते रहते हैं। यह सब ड्रामा में नूँध है। यह रावणराज्य फिर भी होगा और हमको फिर से आना पड़ेगा। ... ज्ञान तो सिर्फ एक ज्ञान सागर बाप ही देते हैं, जिससे ही सर्वात्माओं की सद्गति होती है। सिवाए बाप के और कोई सद्गति कर न सके।''

सा.बाबा 13.08.10 रिवा.

''अभी हम बेहद के बाप के बच्चे बनें हैं तो कितनी खुशी होनी चाहिए। ... बाप को याद करते रहेंगे तो वह खुशी भी रहेगी और नशा भी रहेगा। बाबा हमको विश्व का मालिक बनाते

हैं। माया भुला देती है तो कुछ न कुछ विकर्म हो जाता है, जिससे वह खुशी और नशा कम हो जाता है।''

सा.बाबा 3.07.10 रिवा.

''इसमें कोई भी बात में संशय नहीं उठना चाहिए, परन्तु !कच्ची अवस्था होने के कारण संशय उठता है। ... शिवबाबा भी आत्मा है, परन्तु वह परम आत्मा है। उनका भी पार्ट गाया हुआ है, जो बजाकर गये हैं, तब तो उनकी पूजा होती है। ... वह है हेविनली गॉड फादर। वह हर 5 हजार वर्ष बाद कल्प के संगमयुग पर पार्ट बजाने आते हैं।''

सा.बाबा 30.6.10 रिवा.

''अभी तुम ईश्वरीय मत वाले बनते हो। इस समय तुम बच्चों को पतित से पावन बनने के लिए ईश्वरीय मत मिल रही है। अभी तुमको पता पड़ा है कि हम तो विश्व के मालिक थे ... विश्व के मालिक, फिर एकदम पतित बन जाते हैं। यह खेल बहुत अच्छी रीति बुद्धि से समझने का है। राइट-राँग क्या है, इसमें है बुद्धि की लड़ाई।''

सा.बाबा 15.05.10 रिवा.

''बाप कहते हैं - मेरे को तो चरण ही नहीं है, तो मैं अपने को पुजवाऊं कैसे। बच्चे विश्व के मालिक बनते हैं, उनसे थोड़ेही पुजवाऊंगा। ... तुम मेरे मददगार बनते हो। तुम मददगार नहीं होते तो हम स्वर्ग की स्थापना कैसे करते। बाप कहते हैं - बच्चे, अभी तुम मेरे मददगार बनो, फिर तुमको मैं ऐसा बनाऊंगा, जो तुमको कोई की मदद लेने की दरकार ही नहीं रहेगी।''

सा.बाबा 22.10.10 रिवा.

''वण्डर है ना कि छोटी सी आत्मा कितना बड़ा शरीर लेकर पार्ट बजाती है। ... जो सर्विसएबुल बच्चे हैं, वे विचार सागर मन्थन करते रहते हैं कि किसको कैसे समझायें। ... बाप खुद तो शान्तिधाम में रहते हैं, तुमको वैकुण्ठ का मालिक बनाते हैं। तुमको अन्दर में बहुत खुशी होनी चाहिए कि हम अभी सुखधाम में जाते हैं।''

सा.बाबा 22.10.10 रिवा.

''सपूत बच्चों पर ही बाप का प्यार रहता है। जो बाप का बनकर विकार में चले जाते हैं, उनके लिए कहेंगे कि ऐसा बच्चा नहीं जन्मता तो अच्छा था। एक के कारण कितना नाम बदनाम हो जाता है।... गरीबों को ही राजाई मिलनी है। बाप ग़रीब निवाज़ गाया हुआ है ना। तुम अर्थ समझते हो कि बाप को ग़रीब निवाज़ क्यों कहते हैं।... जो साहूकार हैं, वे ज्ञान को उठा नहीं सकते। ग़रीब अच्छा उठाते हैं।''

सा.बाबा 22.10.10 रिवा.

''ये बड़ी समझने की बातें हैं। इन बातों को समझने से तुम यह लक्ष्मी-नारायण बनते हो। ...

तुमको पता है इन्होंने क्या ऐसे कर्म किये हैं, जो यह विश्व के मालिक बनें। इन्होंने स्वर्ग की राजधानी कैसे ली, वह तुम जानते हो। तुम्हारे में भी हर कोई यथार्थ रीति नहीं समझा सकते हैं।''

सा.बाबा 27.10.10 रिवा.

''ये बॉम्बस आदि जो बनाये हैं, ये भी पुरानी दुनिया के विनाश में काम आयेंगे। बाप तुमको ज्ञान और योग सिखलाते हैं, जिससे तुम राज-राजेश्वर डबल सिरताज देवी-देवता बनेंगे। ... बाप हमको पावन बनाये राज-राजेश्वर बना रहे हैं, यह निश्चय और नशा हो तो बहुत खुशी में रहे। अपने दिल से पूछो - हम कितनों को आप समान बनाते हैं।''

सा.बाबा 27.10.10 रिवा.

''तुम मुझे याद करते हो तो आधा कल्प के लिए अपना राज्य-भाग्य लेते हो, फिर रावणराज्य में भूल जाते हो तो दुखी होते हो और रावण दुश्मन को जलाते हो। ... भारतवासी ही यह दशहरा मनाते हैं, परन्तु रावणराज्य तो अभी सारी दुनिया पर है।... रावणराज्य में जब सब दुखी हो जाते हैं तब राम अर्थात् ईश्वरीय राज्य स्थापन करने बाप को आना पड़ता है।''

सा.बाबा 28.10.10 रिवा.

''सतयुग में डबल सिरताज राजायें होते हैं, फिर सिंगल ताज वालों की राजाई भी है। अभी वह राजाई भी नहीं रही है। अभी तो प्रजा का प्रजा पर राज्य है। तुम बच्चे अभी राजाई के लिए पढ़ते हो। इसको गॉड फादरली युनिवर्सिटी कहा जाता है। ... बाप राजयोग सिखलाते हैं, सतयुग के लिए। बाप कहते हैं - काम महाशत्रु है, इस पर जीत पहनों। काम पर जीत पाने से तुम जगतजीत बनेंगे।''

सा.बाबा 30.10.10 रिवा.

''याद को ही बल कहा जाता है, ज्ञान तो है सोर्स ऑफ इन्कम। याद से ही शक्ति मिलती है और विकर्म विनाश होते हैं। ... स्प्रीचुअल नॉलेज एक बाप के पास ही है और वह ब्राह्मणों को ही कल्प के संगमयुग पर देते हैं। ... बाप को और 84 के चक्र को याद करेंगे तो फिर चक्रवर्ती राजा बन जायेंगे। आप समान बनायेंगे, प्रजा बनायेंगे, तब तो राजा बनेंगे और प्रजा पर राज्य करेंगे।''

सा.बाबा 1.11.10 रिवा.

''तुम्हारी परमधाम से आने से अर्थात् नई दुनिया सतयुग के आदि से ही राजाई शुरू हो जाती है। और धर्म वालों की राजाई बाद में होती है, पहले नहीं होती है।... यह किसको भी बुद्धि में नहीं आता है कि अभी कलियुग में तो राजाई है नहीं, फिर सतयुग में इतनी राजाई कहाँ से आई। कलियुग अन्त में इतने ढेर धर्म हैं, फिर सतयुग में एक धर्म, एक राज्य कैसे हुआ ?''

सा.बाबा 1.11.10 रिवा.

''सतयुग में इन लक्ष्मी-नारायण की राजधानी थी, वह कैसे स्थापन हुई, यह किसको भी पता

नहीं है। ... तुम ढिंढोरा पीटते हो कि अभी नई दैवी राजधानी फिर से स्थापन हो रही है, अनेक धर्मों का विनाश भी होना है। लड़ाई जरूर लगनी ही है।''

सा.बाबा 2.11.10 रिवा.

''मुझे याद करो तो तुम्हारे जन्म-जन्मान्तर के पाप भस्म हो जायेंगे, स्वदर्शन चक्रधारी बनने से चक्रवर्ती राजा बन जायेंगे। ... यहाँ राजस्थान में भिन्न-भिन्न प्रकार के राजायें हुए हैं, अब फिर रुहानी राजस्थान बनना है। तुम स्वर्ग के मालिक बन जायेंगे।''

सा.बाबा 3.11.10 रिवा.

''बाप समझाते हैं - यह खेल भूल-भुलैया का है। इसमें हम कैसे फँस गये, यह किसको भी पता नहीं है। अब हम कैसे अपने घर और राजधानी में जायें, यह बाप ने समझाया है। ... पारसबुद्धि और पत्थरबुद्धि का गायन भारत में ही होता है। पत्थरबुद्धि राजायें और पारसबुद्धि राजायें यहाँ ही होते हैं। पारसनाथ का मन्दिर भी है।''

सा.बाबा 5.11.10 रिवा.

''जैसे बाप के पास कोई भी आयेंगे तो खाली हाथ नहीं भेजेंगे ना। तो ऐसे फॉलो फादर।... ऐसे सदाचारी और सदा महादानी दृष्टि-वृत्ति और कर्म से बनने वाले ही विश्व के मालिक बनते हैं। ... इसके लिए तीन शब्द 'सदा निराकारी, अलंकारी और कल्याणकारी' सदा याद रहें। अगर ये तीन शब्द सदा याद रहें तो मन्सा-वाचा-कर्मणा सदा अपनी श्रेष्ठ स्थिति बना सकते हो।''

अ.बापदादा 15.5.72

''तुम बच्चे समझते हो - हम विश्व के मालिक आदि सनातन देवी-देवता थे, हमने ही 84 जन्म लिए हैं... जरूर बाप संगम पर ही आये होंगे, आकर राजाई स्थापन की होगी। बाप कैसे आते हैं, यह तुम्हारे सिवाए और कोई की बुद्धि में नहीं होगा। दूर देश से बाप आकर हमको पढ़ाते हैं, राजयोग सिखलाते हैं, जिससे हम डबल सिरताज बनते हैं।''

सा.बाबा 9.11.10 रिवा.

''अभी तुम डबल सिरताज बनने के लिए पढ़ते हो। अगर पास होंगे तो डबल सिरताज जरूर बनेंगे। अगर पास न भी हुए तो भी स्वर्ग में जरूर आयेंगे। ... तुमको कितनी खुशी होनी चाहिए कि बाबा हमको डबल सिरताज बना रहे हैं। इससे ऊँच दर्जा कोई का होता नहीं है। बाप कहते हैं - मैं डबल सिरताज नहीं बनता हूँ, तुमको बनाता हूँ।''

सा.बाबा 9.11.10 रिवा.

''पदर्शनी में तुम जिनको समझाते हो, अच्छा-अच्छा कहते हैं तो वह भी तुम्हारी प्रजा बन जाती है। थोड़ा भी सुना तो प्रजा में आ जायेंगे। अविनाशी ज्ञान का कब विनाश नहीं होता है।

बाबा का परिचय देना कोई कम बात थोड़ेही है। कोई-कोई के सुनकर रोमांच खड़े हो जायेंगे। अगर ऊंच पद पाना होगा तो पुरुषार्थ करने लग जायेंगे।''

सा.बाबा 10.11.10 रिवा.

''यह ज्ञान जो ब्राह्मण कुल के होंगे, देवता बनने वाले होंगे, उनकी ही बुद्धि में ही बैठेगा। वे झट कहेंगे, कल्प पहले भी हमने यह पढ़ा था, जरूर भगवान पढ़ाते हैं।... किसको भी बोलो - यह है बेहद की हिस्ट्री-जॉग्राफी, यहाँ वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी समझाई जाती है। ... यह लक्ष्मी-नारायण भारत में ही राज्य करके गये हैं, अब नहीं हैं।... अभी बाप फिर से आया है, यह राज्य-भाग्य देने के लिए।''

सा.बाबा 13.11.10 रिवा.

''बाप बच्चों को समझाते हैं - तुम बच्चों को मेरे समान अपने को आत्मा समझना है। मैं हूँ परमपिता परमात्मा। परमपिता को देह होती नहीं है। उनको देही-अभिमानी भी नहीं कहेंगे। वह तो है ही निराकार। ... अगर तुमको विश्व का मालिक बनना है, तो अभी तुम मेरे समान अपने को देह से न्यारा आत्मा समझो। देहाभिमान छोड़कर मेरे समान बनो।''

सा.बाबा 14.11.10 रिवा.

''अभी परमपिता परमात्मा कहते हैं - देह सहित देह के सब पतित सम्बन्ध छोड़ मामेकम् याद करो तो तुम पावन बन जायेंगे। ये गीता के ही अक्षर हैं। यह है गीता का युग। गीता संगमयुग पर ही गाई हुई थी, जब बाप ने राजयोग सिखाया था और विनाश भी हुआ था। राजाई स्थापन हुई थी, फिर भी जरूर स्थापन होगी।''

सा.बाबा 17.11.10 रिवा.

''शिवबाबा ने यह शरीर लोन लिया है, तुम उनको भाकी पहन सकते हो, मैं कैसे पहनूँ। मुझे यह नसीब नहीं है, इसलिए तुम लकी सितारे गाये हुए हो।... शिवबाबा कहते हैं तुम मेरे से लकी हो। तुमको पढ़ाकर विश्व का मालिक बनाता हूँ, मैं थोड़ेही बनता हूँ। ... तुम सारे सृष्टि-चक्र को जानकर चक्रवर्ती महाराजा-महारानी बनते हो, मैं थोड़ेही बनता हूँ।''

सा.बाबा 22.11.10 रिवा.

''यह ब्राह्मण कुल है। ब्राह्मणों की डॉयनेस्टी नहीं होती है। ब्राह्मण कुल की राजाई नहीं होती है। इस समय भारत में न ब्राह्मणों को राजाई है और न शूद्र कुल वालों को राजाई है। अभी तो प्रजा का प्रजा पर राज्य चलता है। ... अभी संगमयुग है। इस संगमयुग जैसी महिमा और कोई युग की है नहीं। यह है पुरुषोत्तम संगमयुग।''

सा.बाबा 23.11.10 रिवा.

''बाप कहते हैं - मैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूँ। यह चित्र बनाओ। डबल सिरताज

राजाओं के आगे सिंगल ताज वाले माथा टेकते हैं।... जो पावन होकर गये हैं, उनका चित्र बनाये पूजते हैं। यह ज्ञान भी तुमको अभी मिला है।... तुम ही इस चक्र में आते हो। तुमको बुद्धि में यह नॉलेज रखनी है, फिर औरों को भी समझाना है। गायन है - धन दिये धन न खुटे।''

सा.बाबा 24.11.10 रिवा.

''यह भी वण्डर है ना कि अभी कलियुग के अन्त में तो कहाँ भी राजाई है नहीं, फिर सतयुग में इन्होंकी राजाई कहाँ से आई। सारा मदार पढ़ाई पर है।... अभी तुम्हारी आत्मा कहेगी कि हम असुल में परमधाम के रहने वाले हैं, यहाँ आकर 5 तत्वों का पुतला लिया है, पार्ट बजाने के लिए। अब हमारा पार्ट पूरा हुआ, पावन बनकर ही वापस घर जाना है।''

सा.बाबा 25.11.10 रिवा.

''यहाँ तो तुम सौभाग्यशाली बनते हो। ... भारत में किसको भी यह पता नहीं है कि ये लक्ष्मी-नारायण इतना ऊंच विश्व के मालिक कैसे बनें। तुमको तो सदैव यह नशा चढ़ा रहना चाहिए। यह एम एण्ड आब्जेक्ट का चित्र सदैव छाती से लगा होना चाहिए। सबको बताओ - हमको भगवान पढ़ाते हैं, जिससे हम ऐसे विश्व के महाराजा बनते हैं। बाप आये हैं इस दैवी राज्य की स्थापना करने। इस पुरानी दुनिया का विनाश भी सामने खड़ा है।''

सा.बाबा 26.11.10 रिवा.

''जहाँ कारण है, वहाँ निवारण-शक्ति नहीं है। अगर परिवार में निवारण शक्ति नहीं है तो विश्व के राज्य को क्या निवारण करेंगे क्योंकि आपके उस राज्य में हर आत्मा सदा निवारण स्वरूप है। ... तो कारण कहकर अपने को दुआओं से वंचित नहीं करो। ब्रह्मा बाप ने कारण को निवारण किया, इसलिए नम्बरवन हुआ।''

अ.बापदादा 19.1.95

''कारणों का फाइल खत्म करें या ... जो समझते शिवरात्रि तक रिफाइन हो जायेंगे, वे हाथ उठाओ। हिम्मत रखना भी अच्छी बात है। परन्तु ... जब कोई कारण आता है तो हिम्मत कम हो जाती है, कमजोरी आती है और जब वह बात समाप्त हो जाती है तो अपने ऊपर शर्म आती है।... पश्चाताप होता है। तो पश्चाताप वाले क्या राजा बनेंगे!''

अ.बापदादा 19.1.95

''तुम मूँझो नहीं। तुम बेपरवाह बादशाह हो। यह है ही रुद्र ज्ञान यज्ञ। यज्ञ में असुरों के विघ्न पड़ने ही हैं। ... आदि सनातन देवी-देवता धर्म का राज्य स्थापन हो रहा है। इन लक्ष्मी-नारायण की डायनेस्टी स्थापन हो रही है। जो जितना पुरुषार्थ करेंगे, उस अनुसार पद पायेंगे।''

सा.बाबा 28.11.10 रिवा.

''वण्डरफुल खेल बना हुआ है। ज़रा भी कोई इस खेल को जानते नहीं हैं। सारी राजधानी स्थापन हो रही है। कोई साहूकार बनेंगे, कोई तो गरीब भी बनेंगे ना। ये बड़ी दूरांदेशी बुद्धि से समझने की बातें हैं। पिछाड़ी में सब साक्षात्कार होगा। ... यह ड्रामा बड़ा वण्डरफुल बना हुआ है, जिसको अभी तुम जानते हो और जानकर पार्ट बजा रहे हो।''

सा.बाबा 4.12.10 रिवा.

''बाप पढ़ाते हैं, पढ़ाई से राजाई स्थापन होती है। ऐसा कब सुना या देखा कि पढ़ाई से राजाई स्थापन हो। ... बाप चाहते हैं बच्चे पुरुषार्थ करें, परन्तु ड्रामा में पार्ट नहीं है तो फिर कितना भी माथा मारो, चढ़ते ही नहीं हैं। ... सबसे बड़ी ग्रहचारी है देहाभिमान की। सतयुग में देहाभिमान होता नहीं है। देही-अभिमानी बनने की मत बाप ही देते हैं।''

सा.बाबा 6.12.10 रिवा.

''कृष्ण प्रिन्स होगा तो कहेगा ना कि हमारा बाबा राजा है। ऐसे नहीं कि कृष्ण का बाप राजा नहीं हो सकता है। ... साहूकार के पास जन्म ले तो प्रिन्स थोड़ेही कहलायेंगे। राजा के पद और साहूकार के पद में रात-दिन का फर्क हो जाता है।... कृष्ण के बाप का पद ऊंच नहीं कहेंगे, पद कृष्ण का ऊंच कहा जायेगा।''

सा.बाबा 19.08.10 रिवा.

अमृत-धारा

‘‘‘जिनकी बुद्धि में यह नॉलेज टपकती रहेगी, उनको अपार खुशी होगी ... सदैव बुद्धि में यह ज्ञान टपकता रहे तो तुम खुशी में रहेंगे, फिकर से फारिग हो जायेंगे।’’ सा.बाबा 3.10.01 रिवा.

यह अटल सत्य है कि जो हुआ, वह टल नहीं सकता और जो नहीं हुअ, वह हो नहीं सकता। जो हुआ वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है वह अच्छा है और जो होगा. वह भी अच्छा होगा क्योंकि ये विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण और कल्याणकारी है। पवित्रता ही जीवन है। पवित्रता अर्थात् आत्मिक स्वरूप में स्थिति, आत्मिक स्मृति, आत्मिक दृष्टि और आत्मिक वृत्ति। जहाँ पवित्रता है, वहाँ सर्व प्राप्तियां, सर्व सुख स्वत: होते हैं और इच्छामात्रम् अविद्या होती है। सर्व सम्बन्धों में मधुरता होती है, ब्रह्मचर्य की स्वभाविक धारणा होती है। राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, इच्छा-आकांक्षा, अहंकार-हीनता का नाम-निशान नहीं होता है और मान-अपमान, निन्दा-स्तुति, जय-पराजय, लाभ-हानि, यश-अपयश, सुख-दुख, अपने-पराये में समान स्थिति होगी। पवित्र आत्मा में समय पर कृत्य का संकल्प स्वत: जागृत होता है, उसकी शुभ में अभिरुचि और अशुभ में अरुचि स्वत: होती है, इसलिए सदा निर्संकल्प होती है। सर्व आत्माओं के प्रति उसकी शुभ भावना, शुभ कामना होती है, जिसके परिणाम स्वरूप सर्व आत्माओं की उसके प्रति शुभ भावना, शुभ कामना होती है।

यह विश्व एक नाटक है, इसमें न कोई अपना है और न कोई पराया। न कोई अपना मित्र है और न कोई अपना शत्रु। जो आज अपना है, वह कल पराया होगा और पराया अपना होगा। न कोई हमको कुछ दे सकता है और न कोई हमारा कुछ ले सकता है। न किसी ने हमको कुछ दिया है और न ही हमारा किसी ने कुछ लिया है। हर आत्मा अपना अनादि-अविनाशी पार्ट बजा रही है और अपने कर्मों अनुसार सुख या दुख को पा रही है। इसलिए किससे राग-द्वेष, भय-चिन्ता का कोई प्रश्न ही नहीं।

दाता एक परमात्मा है, उसने हमको जो दिया है, वही हमारे लिए हितकर है। भगवानोवाच्य - बच्चे, तुम परमधाम के रहने वाले हो, इस सृष्टि पर पार्ट बजाने आये हो, अभी तुमको वापस घर चलना है। इस सत्यता को समझकर देह और देह की दुनिया से न्यारे होकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर निर्भय, निश्चिन्त, निर्संकल होकर परम-शान्ति, परम-शक्ति का अनुभव करो, बाप के साथ विश्व-कल्याण की सेवा कर परमानन्द का अनुभव करो और साक्षी होकर इस विश्व-नाटक को देखो और ट्रस्टी होकर पार्ट बजाते हुए परम सुख का अनुभव करो। यही सुख-शान्तिमय जीवन का सुगम पथ है।

इस सत्य पर दृढ़ निश्चय होगा और सतत् अभ्यास तथा सहज स्थिति होगी तब ही हम अपनी अन्तिम मंजिल सुखमय जीवन और सुखद मृत्यु को सहज प्राप्त कर सकेंगे अर्थात् राग-द्वेष, भय-चिन्ता से मुक्त होंगे। यही जीवन की परम-प्राप्ति, परमात्मा का परम वरदान, इस ब्राह्मण जीवन का परम-पुरुषार्थ और इस जीवन का परम-कर्तव्य है।

यह बात भी ध्यान में रखना अति आवश्यक है - ड्रामा का ज्ञान और आत्मिक स्थिति रूपी दोनों पहिये साथ होंगे और उनके बीच में परमात्मा रूपी धुरी होगी तब ही गाड़ी सफलतापूर्वक चलेगी।

‘‘‘ब्राह्मण अर्थात् निश्चयबुद्धि और निश्चयबुद्धि अर्थात् विजयी। तो हर एक ब्राह्मण निश्चयबुद्धि कहाँ तक बने हैं और विजयी कहाँ तक बने हैं। क्योंकि ब्राह्मण जीवन का फाउण्डेशन है निश्चय और निश्चय का प्रमाण है विजय।’’ अ.बापदादा 15.4.92

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-

स्पार्क – आध्यात्मिक अनुप्रयोग अनुसन्धान केन्द्र
(SpARC – Spiritual Applications Research Centre),
बेहतर विश्व निर्माण अकादमी,
ज्ञान सरोवर, आबू पर्वत - 307501
राजस्थान, भारत
मोबाईल: 9414 15 1879, 9414 00 3497,
9414 08 2607
फैक्स – 02974-238951
ई-मेल – bksparc@gmail.com,
sparc@bkivv.org